LIST OF MEMBERS WHO PREPARED QUESTION BANK FOR ECONIMICS FOR CLASS XII

TEAM MEMBERS

Sl. No.	Name	Designation
1.	**Dr. M.L. Kaushik** ***(Team Leader)***	*Principal* Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya Nand Nagari, Delhi-110093
2.	**Sh. Narendra Chandra**	*Vice Principal* G.B.S.S.S. (Kamdhenu) Plot-II, Mangol Puri, Delhi-110083
3.	**Sh. Ram Kishan Chauhan**	*P.G.T. (Economics)* Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya Nand Nagari, Delhi-110093
4.	**Sh. Sanjeev Kumar**	*P.G.T. (Economics)* G.B.S.S.S. No. 2, Ghonda, Delhi-110053
5.	**Mrs. Neelam Vinayak**	*P.G.T. (Economics)* Rajkiya Pratibha Vikas Vidyalaya Link Road, Karol Bagh, New Delhi
6.	**Mrs. Balwinder Kaur**	*P.G.T. (Economics)* R.D.S.K.V. No. 1 Kidwai Nagar, New Delhi-110023

QUESTION BANK

ECONOMICS (Hindi Medium)

DESIGN OF SAMPLE QUESTION PAPER FOR MARCH, 2009 EXAMINATION

Time : 3 hours **Maximum Marks : 100**

The weightage to marks over different dimensions of the question paper shall be as under.

A. Weightage to Current/Subject units

S.No.	Content Unit	Mark
Part A :	**Introductory Micro Economics**	
1.	Introduction	4
2.	Consumer Behaviour and Demand	13
3.	Producer Behaviour and Supply	23
4.	Forms of Market and Price Determination	10
5.	Simple applications of Tools of demand and supply curves	
	Total	**50**
Part B :	**Introductory Macro Economics**	
1.	National Income and Related Aggregates	15
2.	Determination of Income and Employment	12
3.	Money and Banking	8
4.	Government Budget and the Economy	8
5.	Balance of payments	7
	Total	**50**
	Grand Total	**100**

WEIGHTAGE TO FORMS OF QUESTIONS

S.No.	Forms of Questions	Marks for each question	No. question	Total Mark
1.	Very short answer type (VSA)	1	10	10
2.	Short answer type (SAI)	3	10	30
3.	Short answer type (SAII)	4	6	24
4.	Long answer type (LA)	6	6	36
	Total		**32**	**100**

C. No. of Sections

The questions paper will have two section A and B.

D. Scheme of Option

There will be no overall choice. However, there is internal choice in one question of 3 marks and one question of 4 marks and one question of 6 marks in each section.

E. Weightage to forms of Questions

S.No.	Estimated Difficulty Level of Questions	Percentage
1.	Easy	30%
2.	Average	50%
3.	Difficult	20%

F. Typology of Questions

In order to asses different abilities related to the subject, the question paper is likely to include open-ended questions and numerical questions.

यूनिट 1

परिचय

स्मरणीय बिन्दु

- अर्थशास्त्र के अध्ययन को दो शाखाओं में बाँटा गया है–व्यष्टि अर्थशास्त्र एवं समष्टि अर्थशास्त्र। व्यष्टि अर्थशास्त्र में अर्थशास्त्र की व्यक्तिगत इकाइयों से जुड़ी आर्थिक समस्याओं का अध्ययन किया जाता है तथा समष्टि अर्थशास्त्र में सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था एवं इसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है।
- अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जो लोगों को आजीविका प्रदान करती है।
- बाजार अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें समस्त आर्थिक क्रियाऐं बाजार की स्वतन्त्र शक्तियों से निर्धारित होती है।
- केन्द्रीकृत योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था वह नियोजित अर्थव्यवस्था है जिसमें उत्पादन उपभोग संबंधी सभी महत्वपूर्ण निर्णय सरकार या केन्द्रीय सत्ता द्वारा लिये जाते हैं।
- सकारात्मक या वास्तविक आर्थिक विश्लेषण में हम यह अध्ययन करते हैं कि विभिन्न यन्त्र या विधियाँ कैसे काम करती हैं। इसके अन्तर्गत हम 'क्या है?' जैसे मुद्दों का अध्ययन करते हैं।
- आदर्शात्मक आर्थिक विश्लेषण में हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि यन्त्र या विधियां वांछनीय हैं या नहीं। इसके अन्तर्गत 'क्या होना चाहिए?' जैसे मुद्दों या सुझावों का विवेचन करते हैं।
- आर्थिक समस्या उपलब्ध सीमित साधनों के आवंटन की समस्या है। आर्थिक समस्या उत्पन्न होने के मुख्य कारण हैं–

  - आवश्यकताओं का असीमित होना।
  - साधनों का दुर्लभ होना।
  - साधनों के वैकल्पिक प्रयोग होना।

- संसाधनों की दुर्लभता से अभिप्राय संसाधनों की पूर्ति उनकी मांग की तुलना में कम होने से है।
- एक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएं–

  - संसाधनों के आवंटन की समस्या
    - क्या उत्पादन किया जाये?
    - उत्पादन कैसे किया जाये?
    - उत्पादन किसके लिए किया जाये?
  - संसाधनों के कुशलतम प्रयोग की समस्या
  - आर्थिक विकास की समस्या

- किसी वस्तु की अवसर लागत से अभिप्राय किसी वस्तु की वह मात्रा है जिसका किसी अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के कारण त्याग करना पड़ता है।
- उत्पादन सम्भावना वक्र का एक अर्थव्यवस्था में दिये हुए संसाधनों तथा उत्पादन तकनीक के अन्तर्गत दो वस्तुओं की विभिन्न उत्पादन संभावनाओं को दर्शाता है।
- उत्पादन सम्भावना वक्र का दायीं ओर खिसकाव संसाधनों में वद्धि तथा बायीं ओंर खिसकाव संसाधनों में कमी को दर्शाता है।
- सीमान्त विस्थापन दर एक वस्तु की त्यागी जाने वाली इकाइयों तथा अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने का अनुपात है।

$$MRT = \frac{\Delta y}{\Delta x}$$

एक अंक वाले अति लघु उत्तर वाले प्रश्न

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र की परिभाषा दीजिये।
2. दुलर्भता से क्या अभिप्राय है?
3. रोजगार देने वाली या उत्पादन करने वाली सभी संस्थाओं का सामूहिक नाम क्या है?
4. संसाधनों के अल्प प्रयोग के कोई दो उदाहरण दीजिये।
5. संसाधनों की दो विशेषताएं लिखिए।
6. समष्टि अर्थशास्त्र को परिभाषित कीजिए।
7. आर्थिक समस्या उत्पन्न होने का मुख्य कारण क्या है?
8. अर्थशास्त्र की उस शाखा का नाम बताइये जिसमें सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था और उसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है।
9. वास्तविक अर्थशास्त्र विश्लेषण से क्या आशय है?
10. आदर्शात्मक अर्थशास्त्र से क्या अभिप्राय है?
11. बाजार अर्थव्यवस्था की परिभाषा लिखिए।
12. किस अर्थव्यवस्था में सामाजिक कल्याण पर सर्वाधिक बल दिया जाता है?
13. उत्पादन संभावना फ्रन्टियर (वक्र) का दाहिनी ओर खिसकाव क्या दर्शाता है?
14. उत्पादन संभावना वक्र का ढ़ाल नीचे की ओर क्यों होता है?
15. उत्पादन संभावना वक्र के नीचे स्थित कोई बिन्दु क्या प्रदर्शित करता है?

16. निम्नस्थितियों में उत्पादन सम्भावना वक्र की आकृति कैसी होती है?

(क) जब सीमान्त अवसर लागत बढ़ रही हो।

(ख) जब सीमान्त अवसर लागत स्थिर हो।

(ग) जब सीमान्त अवसर लागत घट रही हो।

17. अवसर लागत की परिभाषा दीजिए।

18. उत्पादन सम्भावना वक्र के अन्दर कोई बिन्दु क्या दर्शाता है?

19. किसी देश में विनाशकारी भूकम्प की स्थिति में उत्पादन संभावना वक्र किस दिशा में खिसकेगा?

20. संसाधनों की मितव्ययता से क्या अभिप्राय है?

H.O.T.S. ;उच्च स्तरीय बु्(ि कौशलद्ध

*21. सूती वस्त्र उद्योग का अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र का विषय है या समष्टि अर्थशास्त्र का? कारण बताओ।

*22. सीमान्त विस्थापन दर से क्या आशय है?

*23. भारत में बेरोजगारी की समस्या को समष्टि अर्थशास्त्र का विषय माना जाता है या व्यष्टि अर्थशास्त्र का?

लघु उत्तर वाले प्रश्न ;3 अंकद्ध

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र और समष्टि अर्थशास्त्र में कोई तीन अन्तर लिखिये।
2. केन्द्रीकृत नियोजित अर्थव्यवस्था की तीन विशेषताएँ लिखिए।
3. सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण और आदर्शात्मक आर्थिक विश्लेषण में अन्तर स्पष्ट करो।
4. बाजार अर्थव्यवस्था किस प्रकार नियोजित अर्थव्यवस्था से भिन्न है?
5. उत्पादन संभावना फ्रन्टियर (वक्र) क्या है? एक काल्पनिक सारणी और रेखाचित्र की सहायता से समझाइए।
6. आर्थिक समस्या से आप क्या समझते हैं? यह क्यों उत्पन्न होती है?
7. एक उदाहरण की सहायता से 'क्या उत्पादन किया जाये' की केन्द्रीय समस्या को समझाइये।
8. 'किसके लिए उत्पादन किया जाये' की समस्या को उचित उदाहरण की सहायता से समझाइये।
9. किसी अर्थव्यवस्था में 'कैसे उत्पादन किया जाये' की समस्या को उदाहरण की सहायता से समझाइये।
10. एक उत्पादन सम्भावना वक्र खींचिये और उस पर निम्नलिखित स्थितियों को दर्शाइये।

(क) संसाधनों का अल्प प्रयोग।

(ख) संसाधनों का पूर्ण प्रयोग।

(ग) संसाधनो का विकास।

H.O.T.S. ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

*11. उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर क्यों होता है? स्पष्ट करो।

*12. सीमान्त विस्थापन दर से आप क्या समझते हैं? एक अनुसूची द्वारा समझाइये।

*13. उत्पादन संभावना वक्र किन मान्यताओं पर आधारित है? स्पष्ट करो।

*14. केन्द्रीय समस्याओं को बाजार अर्थव्यवस्था तथा नियोजित अर्थव्यवस्था कैसे हल करती है?

एक अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र; अर्थशास्त्र की वह शाखा है जो व्यक्तिगत स्तर पर आर्थिक समस्या का अध्ययन करती है।
2. दुर्लभता से अभिप्राय ऐसी स्थिति से है जिसमें एक साधन की मांग उसकी पूर्ति से अधिक होती है।
3. अर्थव्यवस्था।
4. बेरोजगारी; कुछ भूमि का बेकार पड़े रहना।
5. संसाधन सीमित हैं तथा संसाधनों के वैकल्पिक उपयोग हैं।
6. समष्टि अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था तथा उसके समुच्चयों का अध्ययन किया जाता है।
7. संसाधनों का सीमित होना।
8. समष्टि अर्थशास्त्र।
9. वास्तविक अर्थशास्त्र विश्लेषण बताता है कि समाज की आर्थिक समस्याएं क्या हैं? इसमें हम मानवीय निर्णयों का तथ्यों के रूप में अध्ययन करते हैं।
10. आदर्शात्मक अर्थशास्त्र से अभिप्राय 'क्या होना चाहिए'।
11. यह एक ऐसी आर्थिक प्रणाली है जो निजी सम्पत्ति एवं निजी लाभ पर आधारित होती है।
12. केन्द्रीकृत नियोजित अर्थव्यवस्था।
13. साधनों का विकास (वद्धि)।
14. उत्पादन संभावना वक्र का ढ़ाल नीचे की ओर होता है क्योंकि Y वस्तु के उत्पादन में कमी करके ही X वस्तु के उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है।

15. उत्पादन संभावना वक्र के अन्दर (नीचे) कोई बिन्दु संसाधनों के अल्प प्रयोग व अकुशल तकनीक के प्रयोग को दर्शाता है।

16. (क) जब सीमान्त अवसर लागत बढ़ रही हो तो उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर होता है।

    (ख) यदि सीमान्त अवसर लागत स्थिर है तो उत्पादन सम्भावना वक्र एक सीधी रेखा (दायीं ओर ढालू) होता है।

    (ग) जब सीमान्त अवसर लागत घट रही हो तो उत्पादन संभावना वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर होता है।

17. किसी वस्तु की अवसर लागत परित्याग किये गये अन्य सर्वोत्तम विकल्प का मूल्य होता है।

18. उत्पादन संभावना वक्र पर स्थिति बिन्दु संसाधनों के पूर्ण प्रयोग को दर्शाता है।

19. विनाशकारी भूकम्प की स्थिति में उत्पादन संभावना वक्र बाईं ओर खिसक जायेगा।

20. संसाधनों की मितव्ययता से अभिप्राय संसाधनों के दुरुपयोग को रोकना है ताकि उत्पादन का स्तर अधिकतम मानवीय आवश्यकताओं को सन्तुष्ट कर सकें।

21. सूती वस्त्र उद्योग व्यष्टि अर्थशास्त्र का विषय है क्योंकि यहाँ इकाई वस्त्र उद्योग का अध्ययन किया जा रहा है।

22. सीमान्त विस्थापन दर एक वस्तु की त्यागी जाने वाली इकाइयों एवं अन्य वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने का अनुपात है।

$$MRT = \frac{\Delta y}{\Delta x}$$

23. भारत में बेरोजगारी समष्टि अर्थशास्त्र का विषय है क्योंकि इसका अध्ययन सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर किया जाता है।

यूनिट 2

उपभोक्ता व्यवहार तथा मांग

स्मरणीय बिंदु

- **उपभोक्ता :** वह आर्थिक एजेन्ट हैं जो अंतिम वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करता है।
- **कुल उपयोगिता :** एक निश्चित समय में वस्तु की सभी इकाइयों का उपभोग करने पर प्राप्त संतुष्टि का कुल योग, कुल उपयोगिता कहलाता है।
- **सीमांत उपयोगिता :** वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने पर कुल उपयोगिता में होने वाली शुद्ध वद्धि को सीमांत उपयोगिता कहते हैं।
- **ह्रासमान सीमांत उपयोगिता नियम :** किसी वस्तु की इकाइयों का उत्तरोत्तर उपभोग करने पर प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त होने वाली सीमांत उपयोगिता क्रमशः घटती चली जाती है।
- **उपभोक्ता बंडल :** उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं के ऐसे समूह को कहा जाता है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित क्रय शक्ति के आधार पर खरीद सकता है।
- **बजट सेट :** बजट सेट दो वस्तुओं की मात्राओं के उन सभी बंड़लों का संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता वस्तुओं की कीमत तथा अपनी सीमित क्रय शक्ति के आधार पर खरीद सकता है।
- **उपभोक्ता बजट :** उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय या क्रय शक्ति को बताता है जिसके द्वारा वह निश्चित कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।
- **बजट रेखा :** बजट रेखा दो वस्तुओं के उन सभी संयोगों को एक ही वक्र पर दर्शाती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय से खरीद सकता है।
- **बजट रेखा में परिवर्तन :**
  1. बजट रेखा में समांतर खिसकाव (दायें तथा बायें) उपभोक्ता की आय में परिवर्तन के कारण होता है।
  2. बजट रेखा में घुमाव (एक अक्ष पर दायें तथा बायें) संयोग में शामिल दोनों वस्तुओं में से किसी एक की कीमत में परिवर्तन के कारण होता है।
- **उपभोक्ता संतुलन :** उपभोक्ता उस अवस्था में संतुलन में होता है जब वह अपनी सीमित आय के आधार पर अधिकतम संतुष्टि प्राप्त कर रहा होता है।
- **उपभोक्ता संतुलन की शर्तें :**

  उपयोगिता विश्लेषण के अनुसार :

  (i) एक वस्तु की स्थिति में $MU_x = P_x$

  (ii) दो वस्तुओं की स्थिति में $\frac{MU_X}{P_x} = \frac{MU_y}{P_y} = MU_m$

अनधिमान वक्र विश्लेषण के अनुसार

(i) सीमांत प्रतिस्थापन दर घटती हुई हो

(ii) $MRS_{xy} = \frac{P_x}{P_y}$

(iii) बजट रेखा अनधिमान वक्र को स्पर्श करे।

- **मांग :** वस्तु की वह मात्रा जिसे उपभोक्ता किसी निश्चित कीमत पर खरीदता है या खरीदने के लिए तैयार होता है।
- **बाजार मांग :** कीमत के एक निश्चित स्तर पर किसी बाजार में सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्राओं का योग बाजार मांग कहलाता है।
- **मांग फलन :** यह किसी वस्तु की मांग तथा उसे प्रभावित करने वाले कारकों के फलनात्मक संबंध को बताता है।
- **मांग में परिवर्तन :** कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब वस्तु की मांग घट या बढ़ जाती है।

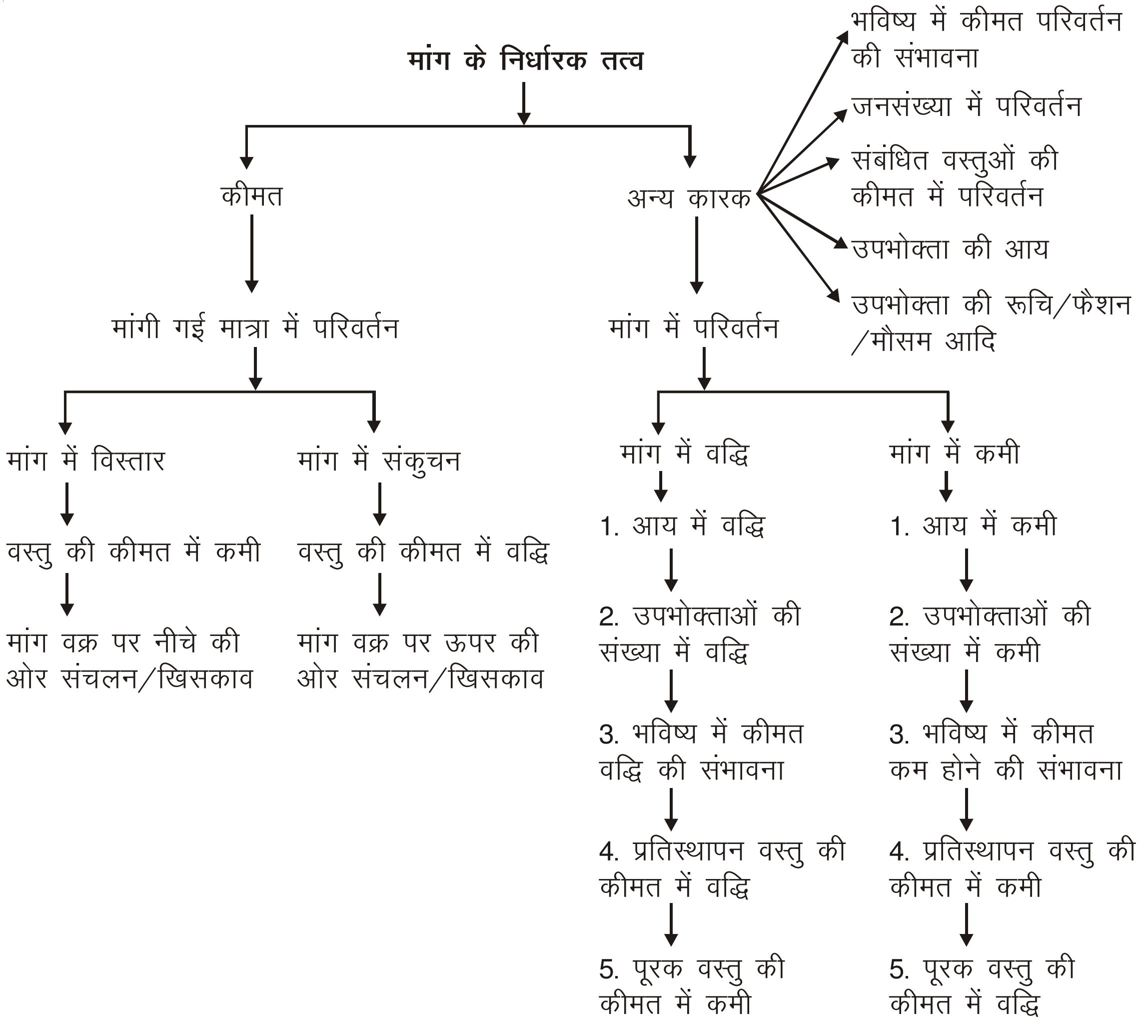

- **मांग की कीमत लोच :** मांग की कीमत लोच, कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप मांग की मात्रा में होने वाले प्रतिक्रियात्मक परिवर्तन को संख्यात्मक रूप में मापती है।

माँग की कीमत लोच को मापने की विधियाँ

↓

कुल व्यय विधि | बिन्दु/ग्राफिक विधि | प्रतिशत/अनुपातिक विधि

- **कुल व्ययविधि :** इस विधि के अनुसार कीमत में परिवर्तन से पूर्व व्यय तथा कीमत में परिवर्तन के बाद व्यय का अध्ययन करके मांग की लोच तय की जाती है।

- **प्रतिशत या आनुपातिक विधि :** $Ed = (-)\frac{\Delta Q}{\Delta P} \times \frac{P}{Q}$ अथवा $Ed = \frac{(Q_1 - Q_0)}{(P_1 - P_0)} \times \frac{P_0}{Q_0}$

अथवा $Ed = \frac{\text{मांग वक्र में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$

- बिन्दु या ग्राफिक विधि $= \frac{\text{मांग वक्र का निचला हिस्सा}}{\text{मांग वक्र का ऊपरी हिस्सा}}$

मांग की कीमत लोच की श्रेणियां

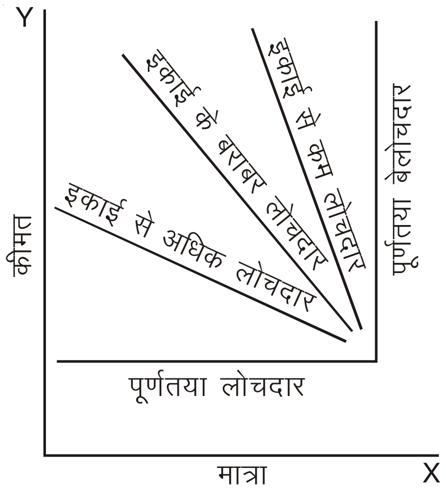

- **कीमत लोच को प्रभावित करने वाले कारक**

A. उपभोक्ता व्यवहार

B. वस्तु की प्रकृति

C. उपभोग के स्थगन की संभावना

D. वस्तु पर व्यय किया जाने वाला आय का भाग

E. वस्तु के विभिन्न प्रयोग

F. उपभोक्ता की आय

एक अंक वाले प्रश्न अतिलघु उत्तर वाले प्रश्न

1. उपयोगिता की परिभाषा दीजिये।
2. सीमान्त उपयोगिता की परिभाषा दीजिये।
3. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम का अर्थ बताइये।
4. सीमांत उपयोगिता किस स्थिति में शून्य होती है?
5. एक वस्तु के संदर्भ में उपभोक्ता संतुलन की शर्त बताइये।
6. उपभोक्ता सतुंलन से क्या अभिप्राय है?
7. उपभोक्ता बजट से क्या अभिप्राय है?
8. उपभोक्ता बंडल को परिभाषित कीजिए।
9. बजट सेट को परिभाषित कीजिए।
10. अनधिमान मानचित्र से क्या अभिप्राय है?
11. बजट रेखा को परिभाषित कीजिए।
12. ऊँचा अनधिमान वक्र अधिक संतुष्टि क्यों प्रदान करता है?
13. घटती सीमांत प्रतिस्थापन दर का अनधिमान वक्र के ढाल पर क्या प्रभाव पड़ता है?
14. उपभोक्ता की आय में वद्धि का संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि वस्तु सामान्य श्रेणी की है?
15. उपभोक्ता के संयोग में शामिल किसी एक वस्तु की कीमत में होने वाली कमी का उपभोक्ता संतुलन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?
16. सामान्य वस्तु को परिभाषित कीजिए।
17. किसी वस्तु की निकटतम प्रतिस्थापन उपलब्ध होने पर उसकी मांग की लोच किस प्रकार प्रभावित होती है?
18. उपभोक्ता की आय में वद्धि होने पर 'x' वस्तु की मांग में कमी आ जाती है। वस्तु 'x' किसी प्रकार की वस्तु है?
19. किसी वस्तु की कीमत कम या अधिक होने पर उसकी प्रतिस्थापन वस्तु की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?
20. वस्तु की कीमत में वद्धि होने पर उस वस्तु पर होने वाले व्यय में वद्धि हो जाती है वस्तु की मांग लोचदार होगी अथवा बेलोचदार।
21. बाजार मांग को परिभाषित कीजिए।
22. मांग अनुसूची को परिभाषा कीजिये।
23. मांग वक्र पर ऊपर की ओर संचलन किस कारण होता है?

24. क्रेताओं की संख्या में वद्धि के फलस्वरूप मांग वक्र में किस ओर खिसकाव होगा?

25. सरल रेखीय मांग वक्र के मध्य बिन्दु पर मांग की लोच क्या होगी?

26. मांग वक्र का ढाल यदि x अक्ष के समांतर हो तो उस स्थिति में मांग की लोच क्या होगी?

27. उपभोक्ता दी गई कीमत पर वस्तु की कम मात्रा कब खरीदता है? कोई दो कारण लिखिए।

28. मांग की लोच ऋणात्मक क्यों होती है?

H.O.T.S. ;उच्च स्तरीय बु(कौशलद्ध

29. वस्तु की इकाइयों का प्रयोग लगातार करने पर अधिकतम होने तक कुल उपयोगिता घटती दर पर क्यों बढ़ती है?

30. बजट रेखा X अक्ष पर बाईं ओर कब खिसकती है?

31. बजट रेखा का परिवर्तित ढाल सरल किस स्थिति में होता है?

32. उपभोक्ता के संयोग में शामिल दोनों वस्तुओं की कीमतों में क्या परिवर्तन हो कि बजट रेखा का परिवर्तित ढाल तीव्र हो जाए।

33. कीमत में कमी होने पर मांग वक्र पर नीचे की ओर संचलन क्यों होता है?

34. कुल उपयोगिता की स्थिति क्या होगी जब सीमांत उपयोगिता वक्र X अक्ष के नीचे स्थित होता है।

3/4 अंक वाले प्रश्न

1. तालिका की सहायता से कुल उपयोगिता एवं सीमान्त उपयोगिता में सम्बन्ध बताइये।

अथवा

कुल उपयोगिता में क्या परिवर्तन होंगे जबकि

(A) सीमांत उपयोगिता वक्र X अक्ष के ऊपर स्थित हो।

(B) सीमांत उपयोगिता वक्र X अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।

(C) सीमांत उपयोगिता वक्र X अक्ष के नीचे स्थित हो।

2. बजट रेखा से क्या अभिप्राय है? इसमें परिवर्तन किन कारणों से होता है?

3. उपयोगिता अवधारणा की सहायता से उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या कीजिए जबकि उपभोक्ता एक वस्तु खरीद रहा हो?

4. अनधिमान वक्र की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

5. दो अनधिमान वक्र एक दूसरे को स्पर्श क्यों नहीं करते?

6. बजट रेखा में समान्तर खिसकाव किस स्थिति में होता है?

7. बजट सेट से क्या अभिप्राय है? एक गणितीय उदाहरण की सहायता से समझाइए।

8. सीमांत प्रतिस्थापन दर से क्या अभिप्राय है? संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से समझाइए।

9. मांग तथा कीमत के ऋणात्मक संबन्ध की व्याख्या कीजिए।

10. निम्न कारकों में परिवर्तन का बाजार मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है :—

    (A) वस्तु के क्रेताओं की संख्या में परिवर्तन

    (B) सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत में परिवर्तन

11. उपभोक्ता की आय बढ़ने पर सामान्य वस्तु की मांग क्यों बढ़ती है?

12. प्रदर्शन प्रभाव से क्या अभिप्राय है यह मांग के नियम का विरोध किस प्रकार करता है?

13. मांग में परिवर्तन तथा मांगी गई मात्रा में परिवर्तन में अंतर लिखिए।

14. मांग वक्र में दाईं ओर खिसकाब (मांग में वद्धि) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।

15. मांग में कमी (मांग वक्र में बाईं बोर खिसकाव) के प्रमुख कारक लिखकर किसी एक की व्याख्या कीजिए।

16. उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए कि वस्तु की कीमत किस प्रकार परिवर्तित हो कि

    (A) पूरक वस्तु की मांग में कमी हो जाए।

    (B) प्रतिस्थापन वस्तु की मांग में वद्धि हो जाए।

17. मांग की कीमत लोच से क्या अभिप्राय है यह सामान्यतः ऋणात्मक क्यों होती है?

18. मांग की लोच पर निम्न कारकों का क्या प्रभाव होता है :

    (A) समय तत्व

    (B) वस्तु की प्रकृति

19. यदि X तथा Y वस्तु की लोच समान है तो उनकी मांग पर क्या प्रभाव पडेगा यदि

    (A) X वस्तु की कीमत 5% घट जाए।

    (B) Y वस्तु की कीमत 15% बढ़ जाए।

20. मांग की कीमत लोच क्या होगी यदि

    (A) कीमत वद्धि से कुल व्यय बढ़ जाए।

    (B) कीमत में कमी से कुल व्यय बढ़ जाए।

21. एक सरल रेखीय मांग वक्र पर स्थित निम्न बिन्दुओं पर मांग कीमत लोच मापिए।

(A) मांग वक्र के मध्य में स्थित बिन्दु पर

(B) मांग वक्र जहां Y अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।

(C) मांग वक्र जहां X अक्ष को स्पर्श कर रहा हो।

22. मांग वक्र का ढ़ाल निम्न स्थितियों में कैसा होगा

(A) पूर्णतया लोचदार मांग

(B) पूर्णतया बेलोचदार मांग

(C) इकाई के बराबर लोचदार मांग

23. निम्न वस्तुओं की मांग की लोच को स्पष्ट कीजिए।

(A) विलासिता की वस्तुएं

(B) वैकल्पिक प्रयोग वाली वस्तुएं

(C) अनिवार्य वस्तुएं

24. वस्तु पर खर्च किया जाने वाला आय का भाग उसकी मांग की लोच पर क्या प्रभाव डालता है?

संख्यात्मक प्रश्न

25. एक वस्तु की मांग की लोच (–2) है उपभोक्ता 16 रु प्रति इकाई कीमत पर वस्तु की एक निश्चित मात्रा खरीदता है, कीमत कम होने पर वह वस्तु की 40 प्रतिशत अधिक मात्रा खरीदता है नई कीमत ज्ञात कीजिए।

26. वस्तु की मांग कीमत लोच = (–2) है। कीमत में परिवर्तन होने से मांग मात्रा 400 इकाई से घटकर 300 इकाई रह जाती है। परिवर्तित कीमत ज्ञात कीजिए। जबकि प्रारंभिक कीमत 40 रु. प्रति इकाई थी।

27. वस्तु की मांग की कीमत लोच 2 है कीमत में 20% की वद्धि होने पर मांग में परिवर्तन ज्ञात कीजिए जबकि प्रारंभिक मांग 120 इकाई थी।

28. एक उपभोक्ता 40 रु. प्रति इकाई कीमत पर वस्तु की 800 इकाई की मांग करता है। कीमत में परिवर्तन से मांग 120 इकाई बढ़ जाती है। यदि मांग की लोच इकाई के बराबर हो तो परिवर्तित कीमत ज्ञात कीजिए।

29. एक उपभोक्ता 4 रु. कीमत पर वस्तु की 50 इकाइयों की मांग करता है जब कीमत घटकर 2 रु. प्रति इकाई रह जाती है तब वह 100 रु. व्यय करता है। मांग की लोच ज्ञात कीजिए। व्यय विधि के अनुसार।

30. X तथा Y वस्तु की मांग की लोच समान है यदि X वस्तु की कीमत 10% घट जाए तथा Y वस्तु की कीमत 10% बढ़ जाए तो X तथा Y वस्तु की मांग में क्या परिवर्तन होंगे?

H.O.T.S. ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

1. उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में अनधिमान वक्र मूल बिन्दुकी ओर उन्नतोदर (अवतल) क्यों होना चाहिए?
2. उपभोक्ता संतुलन हेतु सीमांत प्रतिस्थापन दर तथा दोनों वस्तुओं की कीमतों की अनुपात समान क्यों होना चाहिए।
3. उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में अनधिमान वक्र तथा बजट रेखा का परस्पर स्पर्श करना क्यों आवश्यक है?
4. उपभोक्ता की आय में होने वाला परिवर्तन बजट रेखा को किस प्रकार परिवर्तित करता है?
5. बजट रेखा में होने वाले निम्न परिवर्तनों के कारणों की व्याख्या कीजिए।

   A. केवल X अक्ष पर बाईं ओर खिसकाव

   B. बाईं ओर समांतर खिसकाव
6. सीमांत प्रतिस्थापन दर अनधिमान वक्र के समबन्ध में घटती हुई क्यों होती है?
7. सीमांत उपयोगिता वस्तु की कीमत से कम रह जाने पर उपभोक्ता वस्तु का उपभोग बंद क्यों कर देता है?
8. सीमांत उपयोगिता यदि वस्तु की कीमत से अधिक होती है उस स्थिति में उपभोक्ता का संतुलन क्यों नहीं होता?
9. बजट रेखा को आय तथा कीमत रेखा क्यों कहा जाता है?
10. किसी वस्तु को घटिया अथवा सामान्य के रूप में वर्गीकृत किस आधार पर किया जाता है?
11. मांग वक्र का दाईं ओर खिसकाव तथा मांग वक्र पर नीचे की ओर संचलन के बीच अंतर कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. उपभोक्ता संतुलन की अवस्था में कब पहुंचता है जब वह केवल एक ही वस्तु का उपभोग कर रहा हो रेखाचित्र व तालिका का प्रयोग करें।
2. उपभोक्ता संतुलन में बजट रेखा की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

   अथवा

   दो वस्तुओं के सम्बन्ध में उपभोक्ता संतुलन की व्याख्या कीजिए। रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।
3. मांग के नियम की व्याख्या करते हुए इसके प्रमुख अपवाद लिखिए।
4. मांग में वद्धि (मांग वक्र के दाईं ओर खिसकने) के प्रमुख कारकों की व्याख्या कीजिए।
5. मांग की कीमत लोच को मापने की व्यय विधि का उल्लेख कीजिए।
6. दोनों अक्षों को स्पर्श करता हुआ मांग वक्र खींचिए। इस मांग वक्र पर मांग की कीमत लोच को स्पष्ट करने वाले बिन्दु निर्धारित कीजिए।

7. मांग का नियम क्यों लागू होता है, व्याख्या कीजिए।

अथवा

मांग वक्र ऋणात्मक ढाल वाला क्यों होता है?

8. मांग की लोच के प्रमुख निर्धारकों की व्याख्या कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न (HOTS) उच्च स्तरीय बु(कौशल

9. संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निम्न स्थितियों में मांग की लोच ज्ञात कीजिए कुल व्यय विधि की सहायता से

   (A) कीमत स्थिर हो और मांग घट जाए।

   (B) मांग स्थिर हो और कीमत घट जाए।

10. कारण सहित स्पष्ट कीजिए कि निम्न कथन सही है अथवा गलत।

    (A) उपभोक्ताओं की संख्या में वद्धि बाजार मांग वक्र को दायीं ओर खिसका देता है।

    (B) प्रतिस्थापन वस्तु की उपलब्धता वस्तु की मांग को लोचदार बना देती है।

    (C) सरल रेखीय मांग वक्र के मध्य में स्थित बिन्दु पर मांग समलोचदार होती है।

11. निम्न की कारण सहित व्याख्या कीजिए।

    (A) दो अनधिमान वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते।

    (B) घटिया वस्तु का आय प्रभाव ऋणात्मक क्यों होता है?

    (C) मांगी गई मात्रा में परिवर्तन मांग के नियम की व्याख्या करता है।

अतिलघु उत्तर वाले प्रश्नों के उत्तर ;1 अंक वाले प्रश्नो के उत्तरद्ध

1. वस्तुओं में मानवीय आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु पाये जाने वाले गुण को उपयोगिता कहते है।
2. किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उपभोग करने से कुल उपयोगिता में होने वाला शुद्ध परिवर्तन सीमान्त उपयोगिता कहलाता है।
3. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम यह बताता है कि जैसे–जैसे किसी वस्तु की समान इकाइयों का लगातार प्रयोग किया जाता है प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त सीमान्त उपयोगिता घटती चली जाती है।
4. जब कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।
5. $MU_x = P_x$ अर्थात् वस्तु से प्राप्त सीमांत उपयोगिता = वस्तु की कीमत।

6. उपभोक्ता संतुलन से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें एक उपभोक्ता अपनी दी हुई आय तथा बाजार कीमतों से अधिकतम संतुष्टि प्राप्त करता है।

7. उपभोक्ता का बजट उसकी वास्तविक आय या क्रय शक्ति की कीमत जिसकी सहायता से वह निश्चित कीमत वाली वस्तुओं की निश्चित मात्रा खरीद सकता है।

8. उपभोक्ता बंडल दो वस्तुओं की मात्राओं के ऐसे समूह को कहा जाता है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय की सहायता से खरीद सकता है।

9. बजट सेट दो वस्तुओं की मात्राओं के उन सभी बंड़लों का संयोजन अथवा समूह है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय तथा दोनों वस्तुओं की कीमतों के आधार पर खरीद सकता है।

10. अनधिमान मानचित्र संतुष्टि के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित करने वाले अनधिमान वक्रों का समूह होता है।

11. बजट रेखा दो वस्तुओं के उन सभी संभावित संयोगों को एक ही वक्र पर प्रदर्शित करती है जिन्हें उपभोक्ता अपनी सीमित आय से खरीद सकता है।

12. ऊँचे अनधिमान वक्र पर उपभोक्ता को प्रत्येक बिन्दु पर नीचे अनधिमान वक्र की तुलना में दोनों वस्तुओं की अधिक इकाईयां प्राप्त होती है।

13. अनधिमान वक्र मूल बिन्दु की ओर उन्नतोदर हो जाता है।

14. संतुलन किसी ऊँचे अनधिमान वक्र पर स्थापित होगा।

15. संतुलन किसी ऊँचे अनधिमान वक्र पर खिसक जाएगा।

16. वे वस्तुएं जिनका आय प्रभाव धनात्मक तथा कीमत प्रभाव ऋणात्मक हो सामान्य वस्तुएं कहलाती है।

17. निकटतम प्रतिस्थापन वस्तु उपलब्ध होने पर वस्तु की मांग लोचदार हो जाती है।

18. घटिया/सस्ती या निकृष्ट वस्तु।

19. प्रतिस्थापन वस्तु की मांग बढ़ जाएगी।

20. मांग बेलोचदार होगी (इकाई से कम लोचदार)

21. किसी बाजार में एक निश्चित कीमत पर सभी उपभोक्ताओं द्वारा वस्तु की खरीदी गई मात्रा का योग बाजार मांग कहलाता है।

22. मांग अनुसूची कीमत के विभिन्न स्तरों पर मांग की मात्राओं को तालिका के रूप में दर्शाती है।

23. मांग वक्र पर ऊपर की ओर संचलन कीमत में वद्धि के कारण होता है।

24. मांग वक्र दाईं ओर खिसकेगा।

25. इकाई के बराबर लोचदार।

26. पूर्णतया लोचदार।

27. (i) आय में कमी। (ii) भविष्य में कीमत कम होने की संभावना

28. वस्तु की कीमत तथा मांग में विपरीत संबंध होने के कारण मांग की कीमत लोच ऋणात्मक होती है।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर (HOTS) उच्च स्तरीय बुि(कौशल

29. वस्तु की प्रत्येक अगली इकाई से प्राप्त सीमांत उपयोगिता घटती चली जाती है जिससे कुल उपयोगिता अधिकतम होने तक घटती दर से बढ़ती है।

30. बजट रेखा X अक्ष पर बाईं ओर तब खिसकती है जब Y अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत स्थिर हो और X अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत बढ़ जाए।

31. बजट रेखा का परिवर्तित ढाल सरल तब हो जाता है जब Y अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत स्थिर हो और X अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत घट जाए।

32. Y अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत स्थिर रहे तथा X अक्ष पर प्रदर्शित वस्तु की कीमत बढ़ जाए।

33. कीमत में कमी होने पर उपभोक्ता की क्रय शक्ति बढ़ जाती है और वह पहले की तुलना में वस्तु की अधिक मात्रा खरीदने में समर्थ हो जाता है। अतः मांगी गई मात्रा में वद्धि होने पर मांग वक्र पर नीचे की ओर संचलन होता है।

34. कुल उपयोगिता घटना प्रारंभ कर देगी।

यूनिट 3

उत्पादक का व्यवहार और पूर्ति

- आगतो में परिवर्तन को उत्पादन कहते हैं। इसमें भौतिक वस्तुएं तथा अभौतिक वस्तुएं (सेवाएं) सम्मिलित हैं।
- उत्पादन फलन भौतिक आगतों तथा भौतिक उत्पादन के फलनात्मक संबंध को दर्शाता है।

$$O_x = f(i_1, i_2 \ldots\ldots i_n)$$

$O_x \rightarrow$ x वस्तु का उत्पादन

$f \rightarrow$ फलन

$i_1\ i_2 \ldots\ldots i_n \rightarrow$ विभिन्न आगतें

- उत्पादन फलन को अल्पकालीन उत्पादन फलन तथा दीर्घकालीन उत्पादन फलन में विभाजित किया जाता है।
- अल्पकालीन उत्पादन फलन–जब अल्पकाल में अन्य साधन स्थिर रखते हुए एक परिवर्ती साधन की मात्रा बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाया जाता है। इसे 'परिवर्ती साधन के प्रतिफल का नियम' कहते हैं।
- अल्पकालः समय की वह अवधि है जिसमें किसी वस्तु की पूर्ति एक दी हुई क्षमता तक ही बढ़ाई जा सकती है क्योंकि इस अवधि में उत्पादन के स्थिर साधनों में परिवर्तन नहीं होता है।

उत्पादन की अवधारणाएं
↓
कुल उत्पाद (TP) | सीमांत उत्पाद (MP) | औसत उत्पाद (AP)

- एक फर्म द्वारा एक निश्चित समय में उत्पादित वस्तुओं की कुल मात्रा को कुल उत्पादन कहते हैं। कुल उत्पाद की गणना, औसत उत्पाद (AP) को साधन की इकाइयों से गुणा करके प्राप्त किया जाता है।

$$TP = AP \times L$$

या

सीमांत उत्पाद (MP) के कुल योग से करते हैं।

$$TP = \quad MP$$

- परिवर्ती साधन की एक अतिरिक्त इकाई का प्रयोग करने पर कुल भौतिक उत्पाद में जो वद्धि होती है उसे सीमांत उत्पाद कहते हैं।

$$MP = \frac{\text{कुल उत्पाद में परिवर्तन } (\Delta TP)}{\text{कारक (श्रम) इकाई में परिवर्तन } (\Delta L)}$$

- प्रति इकाई परिवर्ती साधन के कुल भौतिक उत्पाद को औसत उत्पाद कहते हैं।

$$AP = \frac{\text{कुल उत्पाद}}{\text{परिवर्ती साधन की इकाइयां}}$$

- साधन के प्रतिफल की तीन अवस्थाएँ होती हैं।

  पहली अवस्था : कुल उत्पाद (TP) बढ़ती दर से बढ़ता है। सीमांत उत्पाद (MP) बढ़ता हुआ अपने अधिकतम बिंदु तक पहुंच जाता है।

  दूसरी अवस्था : कुल उत्पाद (TP) घटती दर से बढ़ता है। सीमांत उत्पाद (MP) घटता जाता है लेकिन धनात्मक रहता है।

  तीसरी अवस्था : कुल उत्पाद (TP) घटना शुरु हो जाता है। सीमांत उत्पाद (MP) ऋणात्मक हो जाता है।

- **नियम के लागू होने के कारण :**

  1. एक साधन के बढ़ते प्रतिफल–

     (A) साधनों का अनुकूलतम संयोग प्राप्त होना।

     (B) स्थिर साधनों का पूर्ण उपयोग।

  2. एक साधन के घटते प्रतिफल–

     (A) साधनों का क्षमता से अधिक उपयोग।

     (B) साधनों का एक दूसरे का पूर्ण स्थानापन्न न होना।

- औसत उत्पाद वक्र तथा सीमांत उत्पाद वक्र दोनों उल्टे U के आकार ($\cap$) के होती हैं।
- सीमांत उत्पाद 'शून्य' हो सकता है लेकिन औसत उत्पाद कभी भी शून्य नहीं हो सकता इसलिए औसत उत्पाद वक्र 'X' अक्ष को कभी नहीं छूता है।
- स्पष्ट व अस्पष्ट लागत के योग को लागत कहते हैं। स्पष्ट, अस्पष्ट लागत तथा सामान्य लाभ के योग को आर्थिक लागत कहते है।
- वे भुगतान जो उत्पादक को अन्य व्यक्तियों से प्राप्त वस्तुओं व साधन सेवाओं के लिए देने पड़ते हैं उन्हे उत्पादक की स्पष्ट लागतें कहते हैं।
- अस्पष्ट लागतें उत्पादन में उत्पादक द्वारा प्रयोग किए गए निजी साधनों की कीमत होती है।
- सामान्य लाभ वह न्यूनतम लाभ होता है जो किसी उत्पादक को किसी दी हुई वस्तु के उत्पादन को जारी रखने के लिए दीर्घ अवधि तक मिलना चाहिए।
- समय अवधि के आधार पर लागते निम्न प्रकार की होती हैं।

अल्पावधि लागते	*दीर्घावधि लागते*
1. कुल स्थिर लागत (TFC)	1. दीर्घ कालीन औसत लागत (LAC)
2. कुल परिवर्ती लागत (TVC)	2. दीर्घकालीन सीमांत लागत (LMC)
3. कुल लागत (TC)	
4. औसत लागत (AC)	
5. सीमांत लागत (MC)	
6. औसत स्थिर लागत (AFC)	
7. औसत परिवर्ती लागत (AVC)	

- कुल बंधी लागत उत्पादन के सभी स्तरों पर स्थिर रहती है।

  कुल बंधी लागत (TFC) वक्र 'X' अक्ष के समान्तर होता है।

  बंधी लागत तब भी शून्य नहीं होती जब उत्पादन शून्य होता है। बंधी लागतों के उदाहरण : मशीनरी, इमारतें।

  TFC = TC – TVC   Or   TFC = AFCX Q

- कुल परिवर्ती लागतें (TVC) वे लागतें है जो उत्पादन में परिवर्तन के साथ–साथ परिवर्तित होती हैं। अर्थात उत्पादन के शून्य स्तर पर शून्य तथा उत्पादन में वद्धि के साथ–साथ वद्धि करती है।

  कुल परिवर्ती लागत (TVC) की गणना निम्न प्रकार की जाती है।

  $$TVC = TC - TFC \quad \text{या}$$
  $$TVC = AVC \times Q \quad \text{या}$$
  $$TVC = \Sigma MC$$

  कुल लागत, कुल बंधी लागत तथा कुल परिवर्ती लागत का योग होती है।

  $$TC = TFC + TVC \quad \text{या}$$
  $$TC = ATC \times Q$$

- कुल लागत वक्र तथा कुल परिवर्ती लागत वक्र एक दूसरे के समांतर होते हैं। दोनों के बीच की लंबवत दूरी कुल बंधी (स्थिर) लागत के समान होती है क्योंकि कुल बंधी लागत उत्पादन के सभी स्तर पर समान रहती है।

- उत्पादन के शून्य स्तर पर कुल लागत, कुल बंधी लागत के समान होती है क्योंकि उत्पाद के शून्य स्तर पर कुल परिवर्ती लागत शून्य होती है।

- उत्पादित वस्तु की प्रति इकाई बंधी लागत को औसत बंधी लागत (AFC) कहते हैं।

$$AFC = \frac{TFC}{Q} \quad \text{or} \quad AFC = ATC - AVC$$

औसत बंधी लागत वक्र का आकार आयताकार अति पर वलय होता है। वक्र के सभी बिन्दुओं पर आयत की बनावट एक समान होती है।

औसत परिवर्ती लागत (AVC) वस्तु की प्रति इकाई परिवर्ती लागत होती है।

$$AVC = \frac{TVC}{Q} \quad \text{or} \quad AVC = ATC - AFC$$

- उत्पाद में वद्धि होने पर औसत परिवर्ती लागत आरंम्भ में घटती है तथा बाद में बढ़ती है, इसलिए इसका वक्र U आकार का होता है।
- औसत लागत या औसत कुल लागत वस्तु की प्रति इकाई उत्पादन लागत है। यह औसत बंधी लागत और औसत परिवर्ती लागत का योग होती है।

$$ATC = AFC + AVC$$

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पान्न करने से कुल लागत या कुल परिवर्ती लागत में होने वाली वद्धि को सीमांत लागत (MC) कहते है।

$$MC = TVC_n - TVC_{n-1} \quad \text{or} \quad MC = \frac{\Delta TVC}{\Delta Q}$$

- उत्पाद की बिक्री से प्राप्त राशि को आगम (संप्राप्ति) कहते हैं।

या

एक क्रेता द्वारा वस्तु पर किया गया खर्च जो उत्पादक की आय है, संप्राप्ति कहलाता है।

- कुल संप्राप्ति वह राशि है जो एक विशेष समय अवधि में उत्पाद की दी हुई इकाईयों को बेचने से प्राप्त होती है।

$$TR = P \times Q \quad \text{or} \quad TR = \Sigma MR$$

- बेची गई वस्तु की प्रति इकाई आगम को (औसत आगम) औसत संप्राप्ति कहते हैं।

$$AR = \frac{TR}{Q} = \frac{P \times \not{Q}}{\not{Q}} = \text{Price}$$

अर्थात औसत संप्राप्ति वस्तु की कीमत के समान होती है।

- वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई बेचने से कुल संप्राप्ति में होने वाली शुद्ध वद्धि को सीमांत संप्राप्ति (MR) कहते हैं।

$$MR = \frac{\Delta TR}{\Delta Q}$$

- जब कीमत स्थिर रहती है अर्थात जब बाजार में पूर्ण प्रतियोगिता होती है तब
    - (i) औसत संप्राप्ति (AR) और सीमांत संप्राप्ति (MR) उत्पाद के सभी स्तरों पर स्थिर रहती हैं और वस्तु की कीमत के समान होती है।
    - (ii) कुल संप्रापित (TR) वक्र अक्ष केन्द्र O से गुजरने वाली धनात्मक ढलान वाली सीधी रेखा होती है।
    - (iii) उत्पादन के एक निश्चित स्तर पर कुल संप्राप्ति कीमत रेखा के नीचे के क्षेत्रफल के बराबर होती है।
- एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार में TR, AR और MR का व्यवहार जब प्रति इकाई कीमत कम होती है।
    - (i) AR और MR वक्र नीचे की ओर ऋणात्मक ढलान वाले होते है। MR वक्र AR वक्र के नीचे रहता है।
    - (ii) MR, AR की तुलना में दो गुणा दर से घटता है।
    - (iii) बेची गई इकाईयों में वद्धि के साथ TR शुरु में बढ़ता है फिर अधिकतम होता है और अंत में गिरने लगता है।
- पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे एक फर्म या विक्रेता कीमत के विभिन्न स्तरों पर दी हुई समयावधि के अन्तर्गत बेचने के लिये तैयार होते हैं।
- बाजार पूर्ति से अभिप्राय किसी वस्तु की उन मात्राओं से है जिसे सभी फर्म या विक्रेता किसी बाजार में कीमत के विभिन्न स्तरों पर बेचने के लिये तैयार हैं।
- पूर्ति अनुसूची कीमत के विभिन्न स्तरों पर पूर्ति की विभिन्न मात्राओं को तालिका के रूप में प्रदर्शित करती है।
- पूर्ति का नियम कीमत तथा पूर्ति के धनात्मक संबंध की व्याख्या करता है अर्थात पूर्ति का नियम स्पष्ट करता है कि अन्य कारकों के स्थिर रहने पर किसी वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ती है तथा कीमत में कमी होने पर वस्तु की पूर्ति में कमी आती है।''
- व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची एवं बाजार पूर्ति अनुसूची के चित्रमय प्रदर्शन को क्रमशः व्यक्तिगत पूर्ति वक्र तथा बाजार पूर्ति वक्र कहा जाता है। ये दोनों प्रकार के वक्र वस्तु की कीमत और पूर्ति की मात्रा के मध्य घनात्मक सम्बन्ध दर्शाते है। यह वक्र धनात्मक ढाल वाले होते हैं।
- पूर्ति फलन किसी वस्तु की पूर्ति तथा उसके निर्धारक के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है। इसे निम्न समीकरण के रूप में लिखा जा सकता है।

  $$Sx = f (Px, T, Nf, Pf, Gp, Ex.)$$

  पूर्ति के निर्धारक तत्व
    - (i) वस्तु की कीमत
    - (ii) तकनीक
    - (iii) फर्मों की संख्या

(iv) उत्पादन आगतों की कीमत

(v) सरकारी नीति

(vi) भविष्य में कीमत परिवर्तन की संभावना

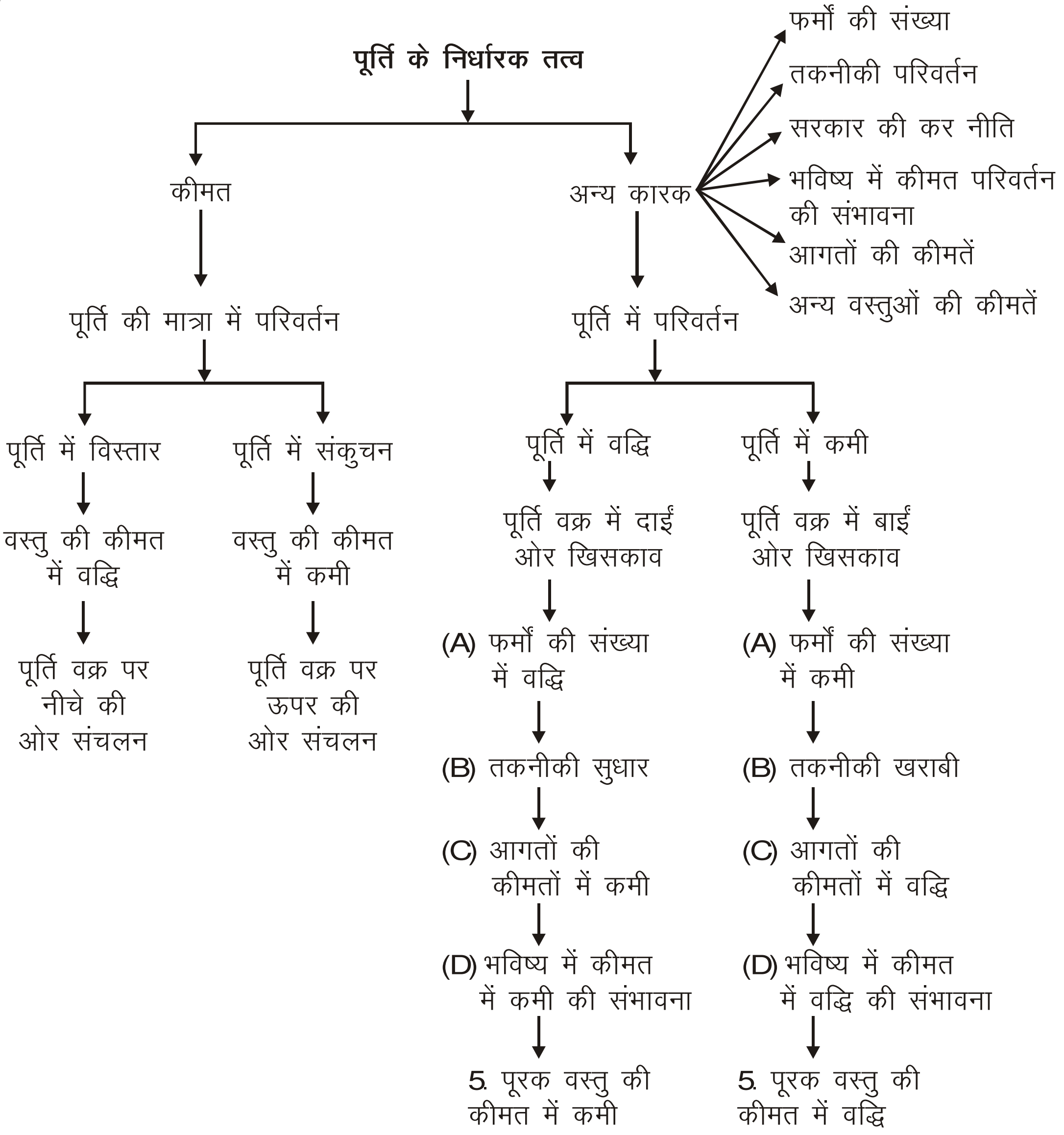

- एक वस्तु की पूर्ति की कीमत लोच वस्तु की कीमत में परिवर्तनों के कारण वस्तु की पूर्ति की मात्रा की अनुक्रियाशीलता को मापती है

$$\text{पूर्ति की कीमत लोच} = \frac{\text{पूर्ति मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन}}{\text{कीमत में प्रतिशत परिवर्तन}}$$

- सरल रेखीय पूर्ति वक्र के हर बिंदु पर पूर्ति की लोच इकाई से अधिक होगी यदि वक्र x अक्ष को उसके ऋणात्मक खंड में काटता है तथा इकाई से कम ($e_s < 1$) होगी जब यह x-अक्ष को उसके घनात्मक खण्ड में काटता है।

मूल बिन्दु से किसी भी कोण पर गुजरने वाले पूर्ति वक्र पर पूर्ति की लोच इकाई के बराबर ($e_s = 1$) होगी।

- एक उत्पादक का मुख्य उद्देश्य अधिकतम् लाभ प्राप्त करना होता है।
- लाभ, आर्थिक लागत पर संप्राप्ति का आधिक्य होता है।
- उत्पादक जब अधिकतम लाभ प्राप्त करता है तो साम्य (सतुंलन) की स्थिति में होता है। अर्थात जब TR और TC का अंतर अधिकतम व धनात्मक होता है तथा अतिरिक्त उत्पादन से लाभ में कमी आती है।

उत्पादन संतुलन की दो शर्ते :

एक प्रतियोगी फर्म द्वारा अधिकतम लाभ देने वाला उत्पादन स्तर (level of output) निर्धारित करने के लिए निम्न दो शर्तों या विधियों का प्रयोग किया जाता है।

(a) कुल संप्राप्ति (TR) तथा कुल लागत (TC) विधि

(b) सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत विधि।

(a) **कुल संप्राप्ति एवं कुल लागत विधि :** इस विधि में उत्पादन संतुलन की तीन शर्तें हैं :

(i) कुल संप्राप्ति और कुल लागत के बीच का अन्तर अधिकतम होना, (आवश्यकीय शर्त)

(ii) उत्पादन बढ़ाने पर लाभ का कम होना (पूरक शर्त)

(iii) स्पर्शीय रेखा TR और TC वक्र के समानांतर होनी चाहिए।

(b) **सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत विधि**

(i) सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत बराबर होना चाहिए, (फर्म का लाभ अधिकतम उत्पादन के उस स्तर पर होता है जहां वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई को बेचने से प्राप्त संप्राप्ति (MR) एक अतिरिक्त इकाई के उत्पादन की लागत (MC) के बराबर होता है।

(ii) सीमांत वक्र (MC) संतुलन बिन्दु के बाद बढ़ना चाहिए।

अथवा

सीमांत लागत वक्र, सीमांत आगम वक्र को नीचे से काटना चाहिए।

- *समस्तर बिंदु :* वह बिंदु होता है जहाँ TR = TC होती है।

इस बिंदु पर फर्म सामान्य लाभ अर्जित कर रही होती है। सामान्य लाभ आर्थिक लागत का है एक घटक होता है।

एक अंक वाले प्रश्न

1. उत्पादन की परिभाषा लिखिए।
2. उस अवधि का नाम लिखिए जिसमें उत्पादक के पैमाने को बदला नहीं जा सकता।

3. उत्पादन के बढ़ती दर से वद्धि के दो करण लिखिए।

4. जब परिवर्तनीय आगत (श्रम) में एक इकाई की वद्धि की जाती है तो कुल उत्पाद गिरता है, श्रम की सीमांत उत्पादकता के बारे में आप क्या कहेगें?

5. औसत उत्पाद से किस प्रकार कुल उत्पाद की गणना की जा सकती है?

6. उत्पादन फलन की परिभाषा लिखिए।

7. परिवर्ती अनुपात के प्रतिफल का नियम क्या है? लिखिए।

8. जब परिवर्ती आगत का सीमांत उत्पाद (MP) घट रहा हो लेकिन धनात्मक हो तब कुल उत्पाद (TP) की क्या स्थिति होती है?

9. जब औसत उत्पाद (AP) गिर रहा हो तो MP तथा AP में क्या संबंध होगा?

10. जब परिवर्ती कारक (श्रम) की इकाइयां 5 से बढ़ाकर 6 इकाइयाँ करने से कुल उत्पाद 17 इकाइयों से 15 इकाइयां हो जाता है तो प्रतिफल के नियम की कौन सी अवस्था है नाम लिखिए।

11. औसत भौतिक उत्पाद (APP) तथा सीमांत भौतिक उत्पाद (MPP) वक्रों का सामान्य आकार कैसा होता है?

12. कारक आगतों तथा गैर कारक आगतों के दो–दो उदाहरण लिखिए।

13. एक कारक (साधन) के रोजगार के स्तर में एक से दो इकाइयों की वद्धि होने से सीमांत उत्पाद में 20 इकाइयों से 22 इकाइयों की वद्धि हो जाती है तो दूसरी इकाई का औसत उत्पाद (AP) तथा कुल उत्पाद (TP) ज्ञात कीजिए।

14. श्रम विभाजन से आप क्या समझते हो?

15. उत्पादन के स्थिर कारकों से क्या अभिप्राय है?

16. उत्पादन के कुछ कारकों को परिवर्ती कारक क्यों कहा जाता है?

17. कुल भौतिक उत्पाद (TPP) कब अधिकतम होता है?

18. कुल उत्पाद में गिरावट किस प्रकार सीमांत उत्पाद को प्रभावित करती है?

19. क्या TPP तथा APP कभी शून्य अथवा ऋणात्मक हो सकते है?

20. लागत से क्या तात्पर्य है?

21. स्पष्ट लागते किन्हे कहते हैं?

22. बंधी लागते या पूरक लागतें या उपरि लागतें किन्हे कहते हैं?

23. अस्पष्ट लागतों से आप क्या समझते हैं?

24. कुल परिवर्ती लागत (TVC) वक्र का कैसा आकार होता है।

25. सीमांत लागत से कुल परिवर्ती लागत किस प्रकार ज्ञात की जाती है?

26. जब सीमांत लागत में वद्धि हो रही होती है तब क्या औसत लागत, सीमांत लागत से कम हो सकती है?

27. कुल लागत वक्र तथा कुल परिवर्ती लागत वक्र एक दूसरे के समान्तर क्यों होते हैं।

28. उस अल्पकालीन लागत का नाम लिखिए जो उत्पादन के शून्य स्तर पर शून्य नहीं होती है।

29. क्या गिरती हुई औसत लागत, सीमांत लागत से अधिक हो सकती है?

30. 5 इकाइयों की औसत परिवर्ती लागत 20 रु॰ है तथा 6 इकाइयों की कुल परिवर्ती लागत 125 रु॰ है तो सीमांत लागत ज्ञात कीजिए।

31. सीमांत लागत ज्ञात कीजिए जब 5 इकाइयों की औसत परिवर्ती लागत 20 रु॰ तथा 6 इकाइयों की कुल परिवर्ती लागत 200 रु. है।

32. जब दूसरी इकाई की सीमांत लागत 40 रु॰ तथा तीसरी इकाई की 20 रु॰ है तो तीसरी इकाई की कुल परिवर्ती लागत और औसत लागत ज्ञात कीजिए।

33. औसत बंधी लागत (AFC) वक्र 'X' अक्ष व 'Y' अक्ष को क्यों नहीं छूता है?

34. कुल परिवर्ती लागत वक्र से किस प्रकार सीमांत लागत ज्ञात की जाती है?

35. दर्जी की दुकान में किन्ही दो स्पष्ट लागतों के नाम लिखिए।

36. परिवर्ती अनुपात के नियम की किस अवस्था में औसत लागत न्यूनतम होती है?

37. एक फर्म किसी वस्तु 'A' की 40 इकाइयों का उत्पादन करती है इस स्तर पर औसत परिवर्ती लागत 30 रु॰ है और औसत कुल लागत 70 रु॰ है। कुल बंधी लागत ज्ञात कीजिए।

38. उत्पादन के शून्य स्तर से वद्धि करके एक इकाई होने पर कुल लागत 60 रु॰ से बढ़कर 100 रु॰ हो जाती है। एक इकाई उत्पादन की औसत बंधी लागत क्या होगी?

39. संप्राप्ति की परिभाषा लिखिए।

40. आप कुल संप्राप्ति (TR) की गणना किस प्रकार करोगे?

41. जब कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है तो सीमांत संप्राप्ति (MR) क्या होती है?

42. जब किसी वस्तु की कीमत गिरती है तो सीमांत संप्राप्ति किस दर से गिरती है?

43. 3 इकाइयों की औसत संप्राप्ति 8 रु॰ और चौथी इकाई की सीमांत संप्राप्ति 4 रु॰ है तो चार इकाईयों की कुल संप्राप्ति ज्ञात कीजिए।

44. चार इकाइयों की कुल संप्राप्ति 28 रु॰ है। तथा पांचवी ईकाई की सीमांत संप्राप्ति 2 रु॰ है। पांचवी इकाई की औसत संप्राप्ति ज्ञात कीजिए।

45. जब उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होता है तब औसत संप्राप्ति व सीमांत संप्राप्ति के मध्य क्या संबंध होता है?

46. किसी उत्पाद की बिक्री में 1 इकाई से वद्धि होकर 2 इकाई हो जाने पर औसत संप्राप्ति 10 रु. से गिरकर 9 रु. रह जाती है। दूसरी इकाई की सीमांत संप्राप्ति ज्ञात कीजिए।

47. जब कुल संप्राप्ति में वद्धि एक स्थिर दर से होती है तो इसका सीमांत संप्राप्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

48. पूर्ति को परिभाषित कीजिये?

49. व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची से आप क्या समझते हैं?

50. पूर्ति फलन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

51. पूर्ति को प्रभावित करने वाले कोई दो कारक लिखिए।

52. पूर्ति में परिवर्तन से क्या अभिप्राय है?

53. पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचलन क्यों होता है?

54. कीमत में किस परिवर्तन के कारण पूर्ति वक्र पर ऊपर की ओर संचलन होता है?

55. कर की दरों में वद्धि से पूर्ति कैसे प्रभावित होती है?

56. पूर्ति वक्र के बाईं ओर खिसकने से क्या अभिप्राय है?

57. आगतों की कीमत में कमी पूर्ति पर क्या प्रभाव डालती है?

58. पूर्ति वक्र धनात्मक ढाल वाला क्यों होता है?

59. पूर्ति की लोच से क्या अभिप्राय है?

60. पूर्ति की लोच क्या होगी यदि पूर्ति वक्र Y अक्ष के समांतर हो।

61. पूर्ति की लोच इकाई के बराबर किस स्थिति में होती है।

62. वस्तु की प्रकृति पूर्ति की लोच पर क्या प्रभाव डालती है?

63. अति अल्पकाल में पूर्ति की लोच कैसी होती है?

64. नाशवान वस्तुओं की पूर्ति की लोच कैसी होती है?

65. फर्मों की संख्या में परिवर्तन पूर्ति की लोच पर क्या प्रभाव डालता है?

66. उत्पादक दी हुई कीमत पर वस्तु की पूर्ति कब बढ़ा देता है। कोई दो कारण लिखिए।

67. पूर्ति के नियम से क्या अभिप्राय है?

68. पूर्ति के नियम के दो अपवाद लिखिए।

69. पूर्ति में विस्तार क्यों होता है?

70. 'उत्पादक के संतुलन' से आप का क्या तात्पर्य है?

71. उत्पादक संतुलन की कुल संप्राप्ति और कुल लागत विधि की तीन शर्तें बताईये।

72. उत्पादक संतुलन की सीमांत संप्राप्ति और सीमांत लागत विधि की दो शर्तें बताइये।

73. उत्पादक के अधिकतम लाभ से आप क्या समझते हैं?

74. समस्तर बिन्दु क्या होता है?

75. उत्पादक सतुलन की TR और TC विधि की आवश्यक शर्त क्या है?

76. सामान्य लाभ से आप क्या समझते हैं?

77. उत्पादक संतुलन ज्ञात करने की दो विधियों के नाम बताइए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

78. जब किसी वस्तु की कीमत गिरती है तो सीमांत संप्राप्ति किस दर से गिरती है?

79. पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत कुल संप्राप्ति वक्र का ढलान स्थिर क्यों होता है?

80. कीमत रेखा तथा कुल संप्राप्ति के मध्य क्या संबंध होता है?

81. उत्पादन के एक निश्चित स्तर पर उत्पादक की सीमांत लागत सीमान्त संप्राप्ति से अधिक हो तो उत्पादक को अपना लाभ अधिकतम करने के लिए क्या करना चाहिए।

82. कुल बंधी लागत वक्र (TFC) 'X' अक्ष के क्षैतिज व समानांतर क्यों होता है?

83. यदि पूर्ति वक्र X अक्ष को काटते हुए गुजरता है तो पूर्ति की लोच कैसी होती है?

84. कीमत में कमी होने पर उत्पादक पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर क्यों खिसकता है?

85. मूल बिन्दु से 40° के कोण पर गुजरने वाले पूर्ति वक्र पर पूर्ति की लोच क्या होगी?

86. कीमत स्थिर रहने पर पूर्ति वक्र दाएँ ओर कब खिसकता है?

87. कीमत बढ़ने पर पूर्ति अधिक क्यों हो जाती है?

88. प्रतियोगी वस्तु की कीमत में वद्धि का किसी वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3/4 अंकों वाले प्रश्न

1. सीमांत उत्पादन में परिवर्तन के फलस्वरुप कुल उत्पादन का व्यवहार किस प्रकार का होता है?

2. कारक के वर्धमान प्रतिफल के लागू होने के कारणों की संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

3. कारक के ऋणात्मक प्रतिफल क्यों लागू होते हैं?

4. एक सामान्य उत्पादक किस अवस्था में उत्पादन को जारी रखेगा और क्यों?

5. श्रम विभाजन से क्या अभिप्राय है? ये किस प्रकार कारक के प्रतिफल को प्रभावित करते हैं?

6. कुल स्थिर लागत तथा कुल परिवर्ती लागत में अंतर लिखिए।

7. चित्र की सहायता से औसत कुल लागत (ATC) औसतपरिवर्ती लागत (AVC) और सीमांत लागत (MC) के मध्य संबंध दर्शाइए।

8. कुल लागत तथा कुल बंधी लागत का अतंर क्या दर्शाता है? उत्पादन में वद्धि से कुल लागत में वद्धि क्यो होती है? चित्र की सहायता से समझाइए।

9. उत्पादन के शून्य स्तर पर कुल लागत की प्रकृति क्या होती है? अपने उत्तर का कारण भी दीजिए। क्या औसत बंधी लागत वक्र 'X' अक्ष या 'Y' अक्ष को छूता है? यदि नहीं तो क्यों?

10. अल्पकालीन सीमांत लागत की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। क्या बंधी लागत सीमांत लागत को प्रभावित करती है?

11. गणनात्मक उदाहरण की सहायता से कुल लागत तथा सीमांत लागत के संबंध का वर्णन कीजिए।

12. अल्पकालीन सीमांत लागत वक्र 'U' आकार का क्यों होता है?

13. औसत बंधी लागत की विशेषताओं की संक्षेप में व्याख्या कीजिए। जब सीमांत लागत घटती है क्या उस समय औसत लागत बढ़ सकती है?

14. औसत परिवर्ती लागत वक्र और औसत कुल लागत वक्र एक दूसरे के समीप आते हैं लेकिन एक दूसरे को नहीं काटते, वर्णन कीजिए।

15. अल्पकाल में औसत लागत वक्र 'U' आकार की क्यों होती है?

16. निम्न स्थितियों में कुल संप्राप्ति में किस प्रकार परिवर्तन होंगे जब–

    (क) सीमांत संप्राप्ति गिर रही हो लेकिन धनात्मक हो।
    (ख) सीमान्त संप्राप्ति शून्य हो।
    (ग) सीमांत संप्राप्ति ऋणात्मक हो।

17. सीमांत संप्राप्ति में क्या परिवर्तन होगें जब–

    (i) कुल संप्राप्ति बढ़ती दर से बढ़ती है।
    (ii) कुल संप्राप्ति घटना शुरु हो जाती है।
    (iii) कुल संप्राप्ति अधिकतम होती है।

18. सीमांत संप्राप्ति क्या है? उत्पाद के सभी स्तरों पर कीमत के स्थिर रहने पर सीमांत संप्राप्ति व औसत संप्राप्ति में क्या संबंध होता है।

19. जब अधिक बिक्री करने के लिए कीमत घटानी पड़ती है तब सीमांत संप्राप्ति कुल संप्राप्ति को किस प्रकार प्रभावित करती है?

20. कुल संप्राप्ति (TR), औसत संप्राप्ति (AR) तथा सीमांत संप्राप्ति (MR) को प्रदर्शित करने वाली एक ऐसी काल्पनिक तालिका का निर्माण कीजिए जिसमें मांग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा सतुलन कीमत का निर्धारण 10 रु॰ हो।

21. उत्पादक के सतुलन का क्या अर्थ है? उत्पादक के संतुलन की आवश्यक व पूरक शर्तो का उल्लेख कीजिए।

22. दी गई तालिका द्वारा ज्ञात कीजिए

(क) उत्पादक संतुलन पर उत्पादक का स्तर

(ख) उत्पादक स्तर का समस्तर बिंदु

(ग) हानि प्रदर्शित करता उत्पादन का स्तर

उत्पाद	0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
कुल लागत (TC)	5	15	22	27	31	38	49	63	80	101	123
कुल संप्राप्ति (TR)	0	10	20	30	40	50	60	70	80	90	100

23. उत्पाद का अधिकतम लाभ स्तर ज्ञात कीजिए

उत्पाद	1	2	3	4	5
औसत संप्राप्ति (AR)	10	9	8	7	6
औसत लागत (AC)	10	7	6	6	7

24. निम्न अनुसूची द्वारा उत्पादक के संतुलन स्तर को ज्ञात कीजिए तथा बताइए कि उत्पादन के स्तर पर फर्म सामान्य लाभ प्राप्त कर रही है।

उत्पाद	0	1	2	3	4	5	6	7
कीमत	11	10	9	8	7	6	5	4
सीमांत लागत (MC)	–	3	2	3	4	5	10	13
कुल बंधी लागत (TFC)	3	3	3	3	3	3	3	3

25. औसत परिवर्ती लागत (AVC) तथा सीमांत लागत की गणना कीजिए।

उत्पाद	0	1	2	3
कुल लागत (TC)	40	50	60	70

26. एक फर्म उत्पादन की 10 इकाइयों का उत्पादन कर रही है उत्पादन के इस स्तर पर औसत परिवर्ती लागत 18 रु॰ तथा औसत कुल लागत 20 रु॰ है तो कुल लागत, कुल बंधी लागत और कुल परिवर्ती लागत ज्ञात कीजिए।

27. निम्न तालिका को पूरा कीजिए।

उत्पाद	1	2	3	4	5
औसत संप्राप्ति	10	–	8	–	–
सीमांत संप्राप्ति	10	8	–	0	–
कुल संप्राप्ति	10	–	–	–	20

28. कुल उत्पाद तथा सीमांत उत्पाद ज्ञात कीजिए।

श्रम की ईकाई	1	2	3	4	5	6
औसत उत्पाद	2	3	4	4.25	3	3.5

29. निम्न सारिणी को पूरा कीजिए

औसत उत्पाद	0	–	–	22	–	20
सीमांत उत्पाद	–	–	22	–	–	–
कुल उत्पाद	0	20	–	–	88	–

30. पूर्ति के नियम की व्याख्या तालिका की सहायता से कीजिए।

31. बाजार पूर्ति से क्या अभिप्राय है इसके किन्हीं दो निर्धारकों की व्याख्या कीजिए।

32. पूर्ति में परिवर्तन एवं पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन में अंतर स्पष्ट कीजिये?

33. पूर्ति में वद्धि के प्रमुख कारक लिखकर किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए।

अथवा

पूर्ति वक्र में दाईं ओर खिसकाव के लिए उत्तरदायी कारकों की व्याख्या कीजिए।

34. तकनीक में होने वाले परिवर्तन का वस्तु की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

35. पूर्ति में संकुचन तथा पूर्ति में कमी के बीच अंतर कीजिए?

36. आगतों की कीमतों में होने वाले परिवर्तन का पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

37. पूर्ति की लोच से क्या अभिप्राय है? निम्न परिस्थितियों में पूर्ति की लोच क्या होगी।

(A) पूर्ति की मात्रा में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में प्रतिशत परिवर्तन से अधिक हो।

(B) कीमत के बढ़ने या घटने पर भी पूर्ति स्थिर रहे।

38. समय तत्व का पूर्ति की लोच पर क्या प्रभाव पड़ता है?

39. पूर्ति की लोच के प्रमुख निर्धारकों को लिखकर किन्हीं दो की व्याख्या कीजिए।

40. पूर्ति की लोच को मापने की ज्यामितिक विधि का उल्लेख कीजिए।

41. वस्तु की 400 रु. प्रति इकाई कीमत पर उत्पादक 1,000 इकाईयों की पूर्ति करता है यदि कीमत में 40% की कमी हो जाए तो बताइए पूर्ति में कितनी इकाईयों की वद्धि होगी? यदि पूर्ति की लोच 2 है।

42. किसी निश्चित कीमत पर उत्पादक वस्तु की 800 इकाईयों की पूर्ति करता है। कीमत में 5% की वद्धि से पूर्ति 120 इकाई बढ़ जाती है। पूर्ति की लोच ज्ञात कीजिए।

43. 80 रु प्रति इकाई कीमत पर उत्पादक 120 इकाईयों की पूर्ति करता है। यदि पूर्ति की लोच इकाई के बराबर हो तो बताइए वस्तु की 144 इकाईयां किस कीमत पर बेची जाएंगी?

44. कीमत में 5% कमी से पूर्ति 60 इकाई से बढ़कर 66 इकाई हो जाती है। पूर्ति की लोच ज्ञात कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बु(ि कौशलद्ध

45. निम्न आंकड़ों के आधार पर औसत उत्पाद और सीमांत उत्पाद के व्यवहार की व्याख्या कीजिए।

परिवर्ती कारक :	1	2	3	4	5	6	7
औसत उत्पाद :	20	25	30	30	28	25	22
सीमांत उत्पाद :	20	30	40	30	20	10	4

46. साधन (कारक) के सीमांत प्रतिफल किस कारण वर्धमान प्रतिफल से ह्रासमान प्रतिफल में बदल जाते हैं?

47. जब कुल संप्राप्ति वक्र मूल बिन्दु से होता हुआ धनात्मक ढलान वाला होता है तब औसत संप्राप्ति वक्र का आकार कैसा होगा? तालिका व रेखाचित्र द्वारा समझाइए।

48. कोई भी उत्पादन करने वाली फर्म दूसरी अवस्था में उत्पादन क्यों करना चाहेगी जबकि इस अवस्था में कुल भौतिक उत्पाद घटती दर से बढ़ रहा है या सीमांत भौतिक उत्पाद गिर रहा है?

49. कुल संप्राप्ति तथा सीमांत संप्राप्ति वक्रों की सहायता से इनके सम्बन्ध की व्याख्या कीजिए जबकि प्रति इकाई कीमत निरंतर घट रही हो।

50. निम्न कथन सही है या गलत — कारण बताइए

    (A) उत्पादक संतुलन की अवस्था में सीमांत लागत घटती हुई होगी।

    (B) AR वक्र MR वक्र के सदैव ऊपर रहता है।

51. निम्न कथन सही है या गलत, कारण दीजिए—

    (A) सीमांत संप्राप्ति घटते समय औसत संप्राप्ति से दुगनी दर से घटती है।

    (B) औसत लागत तभी घटती है जब सीमांत लागत उसे नीचे से काटती है।

52. निम्न कथन सत्य है या असत्य, कारण सहित समझाइए।

(A) कारक के घटते प्रतिफल तब लागू होते हैं जब औसत उत्पाद घटना प्रारम्भ कर देता है।

(B) AC तथा AVC वक्र एक दूसरे को कभी नहीं काटते।

53. पूर्ति वक्र पर बाईं ओर खिसकाव तथा पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर संचरण में क्या अंतर है?

54. व्याख्या कीजिए कि पूर्ति की मात्रा में परिवर्तन पूर्ति के नियम का स्पष्टीकरण है।

55. निम्न कथन सही है अथवा गलत, कारण सहित लिखिए।

(A) बाजार काल में पूर्ति में परिवर्तन संभव नहीं होता।

(B) भविष्य में कीमत वद्धि की संभावना वर्तमान में बाजार पूर्ति में वद्धि कर देती है।

6 अंकों वाले प्रश्न

1. जब केवल एक आगम (कारक) में वद्धि की जाती है तथा शेष आगत स्थिर रहते हैं तब उत्पाद पर क्या प्रभाव पड़ता है, वर्णन कीजिए।

2. संक्षेप में उस नियम की व्याख्या कीजिए जिसके अनुसार आगत में परिवर्तन होने के कारण उत्पादन में परिवर्तन होता है। तालिका के अनुसार कुल उत्पादन में परिवर्तन की विभिन्न अवस्थाओं को बताइए।

मजदूर इकाईयाँ	1	2	3	4	5	6
कुल उत्पादन इकाईयाँ	50	110	150	180	180	150

3. एक साधन के वर्धमान प्रतिफल क्या हैं? यह कैसे उत्पन्न होते हैं?

4. निम्न कथन सत्य हैं या असत्य, कारण सहित व्याख्या कीजिए।

(A) सीमांत उत्पाद वक्र के अन्तर्गत आने वाला कुल उत्पाद का क्षेत्र।

(B) जब औसत उत्पाद बढ़ रहा है और सीमांत उत्पाद घट रहा है।

(C) पहली इकाई उत्पाद की सीमांत लागत MC = AVC (औसत परिवर्ती लागत)।

5. बाजार पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारकों की व्याख्या कीजिए।

6. पूर्ति में वद्धि के प्रमुख कारकों की व्याख्या कीजिए।

7. पूर्ति वक्र में बाईं ओर खिसकाव के प्रमुख कारकों की व्याख्या कीजिए।

8. पूर्ति की लोच के मापन की ज्यामितिक विधि की व्याख्या रेखाचित्र की सहायता से कीजिए।

9. पूर्ति की लोच को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों का उल्लेख कीजिए।

10. कुल लागत तथा कुल सम्प्राप्ति विचारधारा के अनुसार रेखाचित्र का प्रयोग करते हुए उत्पादक संतुलन की व्याख्या कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

11. निम्नलिखित में अंतर कीजिए

    (A) पूर्णतया लोचदार व पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति।

    (B) इकाई से अधिक लोचदार व इकाई से कम लोचदार पूर्ति।

12. व्याख्या कीजिए :

    (A) पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक क्यों होता है?

    (B) कीमत घटने पर उत्पादक पूर्ति में कमी क्यों करता है?

    (C) पूर्ति की लोच पूर्ति के नियम का संख्यात्मक माप है।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. आगतों के निर्गतों (उत्पाद) में परिवर्तन को उत्पादन कहते है जिसका मौद्रिक मूल्य होता है।
2. अल्पकाल
3. श्रम विभाजन तथा कारकों के मध्य अच्छा समन्वय।
4. सीमांत उत्पादकता ऋणात्मक हो जाती है।
5. TP = AP × परिवर्ती कारक (श्रम)
6. उत्पादन फलन भौतिक आगतों व निर्गतो के बीच फलनात्मक संबंध को स्पष्ट करता है।
7. परिवर्ती अनुपात का नियम उत्पाद के व्यवहार का वर्णन करता है जब वस्तु के उत्पादन में प्रयुक्त एक आगत (कारक) में परिवर्तन किया जाता है जबकि अन्य आगतों को स्थिर रखा जाता है।
8. TP घटती दर से बढ़ता है।
9. MP भी गिरता है लेकिन तेज गति से गिरता है।
10. तीसरी अवस्था को ऋणात्मक प्रतिफल की अवस्था कहते है।
11. उल्टे 'U' के आकार वाला।
12. कारक आगतें – भूमि, श्रम, पूंजी, उद्यमी

    गैर कारक आगतें – कपड़ा, धागा, सुइँया आदि

13. $TP = \Sigma MP$ $\qquad$ $AP = TP/Q$

    $= 20 + 22$ $\qquad$ $= 42/2$

    $= 42$ इकाइयां $\qquad$ $= 21$ इकाइयां

14. किसी कार्य को विभिन्न प्रक्रियाओं में बांटकर उसे विभिन्न व्यक्तियों के बीच उनकी रुचि व योग्यताओं के अनुसार वितरित करना श्रम विभाजन कहलाता है।

15. उत्पादन के वे कारक जिन्हे अल्पावधि में परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

16. कुछ कारक जिन्हे अल्पावधि में आसानी से परिवर्तित किया जा सके, परिवर्ती कारक (साधन) कहते हैं।

17. जब सीमांत उत्पाद शून्य होता है।

18. सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

19. नहीं, ये कभी शून्य नहीं होते हैं।

20. लागत, स्पष्ट तथा अस्पष्ट लागतों का योग होती है।

21. वे भुगतान जो उत्पादक द्वारा बाह्य आगतों को प्रयोग करने पर उनके स्वामियों को किए जाते हैं।

22. उत्पादन के हर स्तर पर स्थिर रहती है। इसे बंधी (स्थिर) लागत भी कहते है।

23. अस्पष्ट लागते उत्पादक द्वारा उत्पादन में प्रयोग किए गए निजी साधनों की कीमत होती है।

24. कुल परिवर्ती लागत वक्र आरंभ में अवतल तथा बाद में उत्तल होता है।

25. $TVC = \Sigma MC$

26. हाँ

27. TC तथा TVC की लम्बवत दूरी TFC के बराबर होती है। जो प्रत्येक स्तर पर स्थिर रहती है।

28. TC और TFC

29. हाँ

30. MC = 25 रु॰

31. MC = 100 रु॰

32. TVC = 60 तथा AVC = 20

33. क्योंकि TFC कभी भी शून्य नहीं होती है।

34. $MC = TVC_n - TVC_{n-1}$ or $MC = \frac{\Delta TVC}{\Delta Q}$

35. धागे की रील, बटन, दुकान का किराया आदि

36. दूसरी अवस्था।

37. 2600 रु॰

38. 40 रु॰

39. उत्पाद की विक्री से प्राप्त मुद्रा को संप्राप्ति कहते है।

40. TR = कीमत × बेची गई इकाइयां

41. MR शून्य होगा

42. TR वक्र धनात्मक ढलान वाला सरल रेखीय होता है।

43. 28 रु॰

44. 6 रु॰

45. AR और MR दोनो कीमत के समान होते हैं तथा स्थिर रहते है।

46. 8 रु॰

47. MR हर समय स्थिर रहती है।

48. पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उस मात्रा से है जिसे कोई फर्म या विक्रेता कीमत के विभिन्न स्तरों पर बेचने के लिये तैयार है।

49. व्यक्तिगत पूर्ति अनुसूची कीमत के विभिन्न स्तरों पर एक उत्पाद की पूर्ति की विभिन्न मात्राओं को तालिका के रूप में प्रदर्शित करती है।

50. पूर्ति फलन किसी वस्तु की पूर्ति तथा उसके निर्धारकों के बीच फलनात्मक सम्बन्ध को बताता है।

51. (i) फर्मों की संख्या

(ii) तकनीकी परिवर्तन

52. पूर्ति में परिवर्तन कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन का परिणाम होता है।

53. कीमत में कमी के कारण।

54. कीमत में वद्धि के कारण।

55. कर की दरों में वद्धि से उत्पादन लागत में वद्धि होती है। परिणामतः उत्पादक के लाभ कम हो जाते हैं जिससे पूर्ति में कमी आती है।

56. कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब वस्तु की पूर्ति घट जाती है तो पूर्ति वक्र बाईं ओर खिसक जाता है।

57. आगतों की कीमत में कमी से उत्पादन लागत घटती है जिससे लाभ मार्जिन बढ़ने पर उत्पादक पूर्ति में वद्धि करता है।

58. कीमत व पूर्ति के धनात्मक सम्बन्ध के कारण पूर्ति वक्र का ढाल धनात्मक होता है।

59. पूर्ति की लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपातिक माप है।

60. पूर्णतया बेलोचदार पूर्ति।

61. कीमत में होने वाले अनुपातिक परिवर्तन के कारण पूर्ति में होने वाले परिवर्तन का अनुपात यदि समान हो तो पूर्ति इकाई के बराबर लोचदार होती है।

62. प्रकृति के आधार पर वस्तुओं को दो भागों में बांटा जाता है

    (A) टिकाऊ – लोचदार पूर्ति।

    (B) नाशवान – बेलोचदार पूर्ति।

63. पूर्णतया बेलोचदार

64. बेलोचदार पूर्ति

65. फर्मों की संख्या में वद्धि होने पर पूर्ति लोचदार हो जाती है और फर्मों की संख्या में कमी होने पर अपेक्षाकृत बेलोचदार।

66. किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जैसे (i) आगतों की कीमतों में कमी (ii) तकनीक में सुधार।

67. पूर्ति का नियम कीमत तथा पूर्ति के धनात्मक सम्बन्ध की व्याख्या करता है अर्थात यह स्पष्ट करता है कि ''अन्य कारकों के स्थिर रहने पर कीमत बढ़ने से पूर्ति बढ़ती है। कीमत घटने पर पूर्ति घट जाती है।

68. (i) दुर्लभ वस्तुएं

    (ii) बाजार काल

    (iii) प्राकृतिक कारक

69. अन्य कारकों के समान रहने पर कीमत में वद्धि के फलस्वरूप पूर्ति में विस्तार होता है।

70. उत्पादक संतुलन का अर्थ है जब उत्पादक अधिकतम लाभ अर्जित करता है अर्थात TR व TC का अंतर अधिकतम होता है और अतिरिक्त उत्पादन से लाभ में कमी आती है।

71. उत्पादक संतुलन की तीन शर्तें

    (i) कुल आगम व कुल लागत के बीच अन्तर अधिकतम होना चाहिए।

    (ii) अधिक उत्पादन करने पर लाभ कम होना चाहिए।

    (iii) TR और TC वक्र पर स्पर्शीरेखा समानान्तर होनी चाहिए।

72. दो शर्तें है :

    (i) MR और MC के बीच समानता आवश्यकीय शर्त है।

    (ii) सीमांत लागत वक्र (MC curve) संतुलन बिन्दु से बढ़ना चाहिए।

73. अधिकतम लाभ का अर्थ – TR और TC वक्र के बीच का अंतर अधिकतम होना चाहिए।

74. वह बिन्दु जहां TR = TC

75. TR व TC वक्र के बीच का अंतर अधिकतम होना एक आवश्यकीय शर्त है।

76. सामान्य लाभ : जब TR = TC हो और उद्योग में नई फर्म के आगमन तथा पुरानी फर्म के बर्हिगमन की प्रवत्ति न पाई जाए।

77. (i) TR और TC विधि

(ii) MR और MC विधि

HOTS ;उच्च स्तरीय बु(ि कौशलद्ध

78. AR से दोगुनी दर पर।

79. क्योंकि उत्पादन के सभी स्तरों पर कीमत स्थिर रहती है।

80. कुल संप्राप्ति कीमत रेखा के नीचे के क्षेत्रफल के बराबर होती है।

81. उत्पादक को उत्पादन बढ़ाना चाहिए।

82. उत्पादन के हर स्तर पर यह स्थिर रहता है।

83. इकाई से कम लोचदार या बेलोचदार

84. कीमत में कमी होने से उत्पादक के लाभ मार्जिन कम हो जाते हैं जिससे वह पूर्ति में कमी करता है। परिणामतः पूर्ति वक्र पर नीचे की ओर खिसकता है।

85. इकाई के बराबर लोचदार होगी।

86. कीमत के स्थिर रहने पर किसी अन्य कारक में परिवर्तन होने से जब पूर्ति में वद्धि हो जाती है।

87. कीमत बढ़ने पर उत्पादक के लाभ मार्जिन बढ़ जाते हैं अर्थात् कीमत व लागत का अंतर धनात्मक रूप में बढ़ जाता है जिससे उत्पादक पूर्ति में वद्धि करता है।

88. प्रतियोगी वस्तु की कीमत बढ़ने पर किसी वस्तु की पूर्ति कम हो जाएगी।

यूनिट 4

बाजार के प्रमुख रूप तथा पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण

स्मरणीय बिन्दु

- बाजार से अभिप्राय एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें एक वस्तु के क्रेता व विक्रेता वस्तु के क्रय व विक्रय हेतु एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं।

  फर्मों की संख्या के आधार पर, बाजार को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें से कुछ इस प्रकार है :

  - पूर्ण प्रतियोगिता
  - एकाधिकार बाजार
  - एकाधिकारी प्रतियोगिता
  - अल्पाधिकार

- पूर्ण प्रतियोगिता से अभिप्राय बाजार के उस स्वरूप से है जिसमें बहुत से विक्रेता अपनी समरूप वस्तुओं को एक समान कीमत पर बिना किसी प्रतियोगिता के ऐसे क्रेताओं को बेचते हैं जिन्हें बाजार का पूर्ण ज्ञान होता है।
- पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत स्थिर रहने के कारण औसत व सीमांत संप्राप्ति समान रहते हैं परिणामतः इनके वक्र OX अक्ष के समांतर होते हैं।
- पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत निर्धारण उद्योग (क्रेता–विक्रेताओं का समूह) द्वारा किया जाता है जो कि मांग एवं पूर्ति की शक्तियों से प्रभावित होता है। कोई भी व्यक्तिगत फर्म या उपभोक्ता वस्तु की कीमत या पूर्ति को प्रभावित नहीं कर पाते।
- **एकाधिकार बाजार :** यह बाजार का वह रूप है जिसमें वस्तु का अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है। वस्तु की निकटतम स्थान्नापन्न वस्तु का अभाव पाया जाता है।
- एकाधिकार बाजार में वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण होने के कारण विक्रेता स्वयं मांग की लोच के आधार पर अपनी वस्तु की कीमत तय करता है।
- एकाधिकार बाजार में फर्मों के निर्बाध प्रवेश पर प्रतिबंध के कारण फर्म को दीर्घकाल में भी असामान्य लाभ प्राप्त होते हैं।
- एकाधिकार बाजार में वस्तु की मांग इकाई से कम लोचदार होती है। अतः मांग वक्र का ढाल अत्यंत तीव्र होता है।
- वस्तु की प्रति इकाई कीमत स्थिर ना रहने के कारण एकाधिकार बाजार में औसत व सीमांत संप्राप्ति वक्र ऋणात्मक ढाल वाले होते हैं।

- **एकाधिकारी प्रतियोगिता :** यह बाजार की वह अवस्था है जिसमें फर्मों की अधिक संख्या होती है और सभी फर्में कड़े प्रतियोगी वातावरण में अपनी एक–दूसरे से भिन्न वस्तुओं को ऐसे क्रेताओं को बेचते हैं जिन्हें बाजार का अपूर्ण ज्ञान होता है।
- एकाधिकारी प्रतियोगिता में पूर्ति पर नियंत्रण के अभाव के कारण सभी फर्म एक–दूसरे की कीमत को ध्यान में रखकर अपनी वस्तु की कीमत निर्धारित करती हैं।
- एकाधिकारी प्रतियोगिता में वस्तु की मांग इकाई से अधिक लोचदार होने के कारण मांग वक्र अत्यंत सरल ढाल वाला होता है।
- अल्पाधिकार, बाजार का ऐसा स्वरूप है, जिसमें वस्तु के विक्रेता या उत्पादकों की संख्या दो से अधिक किंतु बहुत अधिक नहीं होती। सभी फर्में वस्तु की बाजार पूर्ति की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करती है।
- सभी फर्में समरूप अथवा विभेदात्मक वस्तुओं का उत्पादन करती हैं।
- अल्पाधिकार बाजार में फर्मों का प्रवेश असंभव नहीं परन्तु कठिन होता है।
- अल्पाधिकार बाजार में मांग वक्र अनिश्चित होता है।
- अल्पाधिकार बाजार में कीमत निर्धारण हेतु फर्मों में अन्तर्निर्भरता होती है।
- अल्पाधिकार को दो भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है :

  (i) शुद्ध अल्पाधिकार

  (ii) विभेदीकृत अल्पाधिकार
- शुद्ध अल्पाधिकार से अभिप्राय अल्पाधिकार के ऐसे स्वरूप से है जिसमें सभी फर्में समरूप वस्तु का उत्पादन करती है।
- विभेदीकृत अल्पाधिकार बाजार के अंतर्गत फर्में मिलती जुलती वस्तु का उत्पादन करती है जो एक दूसरे के निकटतम स्थानापन्न होती हैं।

पूर्ण प्रतियोगिता

- क्रेता–विक्रेताओं की बड़ी संख्या
- समरूप वस्तुएं
- कीमत स्थिरता
- बाजार का पूर्ण ज्ञान
- प्रतियोगिता का अभाव
- उद्योग द्वारा कीमत निर्धारण

एकाधिकार

- एक विक्रेता
- नई फर्मों का प्रवेश असंभव
- वस्तु का निकट स्थानापन्न नहीं
- वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण
- प्रतियोगिता का अभाव
- कीमत विभेदन
- कीमत निर्धारक

बाजार–संरचना

एकाधिकारिक प्रतियोगिता

- विक्रेताओं की अधिक संख्या
- फर्म का निर्बाध प्रवेश व बर्हिगमन
- वस्तु विभेद
- अपूर्ण ज्ञान
- साधनों की कम गतिशीलता
- बिक्री लागतें
- गलाकाट प्रतियोगिता

अल्पाधिकार

- चंद फर्में
- नई फर्मों का कठिन प्रवेश
- समरूप व विभेदीकृत उत्पाद
- कीमत व उत्पाद निर्धारण में अंतनिर्भरता
- कीमत कठोरता

एक अंक वाले प्रश्न

1. बाजार से क्या अभिप्राय है?
2. किस प्रतियोगिता में फर्म का मांग वक्र OX अक्षांश के समांतर होता है।
3. पूर्ण प्रतियोगीता में औसत व सीमांत संम्प्राप्ति वक्र समान क्यों होते हैं।
4. समरूप उत्पाद से क्या अभिप्राय है?
5. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत किस प्रकार निर्धारित होती है?
6. वस्तु विभेद से क्या अभिप्राय है?
7. पूर्ण व एकाधिकारी प्रतियोगिता में कौन सी विशेषताएं समान होती हैं।
8. एकाधिकार बाजार को परिभाषित कीजिए।
9. किस बाजार में फर्म व उद्योग के बीच अन्तर नहीं होता।
10. कीमत स्वीकारक फर्म में, बाजार कीमत तथा सीमांत सम्प्राप्ति में क्या संबंध पाया जाता है?
11. सामान्य लाभ क्या है?

12. असामान्य लाभ किसे कहते हैं?

13. एक नई फर्म उद्योग में शामिल होने के लिए क्यों प्रेरित होती है?

14. कीमत विभेद से क्या अभिप्राय है?

15. किस बाजार में कीमत–विभेद संभव है?

16. फर्मों की बड़ी संख्या, पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में कीमत निर्धारण में क्या भूमिका निभाती है?

17. किस प्रतियोगिता में फर्मों के निर्बाध प्रवेश पर प्रतिबंध होता है?

18. एकाधिकारी प्रतियोगिता में संतुलन स्तर पर कीमत और सीमांत लागत में क्या संबंध होता है?

19. अल्पाधिकार को परिभाषित कीजिए।

20. संतुलन कीमत को परिभाषित कीजिए।

21. संतुलन मात्रा से क्या अभिप्राय है?

22. आधिक्य पूर्ति की स्थिति कब जन्म लेती है?

23. एक उद्योग में फर्मों की संख्या पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि फर्में असामान्य लाभ अर्जित कर रही हैं?

24. यदि मांग पूर्णतया बेलोचदार है तो पूर्ति में कमी का साम्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

25. संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि मांग में वद्धि, पूर्ति में वद्धि से अधिक है?

26. किस स्थिति में मांग में वद्धि होने पर केवल संतुलन कीमत में परिवर्तन होता है संतुलन मात्रा अप्रभावित रहती है?

27. बाजार काल में मांग में कमी होने का संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

28. मांग तथा पूर्ति दोनों में एक साथ वद्धि होने पर किस स्थिति में संतुलन कीमत अप्रभावित रहती है?

29. यदि प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक है तो बाजार में फर्मों की संख्या पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा?

30. न्यूनतम कीमत से क्या अभिप्राय है?

HOTS ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

31. फर्म की वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण किस प्रतियोगिता में पाया जाता है?

32. एकाधिकारी प्रतियोगिता में औसत सम्प्राप्ति व मांग वक्र के बीच क्या संबंध होता है?

33. मांग की लोच के आधार पर पूर्ण प्रतियोगिता व एकाधिकार बाजार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

34. दीर्घकाल में भी किस प्रतियोगिता में असामान्य लाभ फर्म को प्राप्त होते हैं?

35. कीमत विभेद की नीति की सफलता, मांग की लोच पर किस प्रकार निर्भर करती है?

36. पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार का पूर्ण ज्ञान किस प्रकार कीमत को स्थिर बनाए रखता है?

37. मांग की लोच, एकाधिकार बाजार में कीमत निर्धारण की स्वतंत्रता को किस प्रकार नियंत्रित करती है?

38. एकाधिकार बाजार में सीमांत संप्राप्ति वक्र का ढाल ऋणात्मक क्यों होता है?

39. यदि प्रचलित कीमत, संतुलन कीमत से कम हो जाती है तो फर्मों की संख्या पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

40. एक प्रतियोगी फर्म की कीमत रेखा, लेटी रेखा क्यों होती है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में, संतुलन कीमत का निर्धारण किस प्रकार होता है? तालिका की सहायता से व्याख्या कीजिए।

2. संतुलन कीमत का निर्धारण वहाँ क्यों होता है जहाँ मांग और पूर्ति बराबर होते हैं? स्पष्ट कीजिए। वहाँ क्यों नहीं होता जहाँ मांग और पूर्ति बराबर नहीं होते।

3. मांग तथा पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ेगा, यदि बाजार में प्रचलित कीमत :

    (i) संतुलन कीमत से अधिक है (ii) संतुलन कीमत से कम है।

4. मांग तथा पूर्ति में एक साथ परिवर्तन होने पर भी संतुलन कीमत स्थिर रहती है। चित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

5. पूर्ण प्रतियोगी फर्म कीमत निर्धारक नहीं बल्कि कीमत स्वीकारक होती है। व्याख्या कीजिए।

6. नये पर्यावरण अधिनियम के अनुसार दवाइयों का उत्पाद करने वाली फर्में, पर्यावरण को दूषित करने वाली तकनीक के स्थान, पर्यावरण सहयोगी तकनीकी का प्रयोग कर रही है जिससे उनकी उत्पादन लागत पहले की तुलना में बढ़ गई है। स्पष्ट कीजिए इसका दवाई की कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

7. पूर्ण व एकाधिकारी प्रतियोगिता तथा एकाधिकार बाजार में निम्न आधार पर अंतर स्पष्ट कीजिए।

    (i) मांग की लोच

    (i) कीमत पर नियंत्रण

    (i) औसत आगम वक्र

8. एकाधिकार तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता की दो समान तथा दो असमान विशेषताएं लिखिए।

9. फर्मों के निर्बाध प्रवेश के कारण किस प्रकार एकाधिकारी प्रतियोगिता में दीर्घकाल में फर्म के असामान्य लाभ सामान्य लाभ में बदल जाते हैं?

10. आधिक्य मांग को चित्र की सहायता से समझाइये। यह स्थिति कब जन्म लेती है?

11. बाजार कीमत तथा संतुलन कीमत के संबंध की व्याख्या कीजिए।

12. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार तथा एकाधिकार बाजार में संतुलन स्तर पर, सीमांत लागत तथा कीमत में संबंध स्पष्ट कीजिए।

13. अल्पाधिकार बाजार, एकाधिकार बाजार से किस प्रकार भिन्न है?

14. एकाधिकार बाजार के गुण तथा दोषों की व्याख्या कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

15. निकटतम स्थानापन्न वस्तु की उपलब्धता किस प्रतियोगिता में पाई जाती है? यह कीमत पर क्या प्रभाव डालती है?

16. अल्पकाल में संतुलन कीमत के निर्धारण में पूर्ति की अपेक्षा मांग की भूमिका अधिक क्यों होती है?

17. किन स्थितियों में पूर्ति में होने वाला परिवर्तन सिर्फ संतुलन कीमत पर प्रभाव डालता है तथा संतुलन मात्रा अप्रभावित रहती है। चित्र सहित समझाइए।

18. अल्पाधिकार बाजार में प्रवेश कठिन क्यों है?

6 अंक वाले प्रश्न

1. पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार बाजार में औसत व सीमांत संप्राप्ति वक्रों की तुलना कीजिए।

2. एकाधिकार बाजार व एकाधिकारी प्रतियोगिता में अंतर कीजिए?

3. पूर्ति में परिवर्तन का संतुलन कीमत पर क्या प्रभाव पड़ेगा यदि–

    (A) मांग पूर्णतया बेलोचदार हो।

    (B) मांग पूर्णतया लोचदार हो।

4. पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

5. पूर्ति आधिक्य की स्थिति में प्रचलित कीमत को संतुलन कीमत क्यों नहीं माना जा सकता? बताइए कि इस स्थिति में पुनः संतुलन कीमत किस प्रकार निर्धारित होगी?

6. पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकारी प्रतियोगिता की दो समान व दो भिन्न विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

6. मांग में वद्धि का साम्य कीमत पर प्रभाव चित्र की सहायता से स्पष्ट कीजिए।

8. अल्पाधिकार बाजार की विशेषताएं स्पष्ट कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

9. मांग तथा पूर्ति वक्र का खिसकाव विपरीत दिशा में होने पर संतुलन कीमत तथा संतुलन उत्पाद किस प्रकार प्रभावित होते हैं?

10. मांग तथा पूर्ति में एक साथ कमी होने पर किस स्थिति में निम्न परिणाम प्राप्त होंगे।

   (i) साम्य कीमत में कोई परिवर्तन नहीं।

   (ii) संतुलन कीमत में कमी

   चित्रों की सहायता से व्याख्या कीजिए।

11. उन स्थितियों को चित्र की सहायता से समझाइए जब मांग व पूर्ति दोनों एक साथ परिवर्तन होने पर संतुलन कीमत बढ़ जाती है।

एक अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. बाजार से अभिप्राय ऐसी व्यवस्था से है जिसमें एक वस्तु के क्रेता–विक्रेता वस्तु के क्रय–विक्रय हेतु एक–दूसरे के संपर्क में रहते हैं।

2. पूर्ण प्रतियोगिता में

3. प्रति इकाई कीमत स्थिर रहने के कारण

4. जब सभी फर्मों द्वारा उत्पादित वस्तुएं एक दूसरे की पूर्ण स्थानापन्न हों अर्थात रंग, रूप, आकार, वजन पैकिंग आदि के आधार पर समान हो तो उन्हें समरूप उत्पाद कहा जाता है।

5. पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत, उद्योग द्वारा मांग एवं पूर्ति की शक्तियों के आधार पर निर्धारित की जाती है।

6. जब एक स्वभाव वाली वस्तुएं रंग, रूप, आकार, वजन, डिजाइन पैकिंग आदि में मामूली अंतर के कारण एक दूसरे से भिन्न होती हैं।

7. (i) फर्मों का निर्बाध प्रवेश व बहिर्गमन

   (ii) साधनों की पूर्ण गतिशीलता

8. बाजार का वह रूप जिसमें वस्तु का अकेला उत्पादक या विक्रेता होता है। वस्तु की निकटतम स्थान्नापन्न वस्तु का अभाव पाया जाता है।

9. पूर्ण प्रतियोगिता

10. दोनों बराबर होते हैं अर्थात्

    बाजार कीमत = सीमांत संप्राप्ति

11. यह वह न्यूनतम लाभ है जो फर्म को उद्योग में रहने के लिए आवश्यक है।

12. सामान्य लाभ से अधिक अर्जित लाभ को असामान्य लाभ कहते हैं।

13. असामान्य लाभ

14. कीमत विभेद विक्रय की ऐसी नीति है जिसके अंतर्गत विक्रेता एक ही स्वभाव वाली वस्तुओं को विभिन्न क्रेताओं को अलग–अलग कीमतों पर बेचता है।

15. एकाधिकार बाजार।

16. फर्मों की अधिक संख्या के कारण कीमत निर्धारण की पूर्ण स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है जिससे प्रत्येक फर्म अपनी वस्तु की कीमत अन्य फर्मों की कीमतो को ध्यान में रखकर निर्धारित करती है।

17. एकाधिकार बाजार।

18. विपरीत समबन्ध होता है।

19. अल्पाधिकार वह बाजार है जिसमें वस्तु के विक्रेता या उत्पादकों की संख्या दो से अधिक किंतु बहुत अधिक नहीं होती और सभी फर्में समरूप या विभेदात्मक वस्तुओं का उत्पादन करती है।

20. जिस कीमत पर वस्तु की मांग तथा पूर्ति समान होती है।

21. वस्तु की वह मात्रा जिसे संतुलन कीमत पर खरीदा व बेचा जाता है

22. जब वस्तु की प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक हो जाए।

23. फर्मों की संख्या अधिक हो जाएगी।

24. संतुलन कीमत पूर्ववत रहेगी।

25. मांग में वद्धि, पूर्ति में वद्धि से अधिक होने पर संतुलन कीमत घट जायेगी।

26. जब मांग पूर्णतया बेलोचदार हो।

27. बाजार काल में मांग में कमी होने पर संतुलन कीमत कम हो जाएगी।

28. मांग तथा पूर्ति दोनों में एक समान वद्धि की स्थिति में संतुलन कीमत अप्रभावित रहेगी।

29. यदि प्रचलित कीमत संतुलन कीमत से अधिक है तो बाजार में फर्मों की संख्या बढ़ जाएगी।

30. न्यूनतम मूल्य वह कीमत है जो सरकार द्वारा तय की जाती है। ताकि उत्पादकों को उनके उत्पादन का उचित मूल्य प्राप्त हो सके।

31. एकाधिकार बाजार।

32. दोनों ऋणात्मक ढाल वाले होते हैं।

33. (i) पूर्ण प्रतियोगिता – पूर्णतया लोचदार

    (ii) एकाधिकार – ईकाई से कम लोचदार

34. एकाधिकार बाजार।

35. जिस उपभोक्ता के लिए वस्तु की मांग बेलोचदार है एकाधिकारी उसे वस्तु ऊँची कीमत पर बेचेगा इसके विपरीत जिस क्रेता के लिए मांग लोचदार है एकाधिकारी उसके लिए वस्तु की कीमत तुलनात्मक रूप से कम निर्धारित करेगा।

36. पूर्ण प्रतियोगिता में यदि कोई फर्म उद्योग द्वारा निर्धारित कीमत से अधिक कीमत तय करती है तो बाजार का पूर्ण ज्ञान होने के कारण उपभोक्ता वस्तु को अन्य फर्मों से खरीदने लगेंगे।

37. एकाधिकारी प्रतियोगिता में फर्म की वस्तु की मांग, इकाई से अधिक लोचदार होने के कारण कीमत में की गई मामूली सी वद्धि मांग को तुलनात्मक रूप में अधिक कम कर सकती है।

38. वस्तु की अधिकाधिक मात्रा बेचने पर प्रति इकाई कीमत घटती चली जाती है जिससे एकाधिकार बाजार में सीमान्त संप्राप्ति वक्र का ढाल ऋणात्मक हो जाता है।

39. फर्मों की संख्या कम हो जायेगी।

40. वस्तु की प्रति इकाई कीमत स्थिर होने के कारण फर्म दी हुई कीमत पर जितना चाहे उत्पाद बेच सकती है।

यूनिट 5

मांग और पूर्ति वक्रों के उपकरणों का सरल अनुप्रयोग

स्मरणीय बिंदु

- वक्रों के माध्यम से ऐसे चरों का अध्ययन किया जाता है जो परस्पर ऋणात्मक या धनात्मक रूप से संबंधित होते हैं।
- चर दो प्रकार के होते हैं – स्वतंत्र चर और आश्रित चर।
- साधारणतया स्वतंत्र चरों को OY अक्ष पर तथा आश्रित चरों को OX अक्ष पर निरूपित किया जाता है।
- वक्र बनाते समय OY तथा OX अक्ष पर संख्यात्मक तथ्यों का प्रदर्शन (निरूपण) एक उचित अनुपात में ही करना चाहिए।
- जिन संबंधों को मौखिक तर्कों द्वारा समझना कठिन होता है उन्हें वक्रों द्वारा सरलता से समझा जा सकता है तथा वक्रों का प्रभाव मस्तिष्क पर लम्बे समय तक रहता है।
- अर्थशास्त्र में मांग तथा पूर्ति वक्रों का प्रयोग मुख्य रूप से निम्न तथ्यों के प्रस्तुतीकरण के लिए किया जाता है–
  - (क) मांग व पूर्ति संबंधी तथ्यों के प्रस्तुतीकरण हेतु।
  - (ख) विभिन्न आर्थिक क्रियाओं के मध्य संतुलन स्थापित करने में।
  - (ग) मांग और पूर्ति में होने वाले परिवर्तनों का विभिन्न स्थितियों में संतुलन व बाजार कीमत पर पड़ने वाले प्रभाव के प्रदर्शन हेतु।
  - (घ) मांग तथा पूर्ति की लोच की विभिन्न श्रेणियों के चित्रमय प्रदर्शन हेतु।
  - (ङ) मांग आधिक्य व पूर्ति आधिक्य की स्थितियों में न्यूनतम व उच्चतम कीमत के निर्धारण की व्याख्या हेतु।
- व्यावहारिक जीवन में भी वक्रों का महत्त्व कम नहीं है जैसे मांग वक्र द्वारा सरकार "उच्चतम कीमत सीमा" और "न्यूनतम कीमत सीमा" का निर्धारण करती है।
- सरकार मांग तथा पूर्ति की लोच के अध्ययन से करों का निर्धारण करती है।
- मांग व पूर्ति वक्र कर की दरों में होने वाली वद्धि या कमी के वस्तुओं की मांग और पूर्ति पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या में सहायक होते हैं।
- मांग तथा पूर्ति वक्र विभिन्न संतुलनों की सरल व्याख्या करते हैं –
  - (क) ब्याज दर (मुद्रा की मांग व पूर्ति)
  - (ख) मजदूरी की दर (श्रम की मांग व पूर्ति)
  - (ग) कारकों की कीमत निर्धारण
  - (घ) विदेशी विनिमय दर का निर्धारण
  - (ङ) लगान के निर्धारण हेतु
  - (छ) उपभोक्ता की बचत।
  - (ज) कर निर्धारण में

यूनिट 6

राष्ट्रीय आय एवं संब(समाहार

स्मरणीय बिंदु

- **चक्रीय प्रवाह :** अर्थव्यवस्था में विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक पारस्परिक अंतरनिर्भरता पाई जाती है जो आय के चक्रीय प्रवाह को जन्म देती है। आय और उत्पाद का चक्रीय प्रवाह यह स्पष्ट करता है कि अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मौद्रिक आय या वस्तुओं व सेवाओं का प्रवाह चक्रीय रूप में होता है।
- **उत्पादन :** उत्पादन एक मानवीय प्रयास है जिससे ऐसे भौतिक (वस्तुएं) या अभौतिक (सेवाएं) पदार्थों का निर्माण होता है जिनमें मानवीय आवश्यकता की पूर्ति की उपयोगिता हो और जिनका निश्चित मौद्रिक मूल्य हो।
- **अंतिम वस्तुएं :** वे वस्तुएं जो उपभोग व निवेश के लिए उपलब्ध होती है, अंतिम वस्तुएं कहलाती है। इनका पुनः विक्रय नहीं होता। इनका प्रयोग अंतिम उपभोग के लिए किया जाता है, इसलिए इन्हें अंतिम वस्तुएं कहा जाता है।
- अंतिम वस्तुएं या तो उपभोग वस्तुओं के रूप में या पूंजीगत वस्तुओं के रूप में होती है।
- **उपभोक्ता वस्तुए :** वे अंतिम वस्तुएं जो मानवीय इच्छाओं की पूर्ति के लिए अंतिम उपभोक्ताओं द्वारा क्रय की जाती है। इनमें सेवाएं भी सम्मिलित हैं।
- **पूंजीगत वस्तुएं :** ये वे अंतिम वस्तुएं हैं जो उत्पादन में सहायक हैं। ये वस्तुएं आय सजन के लिए प्रयोग की जाती है।
- **मध्यवर्ती वस्तुएं :** ये वे वस्तुऐं हैं जिनकी पुनः बिक्री की जा सकती है, ये प्रत्यक्ष रूप से मानवीय आवश्यकता को पूरा नहीं करती बल्कि अंतिम वस्तुओं के उत्पादन में प्रयोग की जाती है।
- **निवेश :** एक निश्चित समय में, पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में वद्धि निवेश कहलाता है। इसे पूंजी निर्माण भी कहते हैं।
- **सकल निवेश :** एक निश्चित अवधि काल में पूंजीगत वस्तुओं के स्टाक में कुल वद्धि, सकल निवेश कहलाता है।

  सकल निवेश = निवल निवेश + घिसावट।
- **निवल निवेश :** एक अर्थव्यवस्था में पूंजीगत वस्तुओं में नए योग का माप या नई पूंजी रचना निवल निवेश कहलाता है।

  निवल निवेश = सकल निवेश – घिसावट
- **मूल्यहास (घिसावट) :** सामान्य टूट–फूट या प्रत्याशित अप्रचलन के कारण अचल परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट को मूल्यहास या अचल पूंजी का उपभोग कहते हैं।
- **पूंजीगत हानि :** अप्रत्याशित अप्रचलन और प्राकृतिक विपत्तियों के कारण, अचल परिसंपत्तियों के मूल्य में गिरावट पूंजीगत हानि कहलाती है।
- **आर्थिक सीमा :** यह सरकार द्वारा प्रशासित वह भौगोलिक परिसीमा है जिसमें व्यक्ति वस्तु व पूंजी का स्वतंत्र प्रवाह होता है। यह निम्न आधार पर तय की जाती है।

(i) राजनैतिक, समुद्री तथा हवाई सीमा।

(ii) विदेशों में स्थित दूतावास, वाणिज्य दूतावास सैनिक प्रतिष्ठान, राजनायिक भवन आदि, ऐसे ही विभाग जो विदेशी सरकारों द्वारा संचालित हैं किन्तु घरेलू आर्थिक सीमा में स्थित है उन्हें छोड़कर।

(iii) जहाज तथा वायुयान जो दो देशों के बीच आपसी सहमति से चलाए जा रहे हैं।

- **निवासी :** किसी देश का सामान्य निवासी उस व्यक्ति या संस्था को माना जाता है जिसके आर्थिक हित उसी देश की आर्थिक सीमा में केन्द्रित हों जिसमें वह रहता है।

- **देशीय आय :** यह एक वर्ष में कारकों के स्वामियों द्वारा देशीय सीमा के अंतर्गत अर्जित की गई आय है जो वे उत्पादन कार्यों में अपनी कारक सेवाएं प्रदान करके अर्जित करते हैं।

  देशीय आय = राष्ट्रीय आय – निवल विदेशी कारक आय

  राष्ट्रीय आय = देशीय कारक आय + निवल विदेशी कारक आय

- **राष्ट्रीय आय :** यह एक लेखा वर्ष में एक देश के सामान्य निवासियों को प्राप्त होने वाली कारक आय का योग होती है।

- **मौद्रिक या प्रचलित कीमतों पर राष्ट्रीय आय :** यह एक देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में उत्पादित किए गए अंतिम उत्पाद का प्रचलित मूल्य होता है। इसकी गणना के लिए वर्तमान वर्ष के अंतिम उत्पाद को वर्तमान वर्ष की कीमतों से गुणा किया जाता है।

- **स्थिर कीमतों पर राष्ट्रीय आय :** इसे वास्तविक आय भी कहा जाता है। यह किसी देश के सामान्य निवासियों द्वारा एक वर्ष में उत्पादित अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के स्थिर मूल्यों का योग होता है। इसकी गणना के लिए एक लेखा वर्ष के अंतिम उत्पाद को आधार वर्ष की कीमतों से गुणा किया जाता है।

- **उत्पादन का मूल्य :** एक उत्पादन इकाई द्वारा एक लेखा वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं एवं सेवाओं का बाजार मूल्य उत्पादन का मूल्य कहलाता है।

- **वर्द्धित मूल्य (मूल्य वद्धि) :** किसी उत्पादन इकाई के निश्चित समय में किए गए उत्पादन के मूल्य तथा प्रयुक्त अंतर्वर्ती (मध्यवर्ती) उपभोग के मूल्य का अंतर वर्द्धित मूल्य कहलाता है।

- **दोहरी गणना :** राष्ट्रीय आय का आंकलन करते समय जब किसी मद का मूल्य एक से अधिक बार शामिल कर लिया जाए तो इसे दोहरी गणना कहा जाता है। इस समस्या के समाधान हेतु दो उपाय अपनाने चाहिए–

  (क) अंतिम उत्पाद विधि का प्रयोग

  (ख) वर्द्धित मूल्य विधि।

- **राष्ट्रीय आय आंकलन की आय विधि :** यह राष्ट्रीय आय मापन की ऐसी विधि है जिसमें उत्पादन के अनिवार्य कारकों द्वारा उत्पादन कार्यों में प्रदत्त कारक सेवाओं के प्रतिफल रूप में अर्जित मजदूरी, लगान, ब्याज तथा लाभ को जोड़ा जाता है। इसके निम्न घटक हैं–

  (क) कर्मचारियों का पारिश्रमिक

(ख) प्रचालन अधिशेष (सम्पत्ति व उद्यमवति से आय)

(ग) स्वनियुक्तों की मिश्रित आय

(घ) विदेशों से शुद्ध कारक आय।

- **राष्ट्रीय आय आंकलन की व्यय विधि :** इस विधि में राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाने के लिए एक वित्तिय वर्ष में बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद पर किए गए अंतिम व्यय को मापा जाता है। अर्थात एक वर्ष में अंतिम उपभोग व निवेश पर किए गए अंतिम व्यय को जोड़कर राष्ट्रीय आय का अनुमान लगाया जाता है।

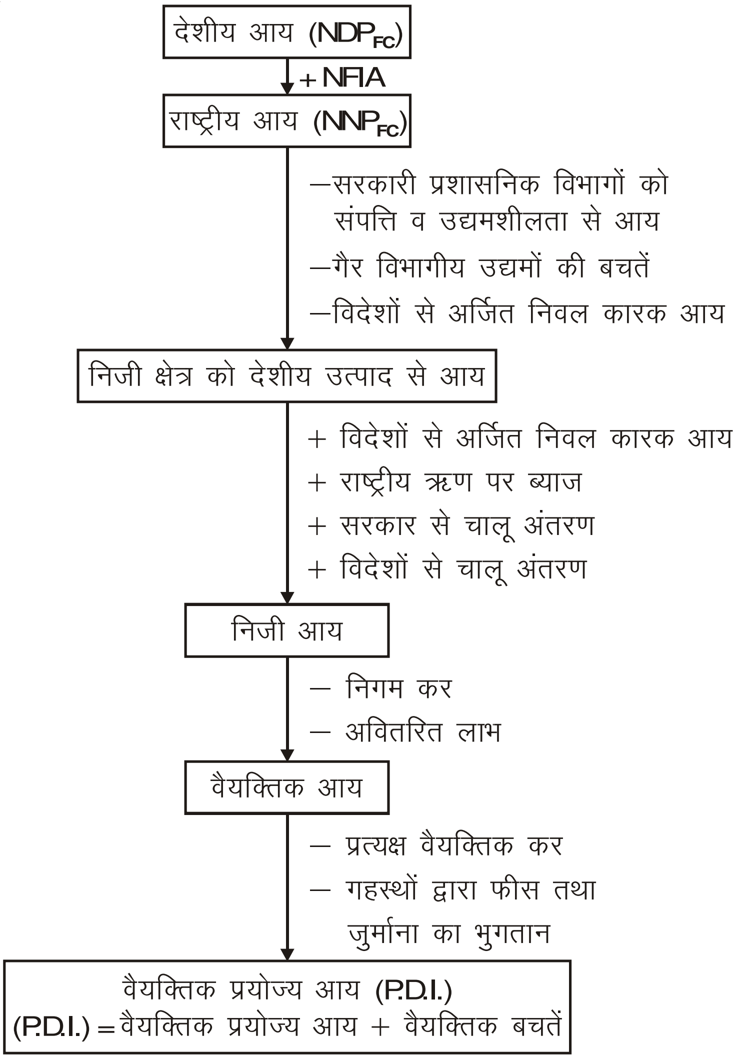

राष्ट्रीय आय से वैयक्तिक प्रयोज्य आय की गणना

वैयक्तिक प्रयोज्य आय (P.D.I.)
अथवा
व्यैक्तिक उपभोग व्यय + वैयक्तिक बचतें

↓ + प्रत्यक्ष वैयक्तिक कर
+ गहस्थों द्वारा फीस तथा जुर्माना का भुगतान

वैयक्तिक आय

↓ + निगम कर
+ अवितरित लाभ

निजी आय

↓ – विदेशों से अर्जित शुद्ध आय
– राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज
– सरकार से चालू अंतरण
– विदेशों से चालू अंतरण

निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से आय

↓ – सरकारी प्रशासनिक विभागों को संपति व उद्यमशीलता से प्राप्त आय
– गैर विभागीय उद्यमों की बचतें
– विदेशों से अर्जित शुद्ध आय

घरेलू आय (NDP_{FC})

↓ + NFIA

राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

एक क्षेत्र या एक फर्म की वर्धित मूल्य (मूल्य वद्धि) की अवधारणा

1. उत्पादन का मूल्य ⇒ बिक्री + स्टाक में वद्धि

   बिक्री – स्टाक में कमी।

2. बाजार लागत पर सकल मूल्य वद्धि (GVA_{MP}) ⇒ उत्पादन का मूल्य – मध्यवर्ती उपभोग

3. बाजार लागत पर निवल मूल्य वद्धि (NVA_{MP}) ⇒ बाजार लागत पर सकल मूल्य वद्धि – घिसावट

4. कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि (NVA_{FC}) ⇒ बाजार लागत पर निवल मूल्य वद्धि – निवल अप्रत्यक्ष कर

नोट : सभी क्षेत्रों की साधन लागत पर निवल मूल्य वद्धि जोड़ने पर कारक लागत पर देशीय उत्पाद प्राप्त होता है। उत्पादन प्रक्रिया में सभी कारकों द्वारा आय का सजन ही कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि कहलाता है। सजित

आय सभी कारकों/साधनों को साधन भुगतान के रूप में जैसे कर्मचारियों का पारिश्रमिक, किराया, ब्याज व लाभ के रूप में वितरित की जाती है। इसीलिए कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि = कारक आय का जोड़।

अंतिम व्यय के घटक (GDP_{MP})

- अंतिम उपभोग व्यय
  - निजी अंतिम उपभोग व्यय
  - सार्वजनिक अंतिम उपभोग व्यय
- सकल देशीय पूंजी निर्माण
  - सकल देशीय स्थायी पूंजी निर्माण
  - स्टाक में परिवर्तन
    - अंतिम स्टाक – आरम्भिक स्टाक
- वस्तुओं व सेवाओं का निवल निर्यात
  - निर्यात – आयात

कारक लागत पर निवल देशीय आय (NDP_{FC})

- कर्मचारियों का पारिश्रमिक
- किराया + ब्याज + लाभ
- स्वनियोजितों की मिश्रित आय

राष्ट्रीय आय (NNP_{FC})

- उत्पादन विधि → कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि →
  प्राथमिक क्षेत्र द्वारा मूल्य वद्धि
  + द्वितीयक क्षेत्र द्वारा मूल्य वद्धि
  + ततीयक क्षेत्र द्वारा मूल्य वद्धि
  + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय
- आय विधि → कारक भुगतानों का जोड़ →
  कर्मचारियों का पारिश्रमिक
  + किराया + ब्याज + लाभ
  + मिश्रित आय
  + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय
- व्यय विधि → अंतिम व्यय का जोड़ →
  निजी अंतिम उपभोग व्यय
  + सार्वजनिक अंतिम उपभोग व्यय
  + सकल देशीय पूंजी निर्माण
  + निवल निर्यात
  – निवल अप्रत्यक्ष कर
  + विदेशों से अर्जित निवल कारक आय

1 अंक वाले प्रश्न

1. व्यष्टि तथा समष्टि अर्थशास्त्र में कोई एक अन्तर लिखिए।
2. निवल निर्यात से क्या अभिप्राय है?
3. मध्यवर्ती उपभोग को एक उदाहरण की सहायता से परिभाषित कीजिए।
4. प्रचलित हस्तांतरण को परिभाषित कीजिए।
5. वास्तविक प्रतिव्यक्ति आय से क्या अभिप्राय है?
6. राष्ट्रीय आय से राष्ट्रीय प्रयोज्य आय ज्ञात करने के लिए क्या शामिल किया जाना चाहिए।
7. निवल देशीय उत्पाद कब निवल राष्ट्रीय उत्पाद से अधिक होता है?
8. किसी देश का सामान्य निवासी किसे माना जाता है?
9. आर्थिक सीमा से क्या अभिप्राय है?
10. विदेशों से निवल कारक आय से क्या अभिप्राय है?
11. निजी आय ज्ञात करने के लिए निजी क्षेत्र को देशीय उत्पाद से प्राप्त आय में से किन दो मदों को घटाया जाता है?
12. निजी आय की गणना करने हेतु वैयक्तिक आय में किन दो मदों को शामिल किया जाता है?
13. बाजार कीमत पर निवल देशीय उत्पाद किस स्थिति में कारक लागत पर निवल देशीय उत्पाद से कम होता है?
14. सकल स्थिर पूंजी निर्माण से क्या अभिप्राय है?
15. स्थिर पूंजी के उपभोग का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
16. निम्न मदों को मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं में वर्गीकृत कीजिए।
    (i) होटल द्वारा भोजन सामग्री का क्रय
    (ii) प्रकाशक द्वारा कागज की खरीद
    (iii) गहस्थों द्वारा दूध की खरीद
    (iv) मशीनरी व अन्य उपकरणों की खरीद
17. आय के प्रवाह में क्षरण से क्या अभिप्राय है?
18. भरण का अर्थ एक उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए।
19. चक्रीय प्रवाह की अवधारणा को परिभाषित कीजिए।
20. निम्न को स्टॉक तथा प्रवाह के रूप में वर्गीकृत कीजिए।

(i) गहस्थ की आय

(ii) गहस्थ का उपभोग व्यय

21. मौद्रिक GNP को परिभाषित कीजिए।

22. स्टॉक को परिभाषित कीजिए।

23. वास्तविक GNP को परिभाषित कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

24. शेयरों की बिक्री से प्राप्त राशि को देशीय कारक आय में शामिल क्यों नहीं किया जाता।

25. अर्थव्यवस्था में सभी उत्पादकों द्वारा की गई निवल मूल्य वद्धि को जोड़ने पर क्या प्राप्त होता है?

26. कीमतों में होने वाली वद्धि का राष्ट्रीय आय पर क्या प्रभाव पड़ता है?

27. स्वउपभोग के लिए उत्पादित सेवाओं से क्या अभिप्राय है? इन्हें राष्ट्रीय आय में शामिल क्यों नहीं किया जाता?

28. मूल्य वद्धि विधि किस प्रकार दोहरी गणना की समस्या का समाधान करती है?

29. राष्ट्र की मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन को प्रवाह क्यों माना जाता है?

30. अर्थशास्त्र की उस शाखा का नाम लिखें जो राष्ट्रीय आय, रोजगार तथा सामान्य कीमत स्तर का अध्ययन करती है।

31. NVA_{FC} तथा NVA_{mp} में से किसका योग साधन आय के बराबर होता है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. विदेशों से निवल कारक आय से क्या अभिप्राय है? इसके प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।
2. स्वउपभोग के लिए उत्पादन तथा विनिमय के लिए उत्पादन के बीच अंतर कीजिए।
3. किसी देश की देशीय सीमा का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
4. शुद्ध अप्रत्यक्ष कर का अर्थ स्पष्ट कीजिए। अप्रत्यक्ष कर व आर्थिक सहायता का राष्ट्रीय आय पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. मध्यवर्ती तथा अंतिम वस्तुओं के बीच किस आधार पर अंतर किया जाता है?
6. बाजार कीमत पर सकल देशीय उत्पाद तथा राष्ट्रीय आय (NNP_{FC}) के बीच अंतर कीजिए।
7. कारक आय तथा हस्तांतरण आय के बीच अंतर कीजिए?
8. राष्ट्रीय प्रयोज्य आय को परिभाषित कीजिए। इसकी गणना किस प्रकार की जाती है?
9. निम्नलिखित में से किसे सामान्य निवासी के लिए विदेशों से प्राप्त कारक आय माना जाएगा? कारण लिखिए।

   (i) अमरीका में संचालित एक कम्पनी के बाण्डस पर भारतीय निवासी को प्राप्त ब्याज।

(ii) अनिवासी भारतीय द्वारा अपने परिवार को भेजा गया धन।

10. निम्न को स्टॉक तथा प्रवाह में वर्गीकृत कीजिए।

(i) राष्ट्रीय पूंजी	(ii) निर्यात
(iii) भारत की जनसंख्या	(iv) निवेश
(v) गहस्थ द्वारा भोजन पर व्यय	(vi) बैंक के बचत खातों में जमाएं

11. द्विक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में आय के चक्रीय प्रवाह को समझाइए।

12. उत्पाद विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय के मापन में रखी जाने वाली सावधानियों का उल्लेख कीजिए।

13. सामान्य निवासी से क्या अभिप्राय है? निम्नलिखित में से स्पष्ट कीजिए कि किसे भारत का सामान्य निवासी माना जाएगा।

(i) भारत स्थित विश्व स्वास्थ्य संगठन के ऑफिस में अस्थायी तौर पर तीन महीने के लिए कार्यरत एक अमरीकी।

(ii) अमरीकी दूतावास जो कि भारत में स्थित है उसमें कार्यरत भारतीय।

14. सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय से क्या अभिप्राय है? यह राष्ट्रीय आय से किस प्रकार भिन्न है?

15. निवल निर्यात तथा विदेशों से निवल कारक आय के बीच अंतर कीजिए।

HOTS ;उच्च स्तरीय बु(कौशलद्ध

16. स्पष्ट कीजिए कि कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि का योग कारक आय के बराबर होता है।

17. किन परिस्थितियों में वास्तविक मौद्रिक GDP से मौद्रिक GDP कम होता है?

18. स्वउपभोग के लिए उत्पादन का मूल्य शामिल करते समय सिर्फ स्वउपभोग के लिए उत्पादित वस्तुओं का मूल्य शामिल किया जाता है। स्वउपभोग के लिए उत्पादित सेवाओं का नहीं क्यों? व्याख्या कीजिए।

19. किन परिस्थितियों में राष्ट्रीय प्रयोज्य आय राष्ट्रीय आय से अधिक होती है?

20. आर्थिक कल्याण से क्या अभिप्राय है? क्या राष्ट्रीय आय में वद्धि होने से आर्थिक कल्याण में वद्धि होती है?

6 अंक वाले प्रश्न

1. राष्ट्रीय आय की गणना करते समय ''दोहरी गणना की समस्या'' का एक उदाहरा की सहायता से व्याख्या कीजिए। इस समस्या से किस प्रकार बचा जा सकता है।

2. आय के चक्रीय प्रवाह में धारण तथा भरण की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। आय का चक्रीय प्रवाह किस प्रकार प्रभावित होगा यदि :

(i) निवेश बचत से अधिक है।

(ii) आयात निर्यातों से अधिक है।

3. राष्ट्रीय आय के मापन की मूल्य वद्धि विधि की व्याख्या एक उदाहरण की सहायता से कीजिए।

4. आय विधि के अनुसार राष्ट्रीय आय के मापन के प्रमुख चरणों की व्याख्या कीजिए।

5. प्रचालन अधिशेष को परिभाषित कीजिए। इसके प्रमुख घटकों की व्याख्या कीजिए।

6. सकल देशीय उत्पाद पर किए गए अंतिम व्यय की गणना करते समय रखी जाने वाली प्रमुख सावधानियां लिखिए।

7. किस प्रकार आप वैयक्तिक आय से राष्ट्रीय आय की गणना कर सकते हैं?

8. विदेशों से अर्जित निवल कारक आय (NFIA) क्या है? इसके घटकों की व्याख्या कीजिए।

HOTS

9. निम्न को भारत की देशीय कारक आय में शामिल किया जाएगा अथवा नहीं। कारण सहित लिखिए।

(i) सिंगापुर में स्थिति भारतीय कम्पनी में कार्यरत अनिवासी भारतीय को दिया गया वेतन।

(ii) भारतीय दूतावास में कार्यरत अनिवासी को दिया गया वेतन

(iii) अनिवासी द्वारा भारत में संचालित कम्पनी का लाभ।

10. क्या निम्न को सकल राष्ट्रीय उत्पाद में शामिल किया जाएगा अथवा नहीं। कारण सहित लिखिए।

(i) विदेशी कम्पनी द्वारा भारत में कमाया गया लाभ

(ii) अमरीका में स्थित भारतीय दूतावास में कार्यरत अमरीकी को दिया गया वेतन

(iii) देशीय फर्म के नए शेयरों की खरीद

11. निम्न को देशीय आय में शामिल किया जाएगा अथवा राष्ट्रीय आय में कारण सहित लिखिए।

(i) भारत स्थित विदेशी दूतावास से भारतीय निवासी को प्राप्त किराया

(ii) विदेशी विशेषज्ञ को दी गयी परामर्श फीस

(iii) विदेशी बैंक की भारत स्थित शाखा का लाभ

12. निम्न को कारण स्पष्ट करते हुए हस्तांतरण भुगतान तथा साधन भुगतान में वर्गीकृत कीजिए।

(i) बाढ पीडितों को आर्थिक सहायता

(ii) वद्धावस्था पैंशन

(iii) आरोपित किराया

अभ्यास के लिए संख्यात्मक प्रश्न

प्र.1. निम्न तथ्यों की सहायता से फर्म A तथा B की मूल्य वद्धि (वर्द्धित मूल्य) ज्ञात कीजिए–

		(लाख रूपयों में)
(i)	फर्म A का अंतिम स्टॉक	20
(ii)	फर्म B का अंतिम स्टॉक	15
(iii)	फर्म A प्रारंभिक स्टॉक	5
(iv)	फर्म B का अंतिम स्टॉक	10
(v)	फर्म A की बिक्री	300
(vi)	फर्मं A द्वारा फर्म B से क्रय	100
(vii)	फर्म B द्वारा फर्म A से खरीद	80
(viii)	B की देशीय बिक्री	250
(ix)	फर्म A द्वारा कच्चे माल का आयात	50
(x)	फर्म B द्वारा निर्यात	30

उत्तर A की मूल्य वद्धि = 165 लाख रू.

B की मूल्य वद्धि = 205 लाख रू.

प्र.2. एक काल्पनिक अर्थव्यवस्था में निम्न संव्यवहारों के आधार पर राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात करें, A, B व C फर्म की मूल्यवद्धि की सहायता से।

(i) फर्म A ने 300 रू. का माल फर्म B को तथा 200 रु. का माल फर्म C को बेचा।

(ii) फर्म B ने 100 रु. का माल निजी अंतिम उपभोग हेतु बेचा तथा 300 रु. का माल फर्म C को बेचा।

(iii) फर्म C 1200 रु. का माल निजी उपभोग हेतु बेचा।

उत्तर राष्ट्रीय उत्पाद = 1300 रु.

प्र.3. निम्न आंकड़ों की सहायता से कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि ज्ञात कीजिए।

		(लाख रू. में)
(i)	बिक्री	1,000
(ii)	स्वउपभोग हेतु प्रयुक्त	100

(iii)	स्टॉक में कमी	150
(iv)	कच्चे माल की खरीद	500
(v)	बिजली पर व्यय	30
(vi)	स्थिर पूंजी का उपभोग	60
(vii)	सीमा शुल्क	20
(viii)	आयकर	10

उत्तर 340 लाख रू.

प्र.4. निम्न आंकड़ों की सहायता से कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि ज्ञात कीजिए तथा दर्शाइए कि कारक लागत पर निवल मूल्य वद्धि कारक आय के योग के बराबर होती है।

(i)	कच्चे माल तथा सामग्री की देशीय बाजार से खरीद	600
(ii)	स्टॉक में कमी	200
(iii)	देशीय बिक्री	1800
(iv)	कच्चे माल का आयात	100
(v)	निर्यात	200
(vi)	स्थिर पूंजी का अवक्षयण	75
(vii)	मजदूरी एवं वेतन	600
(viii)	ब्याज का भुगतान	450
(ix)	किराया	75
(x)	लाभांश	150
(xi)	अवितरित लाभ	80
(xii)	निगम लाभ कर	20
(xiii)	अप्रत्यक्ष कर	50

उत्तर 1,375 लाख रू.

प्र.5. निम्न आंकड़ों की सहायता निजी अंतिम उपभोग व्यय की गणना कीजिए

(लाख रू. में)

(i)	देशीय बाजार में निजी अंतिम उपभोग व्यय	300

(ii)	निवासी गहस्थ द्वारा शेष विश्व से प्रत्यक्ष खरीद	20
(iii)	अनिवासी गहस्थ द्वारा देशीय बाजारों में प्रत्यक्ष खरीद	50
(iv)	देशीय सीमा के अतिरिक्त उपभोक्ताओं द्वारा देशीय बाजारों में प्रत्यक्ष खरीद	10
(v)	मकान मालिक के स्वयं काबिज मकान का आरोपित किराया	5

उत्तर 260 लाख रू.

प्र.6. सरकारी अंतिम उपभोग व्यय की गणना निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से कीजिए।

		(रू. करोड़ में)
(i)	कर्मचारी का पारिश्रमिक	1,000
(ii)	सरकार द्वारा प्रदत्त बोनस	70
(iii)	सरकार को सेवाओं की बिक्री	100
(iv)	सरकार का मध्यवर्ती उपभोग	500

उत्तर 1,400 करोड़ रू.

प्र.7. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से बाजार कीमत पर सकल राष्ट्रीय उत्पाद ज्ञात कीजिए।

(i)	भण्डार निवेश	100
(ii)	निर्यात	200
(iii)	विदेशों से निवल कारक आय	(–50)
(iv)	व्यक्तिगत उपभोग व्यय	3,500
(v)	सकल आवासीय निर्माण निवेश	300
(vi)	वस्तुओं व सेवाओं की सरकारी खरीद	1,000
(vii)	सकल सार्वजनिक निवेश	200
(viii)	सकल व्यवसायिक स्थिर निवेश	300
(ix)	आयात	100

उत्तर 5,450 लाख रू.

प्र.8. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से ज्ञात कीजिए।

(i) निवल देशीय आय (ii) निवल राष्ट्रीय आय

(iii) सकल देशीय आय (iv) बाजार कीमत पर निवल राष्ट्रीय उत्पाद

	(करोड़ रू. में)
(i) अप्रत्यक्ष कर	9,000
(ii) आर्थिक सहायता	1,800
(iii) मूल्य ह्रास	1,700
(iv) स्वनियोजितों की मिश्रित आय	28,000
(v) प्रचालन अधिशेष	10,000
(vi) विदेशों से निवल कारक आय	(–)300
(vii) कर्मचारियों का पारिश्रमिक	24,000

उत्तर (i) 62,000 करोड़ रू. (ii) 61,700 करोड़ रू. (iii) 63,700 करोड़ रू. (iv) 68,900 करोड़ रू.

प्र.9. निम्न आंकड़ों की सहायता से राष्ट्रीय आय ज्ञात कीजिए।

	(करोड़ रू. में)
(i) राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज	1,000
(ii) लाभ कर	3,000
(iii) प्रतिधारित आय	6,000
(iv) वैयक्तिक उपभोग व्यय	40,000
(v) वैयक्तिक बचत	5,000
(vi) गैर विभागीय उद्यमों की बचतें	2,000
(vii) विदेशों से अर्जित निवल कारक आय	100
(viii) शेष विश्व से चालू हस्तांतरण	3,000
(ix) सरकारी प्रशासनिक विभागों से चालू हस्तांतरण	500
(x) आय कर	3,000
(xi) सरकारी प्रशासनिक विभागों की संपति व उद्यमवत्ति से आय	6,000

उत्तर 68,600 करोड़ रू.

प्र.10. निम्न आंकडों की सहायता से सकल राष्ट्रीय प्रयोज्य आय ज्ञात कीजिए।

(i)	राष्ट्रीय आय	2,000
(ii)	शेष विश्व से निवल चालू हस्तांतरण	200
(iii)	स्थिर पूंजी का उपभोग	100
(iv)	विदेशों से निवल कारक आय	(–)100
(v)	निवल अप्रत्यक्ष कर	250

उत्तर 2,550 करोड़ रू.

प्र.11. निम्न आंकडों की सहायता से ज्ञात कीजिए।

(A) निजी आय (B) वैयक्तिक आय (C) वैयक्तिक प्रयोज्य आय

		(करोड़ रू. में)
(i)	सरकारी प्रशासनिक विभागों की संपति व उद्यमवत्ति से आय	100
(ii)	गैर विभागीय उद्यमों की बचतें	80
(iii)	निजी क्षेत्र को घरेलू उत्पाद से आय	500
(iv)	निगम कर	30
(v)	निजी निगमित क्षेत्र की बचत	65
(vi)	गहस्थों द्वारा दिए गए प्रत्यक्ष कर	20
(vii)	सरकारी प्रशासनिक विभागों से प्रचलित हस्तांतरण	10
(viii)	शेष विश्व से प्रचलित हस्तांतरण	20
(ix)	विदेशों से कारक आय	5
(x)	प्रचालन अधिशेष	150
(xi)	विदेशों को कारक आय	15

उत्तर (A) 520 करोड़ रू. (B) 425 करोड़ रू. (C) 405 करोड़ रू.

6 अंक वाले प्रश्नों हेतु संकेत

9. (i) नहीं, क्योंकि यह आय देशीय सीमा के बाहार अर्जित की गई है।

(ii) हाँ, क्योंकि भारतीय दूतावास भारतीय देशीय सीमा का भाग है।

(iii) हाँ, क्योंकि कंपनी द्वारा अर्जित लाभ देशीय सीमा का हिस्सा है।

10. (i) नहीं, क्योंकि यह विदेशों को दी गई कारक आय है।

(ii) नहीं, क्योंकि यह विदेशों को दी गई कारक आय है।

(iii) नहीं, क्योंकि यह उत्पादन में योगदान नहीं करता।

11. (i) राष्ट्रीय आय एवं घरेलू आय में क्योंकि यह विदेशों से अर्जित कारक आय है।

(ii) घरेलू आय तथा राष्ट्रीय आय दोनों में शामिल होगा क्योंकि यह निजी अंतिम उपभोग व्यय है।

(iii) यह हंस्तांतरण भुगतान है इसलिए ये न तो घरेलू आय है और ना ही राष्ट्रीय आय।

12. (i) हस्तांतरण भुगतान – क्योंकि यह आय सजन में सहायक नहीं है।

(ii) हस्तांतरण भुगतान – क्योंकि यह आय सजन में सहायक नहीं है।

(iii) साधन भुगतान – क्योंकि यह कारक की अर्जित आय है।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र से अभिप्राय अर्थशास्त्र की उस शाखा से है जो व्यक्तिगत आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है। जबकि समष्टि अर्थशास्त्र सामूहिक अथवा समूह से जुड़ी आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है।

2. निर्यात तथा आयात का अंतर निवल निर्यात कहलाता है।

   निवल निर्यात = निर्यात – आयात

3. एक उत्पादक द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन हेतु मध्यवर्ती वस्तुओं पर किया गया व्यय।

4. चालू हस्तांतरण वे हस्तांतरण हैं जो भुगतानकर्ता की वर्तमान आय में से प्राप्तकर्ता की वर्तमान आय में शामिल किये जाते हैं।

5. वास्तविक राष्ट्रीय आय का वह भाग जो औसत रूप से प्रत्येक व्यक्ति को प्राप्त होता है।

6. राष्ट्रीय प्रयोज्य आय = राष्ट्रीय आय + अप्रत्यक्ष कर – आर्थिक सहायता + शेष विश्व से चालू हस्तांतरण।

7. विदेशों से अर्जित निवल कारक आय ऋणात्मक होने पर।

8. किसी देश का सामान्य निवासी उस व्यक्ति या संस्था को माना जाता है जिसके आर्थिक हित उसी देश में जुड़ें हों।

9. आर्थिक सीमा से अभिप्राय किसी देश की सरकार द्वारा प्रशासित उस भौगौलिक सीमा से है जिसमें व्यक्ति, वस्तु तथा पूंजी का प्रवाह निर्बाध रूप से होता है।

10. देश के सामान्य निवासियों द्वारा शेष विश्व को साधन सेवाएं प्रदान करके अर्जित की गई आय में से शेष विश्व को ऐसे ही कारक सेवाओं का किया गया भुगतान घटाने पर विदेशों से निवल कारक आय प्राप्त होती है।

11. (i) सरकारी प्रशासनिक विभागों को संपति व उद्यमवत्ति से प्राप्त आय।

(ii) गैर विभागीय उद्यमों की बचतें।

12. (i) निगम लाभ कर।

(ii) अवितरित लाभ।

13. जब आर्थिक सहायता, अप्रत्यक्ष कर से अधिक हो।

14. एक लेखा वर्ष में पूंजी के स्टॉक में होने वाली वद्धि है जिसमें स्थिर पूंजी का अवक्षय शामिल होता है।

15. एक लेखा वर्ष में उत्पादन प्रक्रिया में लगातार प्रयुक्त होने के कारण, स्थिर पूंजी के मूल्य में आने वाली कमी को स्थिर पूंजी का अवक्षय कहते हैं।

16. (i) मध्यवर्ती वस्तु

(ii) मध्यवर्ती वस्तु

(iii) अंतिम वस्तु

(iv) अंतिम वस्तु

17. क्षरण वे आर्थिक चर हैं जो आय के प्रवाह पर ऋणात्मक प्रभाव छोड़ते हैं।

18. भरण उन आर्थिक चरों को कहा जाता है जो आय तथा वस्तुओं के प्रवाह में वद्धि करते हैं जैसे – निवेश व निर्यात।

19. अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में मौद्रिक आय या वस्तुओं व सेवाओं का प्रवाह जो चक्रीय रूप में होता है– चक्रीय प्रवाह कहलाता है।

20. (i) प्रवाह (ii) स्टॉक

21. मौद्रिक सकल राष्ट्रीय उत्पाद चालू वर्ष के सकल राष्ट्रीय उत्पाद का मौद्रिक मूल्य है जो कि वर्तमान वर्ष के मूल्यों पर आधारित होता है।

22. वास्तविक सकल राष्ट्रीय उत्पाद : यह चालू वर्ष के सकल राष्ट्रीय उत्पाद का वास्तविक मूल्य है जो कि आधार वर्ष की कीमतों पर आधारित होता है।

23. स्टॉक से अभिप्राय उन आर्थिक चरों से है जिनका कोई निश्चित समय काल नहीं होता अर्थात इन्हें समय के किसी भी बिन्दु पर मापा जा सकता है।

24. यह ऐसा आर्थिक संव्यवहार है जिसका आय व उत्पादन के प्रवाह पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

25. निवल देशीय उत्पाद।

26. कीमत वद्धि के कारण राष्ट्रीय आय का मौद्रिक मूल्य उसके वास्तविक मूल्य की तुलना में बढ़ जाता है।

27. स्वउपभोग के लिए उत्पादित सेवाओं के मूल्य का उचित अनुमान लगाना संभव नहीं होता। अतः इनका मूल्य राष्ट्रीय आय में शामिल नहीं किया जाता।

28. मूल्य वद्धि के अंतर्गत मध्यवर्ती उपभोग का मूल्य घटा दिया जाता है। जिससे दोहरी गणना की संभावना समाप्त हो जाती है।

29. मुद्रा आपूर्ति में परिवर्तन को एक समयावधि के पश्चात (वार्षिक) मापा जाता है अतः यह प्रवाह है।

30. समष्टि अर्थशास्त्र।

31. (NVA_{FC})

यूनिट 7

आय और रोजगार का निर्धारण

- एक अर्थव्यस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग (AD) कहते हैं।
- निजी उपभोग मांग, निजी निवेश मांग, सरकारी उपभोग व्यय तथा निवल निर्यात, समग्र मांग के मुख्य घटक होते है। दो क्षेत्र वाली अर्थव्यवस्था में AD = C + I
- एक अर्थव्यवस्था में वस्तुओं व सेवाओं की कुल पूर्ति समग्र पूर्ति (AS) कहलाती है समग्र पूर्ति के मौद्रिक मूल्य को ही राष्ट्रीय उत्पाद या राष्ट्रीय आय कहते है। अर्थात राष्ट्रीय आय सदैव समग्र पूर्ति के समान होती है।
- राष्ट्रीय आय का बड़ा भाग उपभोग पर खर्च होता है और शेष बचत कहलाता है। अतः राष्ट्रीय आय या समग्र पूर्ति, उपभोग व बचत का योग होती है।

$$AS = C + S$$

- जब समग्र मांग और समग्र पूर्ति बराबर हो जाते हैं, उस बिन्दु पर आय का साम्य स्तर निर्धारित होता है।
- यह आवश्यक नहीं है कि आय का साम्य स्तर सदैव पूर्ण रोजगार स्तर पर हो यह पूर्ण रोजगार स्तर से कम अर्थात अल्प रोजगार संतुलन भी हो सकता है।
- अनैच्छिक बेरोजगारी अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जहाँ कार्य करने के इच्छुक व योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य करने के लिए इच्छुक हैं लेकिन उन्हे कार्य नहीं मिलता।
- स्वैच्छिक बेरोजगारी अर्थव्यवस्था की ऐसी स्थिति है जब योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी की दर पर कार्य करने का इच्छुक नहीं होता।
- पूर्ण रोजगार संतुलन अर्थव्यवस्था की वह अवस्था है जहाँ पूर्ण रोजगार स्तर पर AD = AS होता है।
- अल्प रोजगार वह स्थिति होती है जहाँ पूर्ण रोजगार स्तर पर $AD < AS$ होता है।
- उपभोग (C) आय के स्तर पर निर्भर होता है। जैसे–जैसे आय के स्तर में वद्धि होती है वैसे ही उपभोग में भी वद्धि होती है लेकिन उपभोग में होने वाली वद्धि की दर आय में होने वाली वद्धि की दर से कम होती है।
- उपभोग फलन, आय (Y) और उपभोग (C) के बीच फलनात्मक संबंध को दर्शाता है। C = f (Y)

- उपभोग फलन (उपभोग प्रवत्ति) दो प्रकार की होती है।

उपभोग फलन

↓

औसत उपभोग प्रवत्ति APC	सीमान्त उपभोग प्रवत्ति MPC
↓	↓
(आय तथा उपभोग का अनुपात)	आय में परिवर्तन (ΔY) के कारण उपभोग में परिवर्तन (ΔC) का अनुपात
↓	↓
$APC = \frac{C}{Y}$	$MPC = \frac{\Delta C}{\Delta Y}$

- उपभोग फलन का बीजगणितीय व्यंजक $C = \overline{C} + by$ है।

जहां C = उपभोग

$\overline{C}$ = स्वायत्त उपभोग (शून्य स्तर आय पर उपभोग)

b = सीमांत उपभोग प्रवत्ति

y = आय

- बचत फलन, बचत और आय के फलनात्मक संबंध को दर्शाता है $S = f(y)$

बचत फलन

↓

औसत बचत प्रवत्ति APS	सीमान्त बचत प्रवत्ति MPS
↓	↓
बचत का आय के साथ अनुपात	बचत में परिवर्तन का आय में परिवर्तन के साथ अनुपात
↓	↓
$APS = \frac{S}{Y}$	$MPS = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$

- बचत फलन का बीजगणितीय व्यंजक $S = -\overline{S} + sy$ है।

जहां S = बचत

$\overline{S}$ = स्थिर बचत या $y = 0$ पर बचत

s = सीमांत बचत प्रवत्ति

y = आय

- APC और APS का योग सदैव एक होता है।

- MPC तथा MPS का योग भी सदैव एक होता है।
- निवेश गुणक बताता है कि समग्र निवेश में परिवर्तन से राष्ट्रीय आय भी परिवर्तित होती है। सांकेतिक रूप से गुणक (K) को निम्न प्रकार दर्शाते हैं—

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

- पारस्परिक संबंध के बिन्दु निम्न प्रकार हैं—
  - (i) MPC और गुणक में सीधा अनुपात होता है अर्थात् MPC अधिक होने से गुणक का मान अधिक तथा MPC कम होने से गुणक का मान कम होता है।
  - (ii) यदि MPS = 0 तो K = 1/0 = α (अनन्त) होगा।
  - (iii) MPS और गुणक में उल्टा (Inverse) अनुपात होता है। यदि MPS का मान अधिक है तो गुणक का मान कम होगा।
  - (iv) यदि MPS = 1 तब $K = \frac{1}{MPS} = \frac{1}{1} = 1$ होगा।

    इसका आशय है कि राष्ट्रीय आय एक बार ही वद्धि करेगी।
- जब समग्र मांग, (AD) पूर्ण रोजगार स्तर पर समग्र पूर्ति (AS) से अधिक हो जाए तो उसे अत्यधिक मांग कहते है।
- स्फीति अंतराल, वास्तविक समग्र मांग और पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाए रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग के बीच का अंतर होता है। यह समग्र मांग के आधिक्य का माप है।
- जब समग्र मांग, (AD) पूर्ण रोजगार वाली समग्र पूर्ति (AS) से कम होती है उसे अभावी मांग कहते है।
- अवस्फीतिक अंतराल, वास्तविक समग्र मांग पूर्ण रोजगार संतुलन को बनाएं रखने के लिए आवश्यक समग्र मांग से जितनी कम होती है, कहलाता है। यह समग्र मांग में कमी का माप है।
- सरकार की आय—व्यय नीति को राजकोषीय नीति कहते है।
- देश के केन्द्रीय बैंक की मुद्रा व साख नियंत्रण संबंधी नीति को मौद्रिक नीति कहते है।

आवश्यक सूत्र

AD = C + I	AS = C + S
APC = C/Y	MPC = ΔC/ΔY
APS = S/Y	MPS = ΔS/ΔY
APC + APS = I	MPC + MPS = I
APC = I – APS	MPS = I – MPC

$$K = \frac{\Delta Y}{\Delta I} \quad \text{या} \quad K = \frac{I}{1 - MPC} \quad \text{या} \quad K = \frac{I}{MPS}$$

$$\Delta Y = K \cdot \Delta I \qquad \text{या} \qquad \Delta Y = \frac{I}{MPS} . \Delta I$$

$$C = \overline{C} + (MPC)\,Y$$

$$S = -\overline{S} + (MPS)\,Y$$

1 अंक वाले प्रश्न

1. समग्र मांग की परिभाषा लिखिए।
2. निम्नलिखित की परिभाषा दीजिए–
   (i) ऐच्छिक बेरोजगारी
   (ii) अनैच्छिक बेरोजगारी
   (iii) बचत
   (iv) उपभोग।
3. पूर्ण रोजगार संतुलन का अर्थ बताइये।
4. अल्प (अपूर्ण) रोजगार संतुलन का क्या अर्थ है?
5. उपभोग फलन क्या है?
6. बचत फलन से क्या अभिप्राय है?
7. सीमांत उपभोग प्रवत्ति का सीमांत बचत प्रवत्ति से क्या संबंध है?
8. औसत बचत प्रवत्ति तथा औसत उपभोग प्रवत्ति में क्या संबंध हैं।
9. सीमांत बचत प्रवत्ति कब शून्य होती है?
10. सीमांत उपभोग प्रवत्ति का अधिकतम मूल्य क्या हो सकता है? और कब?
11. यदि औसत बचत प्रवत्ति का मूल्य शून्य हो तो औसत उपभोग प्रवत्ति का मूल्य ज्ञात कीजिए।
12. यदि सीमांत बचत प्रवत्ति 0.1 तथा राष्ट्रीय आय में 500 करोड़ रू. की वद्धि हो तो निवेश में वद्धि ज्ञात करो।
13. निवेश में 100 करोड़ रु० की वद्धि करने से किसी देश की राष्ट्रीय आय में 250 करोड़ रु० की वद्धि होती है। सीमान्त उपभोग प्रवत्ति ज्ञात करो।
14. एक अर्थव्यवस्था में निवेश में 600 करोड़ रु० की वद्धि की गई। यदि सीमान्त उपभोग प्रवत्ति 0.7 हो तो कुल राष्ट्रीय आय में वद्धि की गणना करो।

15. निवेश गुणक से क्या अभिप्राय है?

16. निवेश गुणक का सीमान्त उपभोग प्रवत्ति तथा सीमान्त बचत प्रवत्ति से संबंध लिखिये।

17. निवेश गुणक की गणना करने के लिए सूत्र लिखिए।

18. सीमांत उपभोग प्रवत्ति किस प्रकार निवेश गुणक से संबंधित है।

19. एक अथव्यवस्था में अभावी मांग की स्थिति कब उत्पन्न होती है?

20. क्या औसत बचत प्रवत्ति का मूल्य ऋणात्मक हो सकता है?

21. गुणक का अधिकतम मूल्य क्या हो सकता है?

22. निवेश गुणक का न्यूनतम मान क्या हो सकता है?

HOTS ;उच्च स्तरीय बु(ि कौशलद्ध

*23. उपभोग वक्र सदैव कुल मांग वक्र के समान्तर क्यों होता है?

*24. आय में निरन्तर वद्धि का औसत उपभोग प्रवत्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

*25. गुणक के अधिकतम और न्यूनतम मूल्य के बीच अन्तर किस प्रकार से होता है?

*26. जब औसत बचत प्रवत्ति ऋणात्मक होती है तो आय और उपभोग का स्वरूप कैसा होगा?

*27. निवेश में कमी का आय एवं रोजगार के स्तर पर क्या प्रभाव पड़ता है?

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. उपभोग फलन $C = 20 + 0.9Y$ है। आय का मूल्य 100 रू., 200 रू., 300 रू., 400 रू., तथा 500 रू. है। उपभोग अनुसूची तथा उपभोग वक्र बनाइये।

2. गुणक की गणना कीजिए, जब MPS–

   (i) 0.10 (ii) 0.20 (iii) 0.25

3. यदि सीमान्त उपभोग प्रवत्ति 0.9 हो तो गुणक का मूल्य क्या होगा? राष्ट्रीय आय में 5000 करोड़ रू. की वद्धि लाने के लिए कितने निवेश की आवश्यकता होगी?

4. यदि सीमांत बचत प्रवत्ति 0.25 हो तो निवेश में 125 करोड़ रू. की वद्धि राष्ट्रीय आय में कितनी वद्धि लायेगी, परिकलन करो।

5. निवेश में 400 करोड़ रू. की वद्धि, राष्ट्रीय आय में 1600 करोड़ रू. की वद्धि लाती है। सीमान्त उपभोग प्रवत्ति की गणना करो।

6. निम्न चार्ट को पूरा करो तथा आय का साम्य स्तर ज्ञात करो—

AS	C	I	S	AD
100	125	25		
200	200	25		
300	275	25		
400	350	25		
500	425	25		

7. निम्न सारणी को पूरा करो—

Y	C	S	I	S	AD
0	60	–	–	100	–
–	–	–40	–	–	100
200	–	–	–	260	–
–	–	0	–	–	300
400	380	–	–	–	–

8. निम्न सारणी को पूरा करो—

आय	बचत	MPC	APC
0	–20		
50	–10		
100	0		
150	30		
200	60		

9. निम्नलिखित आंकड़ों की सहायता से APC, MPC, APS और MPS की गणना करो—

आय	उपभोग	APC	MPC	APS	MPS
0	800				
1000	1500				
2000	2000				
3000	2400				
4000	2700				
5000	2900				

10. निम्न सारणी को पूरा करो—

आय	बचत	MPC
0	–	–
-	1/2	–
–	–	3
3/4	–	–

11. एक द्विक्षेत्रीय अर्थव्यवस्था में बचत फलन तथा निवेश फलन निम्न प्रकार है–

$$S = -10 + 0.2Y$$

$$I = -3 + 0.1\,Y$$

आय का साम्य स्तर क्या होगा?

12. निवेश गुणक की परिभाषा लिखिए। निवेश गुणक को सीमांत उपभोग प्रवत्ति किस प्रकार प्रभावित करती है?

13. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निवेश गुणक का कार्यकरण समझाइये।

14. समग्र मांग का अर्थ तथा इस के घटकों को समझाइये।

15. पूर्ण रोजगार सन्तुलन से क्या आशय है? एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट करो।

16. अपूर्ण रोजगार सन्तुलन की धारणा को एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट करो।

17. अत्यधिक मांग (Excess Demand) का उत्पादन, रोजगार तथा आय स्तर पर क्या प्रभाव पड़ेगा? एक रेखाचित्र की सहायता से दर्शाइये।

18. राष्ट्रीय आय तथा रोजगार स्तर किस प्रकार प्रभावित होंगे जब नियोजित बचतें, नियोजित निवेश से कम है? स्पष्ट कीजिए।

19. एक रेखाचित्र की सहायता से समझाइये कि समग्र मांग और समग्र पूर्ति किस प्रकार सन्तुलन स्तर का निर्धारण करती है।

20. स्फीति अन्तराल तथा अवस्फीति अन्तराल में अन्तर स्पष्ट करो।

21. एक अर्थव्यवस्था में समग्र मांग को कम करने के लिए ''नकद निधि अनुपात'' तथा ''बैंक दर'' की क्या भूमिका है?

22. एक अर्थव्यवस्था में समग्र मांग को बढ़ाने के लिए किन्हीं दो राजकोषीय उपायों को स्पष्ट करो।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

*23. समग्र पूर्ति वक्र (मूल) बिन्दु से 45° का कोण बनाती रेखा क्यों होती है?

*24. आय में निरन्तर वद्धि होने से उपभोग की अपेक्षा बचत में अधिक वद्धि क्यों होती है?

*25. ''पूंजी की सीमान्त कुशलता'' की अवधारणा को रेखाचित्र की सहायता से समझाइये।

*26. एक अर्थव्यवस्था में दी गई निवेश वद्धि अन्ततः आय स्तर में वद्धि करती है। एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से समझाइये।

6 अंक वाले संख्यात्मक प्रश्न

1. एक रेखाचित्र की सहायता से राष्ट्रीय आय के संतुलन निर्धारण की व्याख्या कीजिए।
2. उपभोग तालिका एवम् उपभोग वक्र की सहायता से समस्तर बिन्दु का अर्थ समझाइये।

3. अत्यधिक या अतिरेक मांग का उत्पादन, आय एवं रोजगार पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या कीजिए।

4. अपूर्ण रोजगार सन्तुलन की अवधारणरा को रेखाचित्र की सहायता से समझाइये। इसी रेखाचित्र पर पूर्ण रोजगार सन्तुलन के लिए आवश्यक अतिरिक्त निवेश को दर्शाइये।

5. बचत और निवेश विधि की सहायता से आय के सन्तुलन स्तर निर्धारण को समझाइये। रेखाचित्र का प्रयोग करें।

6. सरकार की मौद्रिक नीति के परिमाणात्मक और गुणात्मक उपाय अतिरेक या आधिक्य मांग को कैसे नियंत्रित करते हैं?

7. राजकोषीय नीति से क्या आशय है? यह नीति अभावी मांग को नियन्त्रित करने के लिए किस प्रकार सहायक होती है?

8. रेखाचित्र की सहायता से स्फीति अन्तराल एवं अवस्फीति अन्तराल में अन्तर स्पष्ट करो।

9. एक अर्थव्यवस्था में $C = 1000 + 0.5Y$ और $I = 2000$, निम्न का परिकलन करो।

   (i) आय का सन्तुलन स्तर

   (ii) सन्तुलन स्तर पर बचतें।

10. अपूर्ण रोजगार सन्तुलन को समझाइये। सरकार द्वारा प्रयोग किये गये ऐसे दो उपायों का वर्णन करो जिससे अर्थव्यवस्था को पूर्ण रोजगार सन्तुलन में लाया जा सके।

11. एक संख्यात्मक उदाहरण की सहायता से निवेश गुणक का कार्यकरण समझाइये। इस प्रक्रिया में सीमान्त उपभोग प्रवत्ति के महत्व को भी स्पष्ट करो।

12. एक अर्थव्यवस्था में समग्र मांग, समग्र पूर्ति से कम है। सरकार द्वारा क्या उपाय किये जाने चाहिए। जिस से अर्थव्यवस्था सन्तुलन में आ सके।

13. यह क्यों आवश्यक है कि सन्तुलन स्तर पर नियोजित बचतें, नियोजित निवेश के बराबर हो? एक रेखाचित्र की सहायता से स्पष्ट करो।

14. एक सरल रेखीय उपभोग वक्र खींचिए। विधि को स्पष्ट करते हुए इस से बचत वक्र की व्युत्पत्ति करो। इस रेखाचित्र में दिखाइये।

   (i) आय का वह स्तर जहाँ पर औसत बचत प्रवत्ति एक के बराबर हो।

   (ii) आय का वह स्तर जहाँ पर औसत बचत प्रवत्ति ऋणात्मक हो।

15. राजकोषीय नीति का अर्थ बताइये। एक अर्थव्यवस्था में निम्न बातें समग्र मांग को कैसे प्रभावित करती है।

   (i) सरकारी व्यय में परिवर्तन।

   (ii) करों की दरों में परिवर्तन।

HOTS ;उच्च स्तरीय बु[(कौशलद्ध

*16. निम्न कथन सत्य है या असत्य? कारण सहित स्पष्ट करो।

(i) अपूर्ण रोजगार सन्तुलन में समग्र मांग और समग्र पूर्ति बराबर हो सकती है।

(ii) पूर्ण रोजगार सन्तुलन में बेरोजगारी हो सकती है।

(iii) एक अर्थव्यवस्था में बचत में वद्धि आय और रोजगार पर विपरीत प्रभाव डालती है।

*17. किसी अर्थव्यवस्था का बचत फलन $S = -200 + 0.25Y$ है। आय 2000 होने पर अर्थव्यवस्था सन्तुलन अवस्था में होती है। गणना करो—

(i) आय के सन्तुलन स्तर पर निवेश व्यय

(ii) स्वायत्त उपभोग

(iii) निवेश गुणक

*18. प्रभावी मांग क्या है? अन्तिम वस्तुओं की कीमत एवं ब्याज की दर दी गई होने पर स्वायत्त व्यय गुणक कैसे ज्ञात करेंगे?

*19. नीचे कुछ कथन दिये गये हैं, बताइये वे सत्य हैं या असत्य। अपने उत्तर की पुष्टि करो।

(i) सीमान्त उपभोग प्रवत्ति का मान एक से अधिक हो सकता है।

(ii) निवेश गुणक एवं सीमान्त उपभोग प्रवत्ति में धनात्मक सम्बन्ध होता है।

(iii) अतिरेक मांग को नियंत्रित करने के लिए बैंक दर में वद्धि एक प्रभावशाली उपाय है।

(iv) आय के शून्य स्तर पर बचतें ऋणात्मक होती हैं।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. एक अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समय पर, आय के एक निश्चित स्तर पर, सभी क्षेत्रों द्वारा अंतिम वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मांग को समग्र मांग कहते हैं।

2. (क) यह बेरोजगारी का वह स्वरूप है जिसमें मजदूरी की प्रचलित दरों पर रोजगार के अवसर उपलब्ध होने पर भी कोई श्रमिक अपनी इच्छा से बेरोजगार होता है।

   (ख) जब मजदूरी की प्रचलित दरों पर कार्य करने की इच्छा, क्षमता व योग्यता होने के बावजूद रोजगार के अवसर न होने के कारण कोई श्रमिक बेरोजगार होता है।

   (ग) बचत : आय का वह भाग जो उपभोग नहीं किया जाता।

   (घ) उपभोग : आय का वह भाग जो मानवीय इच्छाओं की पूर्ति हेतु वस्तुओं व सेवाओं के उपभोग पर व्यय किया जाता है।

3. जब कुल मांग, पूर्ण रोजगार वाली कुल पूर्ति के बराबर होती है, उस स्थिति को पूर्ण रोजगार संतुलन कहते है।

4. जब कुल मांग, पूर्ण रोजगार वाली पूर्ति से कम हो, उसे अपूर्ण रोजगार संतुलन कहते हैं।

5. आय और उपभोग के बीच फलनात्मक संबंध को उपभोग फलन कहते हैं।

6. आय और बचत के फलनात्मक संबंध को बचत फलन कहते हैं।

7. MPC तथा MPS में विपरीत संबंध होता है तथा MPC एवं MPS का योग इकाई के बराबर होता है।

8. APC तथा APS का योग इकाई के बराबर होता है।

9. जब MPC = 1.

10. MPC का अधिकतम् मूल्य एक होता है जब MPS = 0

11. एक

12. निवेश में वद्धि 50 करोड़।

13. MPC = 0.75

14. राष्ट्रीय आय में 2000 करोड़ की वद्धि होगी।

15. निवेश गुणक यह मापता है कि निवेश में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप आय में कितने गुना परिवर्तन होता है।

16. $K = \frac{1}{1 - MPC}$

17. निवेश गुणक के लिए सूत्र

$$K = \frac{1}{MPS} = \frac{1}{1 - MPC} = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$$

18. $K = \frac{1}{1 - MPC}$, $K = \frac{1}{MPS}$

19. पूर्ण राजेगार अवस्था में समग्र मांग, समग्र पूर्ति से कम होती है।

20. हाँ, जब उपभोग आय से अधिक हो।

21. निवेश गुणक का अधिकतम मान अनन्त हो सकता है।

22. एक

23. AD = C + I तथा निवेश स्थिर होता है।

24. APC घटेगी

25. MPC में परिवर्तन होगा।

26. आय तथा रोजगार दोनों में कमी होगी।

यूनिट 8

मुद्रा तथा बैंकिंग

स्मरणीय बिन्दु

- **मुद्रा :** मूद्रा को ऐसी वस्तु के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो विनिमय के माध्यम के रूप में स्वीकार्य हो और इसके साथ ही जो मूल्य मापन एवं संचय का कार्य भी करती हो तथा भावी भुगतान के मानक के रूप में भी कार्य करे।
- **वस्तु विनिमय प्रणाली :** यह विनिमय की ऐसा प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का आदान–प्रदान सौदे संपन्न किए जाते हैं। मुद्रा का आविष्कार होने से पूर्व यही प्रचलन में थी।
- **मुद्रा की पूर्ति :** से अभिप्राय एक देश की जनता के पास समय के एक निश्चित बिंदु पर कुल मुद्रा की मात्रा से है।
- **व्यापारिक बैंक का अर्थ :** व्यापारिक बैंक वह संस्था है जो मुद्रा तथा साख में व्यापार करती है। व्यापारिक बैंक ऋण प्रदान करने के उद्देश्य से जनता से जमाएँ स्वीकार करते हैं।
- **केन्द्रीय बैंक :** एक देश की बैंकिग व वित्तीय प्रणाली में सर्वोच्च संस्था है जो देश के मौद्रिक एवं बैंकिंग ढाँचे का संचालन, नियंत्रण निर्देशन एवं नियमन करती है।
- **मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले कारक :** केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति, वाणिज्य बैंकों की साख निर्माण क्षमता एवं नीति सरकार की राजकोषीय नीति, समाज की पसंदगी।
- **वस्तु विनिमय में आने वाली कठिनाईयाँ :**
    1. मूल्यों के सामान्य मापक का अभाव।
    2. दोहरे संयोग का अभाव।
    3. भावी भुगतान में कठिनाई।
    4. यह कोई ऐसा तरीका नहीं बताता जिससे क्रय शक्ति को बचाकर रखा जा सके।
- **मुद्रा के कार्य :**
    1. मूल्यमान की इकाई।
    2. विनिमय का माध्यम।
    3. स्थगित भुगतान का मापक।
    4. मूल्य संचय।

मुद्रा की पूर्ति के माप

- M_1
  - जनता के पास करेंसी
  - केंद्रीय बैंक की अन्य जमाएं
  - बैंको के पास मांग जमाएं
- M_2
  - M_1
  - डाकघर बचत
  - बैंक में जमा राशियाँ
- M_3
  - M_1
  - बैंक के पास सावधि जमाएं
- M_4
  - M_3
  - डाकघर में समस्त जमाएं
  - (NSC) के अतिरिक्त

बैंक

- **केन्द्रीय बैंक**
  ऐसी शीर्ष संस्था जो देश के मौद्रिक एवं वित्तीय ढांचे का सचांलन व नियंत्रण करती है।
- **व्यावसायिक बैंक**
  एक वित्तीय संस्था जो लाभ कमाने के उद्देश्य से साधारण जनता से जमा स्वीकार करती है तथा निवेश के लिए ऋण देती है।

बैंकों के कार्य

केन्द्रीय बैंक के कार्य

1. नोट निर्गमन का एकाधिकार
2. सरकार का बैंकर
3. बैंकों का बैंक तथा निरीक्षक
4. अंतिम ऋणदाता
5. विदेशी विनिमय कोष का संरक्षक
6. मुद्रा पूर्ति एवं साख नियंत्रक।

व्यापारिक बैंक के कार्य

1. जमा स्वीकार करना
   - (i) बचत खाता जमाएँ
   - (ii) चालू खाता जमाएँ
   - (iii) स्थायी जमाखाता
   - (iv) आवर्ती जमा खाता
2. ऐजेंसी कार्य
   - (i) शेयरों की प्रतिभूतियों का क्रय विक्रय
   - (ii) वसीयतों के न्यासी व प्रबन्धक
   - (iii) धन का हस्तांतरण
   - (iv) शेयरों व ऋणपत्रों पर लाभांश एवं ब्याज का एकत्रीकरण
3. ऋण प्रदान करना
   - (i) नकद साख
   - (ii) मांग ऋण
   - (iii) अधि विकर्ष
   - (iv) विनिमय पत्रों की कटौती
   - (v) जमाओं का निवेश

1 अंक वाले प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली से आप क्या समझते हो?
2. वस्तु विनिमय प्रणाली की दो कमियाँ लिखिए।
3. अधि विकर्ष किसे कहते है?
4. मुद्रा की परिभाषा लिखिए।
5. मुद्रा पूर्ति का क्या अर्थ है?
6. मुद्रा के दो प्राथमिक कार्यों के नाम लिखिए।
7. मुद्रा पूर्ति को प्रभावित करने वाले किन्ही दो कारकों का नाम लिखिए।
8. साख निर्माण से क्या तात्पर्य है?
9. साख गुणक से क्या अभिप्राय है?
10. साख की राशनिंग से आप क्या समझते हो?
11. चैक किसे कहते हैं?
12. केन्द्रीय बैंक के दो कार्य लिखिए।
13. व्यावसायिक बैंकों के दो एजेंसी कार्य बताइए।
14. नकद निधि अनुपात क्या होता है?
15. वैधानिक तरलता अनुपात से क्या तात्पर्य है?
16. ऋण की सीमांत आवश्यकता से क्या अभिप्राय है?
17. बैंक की मांग जमा से आप क्या समझते है?
18. केन्द्रीय बैंक द्वारा साख नियन्त्रण के दो मुख्य उपाय क्या है?
19. बैंक समय जमा से आप क्या समझते हैं?
20. तरलता अधिमान किसे कहते हैं।

3-4 अंक वाले प्रश्न

1. वस्तु विनिमय प्रणाली किसे कहते हैं? इसकी किन्ही दो समस्याओं का वर्णन कीजिए।
2. व्यावसायिक बैंको के तीन एजेंसी कार्यो का वर्णन कीजिए।
3. केन्द्रीय बैंक तथा व्यावसायिक बैंको में तीन अंतर लिखिए।

4. 'मूल्य की इकाई' के रुप में मुद्रा के कार्य की व्याख्या कीजिए।

5. किस प्रकार मुद्रा दोहरे संयोग के अभाव की समस्या का समाधान करती है?

6. 'मूल्य संचय' के रुप में मुद्रा के कार्य का वर्णन कीजिए।

7. व्यावसायिक बैंको के किन्ही तीन प्रकार के जमा खातों के नाम लिखिए तथा प्रत्येक की एक विशेषता बताइए।

8. 'खुले बाजार की प्रक्रियाएं' क्या है? साख की उपलब्धता पर इनका क्या प्रभाव पड़ता है?

9. व्यावसायिक बैंकों के दो कार्यों का वर्णन कीजिए।

10. 'अंतिम ऋणदाता' के रुप में केन्द्रीय बैंक के कार्य का वर्णन कीजिए।

11. 'वैधानिक तरलता अनुपात' क्या है? इसकी दर में वद्धि का साख निर्माण पर क्या प्रभाव पड़ता है? लिखिए।

12. SLR तथा CRR में अतंर स्पष्ट कीजिए।

13. बैंक मुद्रा या साख मुद्रा आधुनिक समय में मुद्रा का सबसे प्रमुख रुप है। वर्णन कीजिए।

14. एक अच्छी मुद्रा की तीन विशेषताएं बताइए।

15. मुद्रा पूर्ति के माप M_1 तथा M_4 के मध्य अतंर स्पष्ट कीजिए।

16. 'जमा स्वीकार करना' व्यावसायिक बैंको का मुख्य कार्य है, वर्णन कीजिए।

17. 'सरकार का बैंकर' के रुप में केन्द्रीय बैंक के कार्य का वर्णन कीजिए।

18. मुद्रा के 'विनिमय का माध्यम' तथा स्थगित भुगतान का मापक' कार्यों का वर्णन कीजिए।

10. केन्द्रीय बैंक बैंको का बैंक तथा पर्यवेक्षक होता है वर्णन कीजिए।

20. मुद्रा के किन्ही चार कार्यों को लिखिए।

21. केन्द्रीय बैंक के कार्यों 'मुद्रा जारी करना' तथा 'साख का नियन्त्रण' का वर्णन कीजिए।

22. भारत में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अपनाई गई मुद्रा पूर्ति के विभिन्न मापों का वर्णन कीजिए।

23. 'अधिविकर्ष सुविधा व ऋण देना' में अंतर स्पष्ट कीजिए।

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. यह विनिमय की ऐसी प्रणाली है जिसमें वस्तुओं का आदान–प्रदान करके सौदे सम्पन्न किए जाते हैं।

2. (i) आवश्यकताओं के दोहरे संयोग का अभाव

   (ii) मूल्य मापन में कठिनाई

3. इसके अंतर्गत खाता धारक लिखित समझौते के आधार पर व्यापारिक बैंक के खाते में जमा राशि से अधिक धन निकालने की अनुमति प्राप्त कर लेता है।

4. ऐसी वस्तु जो विनिमय के माध्यम के रुप में स्वीकार्य हो, साथ ही जो मूल्य मापन एवं मूल्य संचय का कार्य भी करती है।

5. मुद्रा पूर्ति से आशय किसी एक दिए हुए समय में एक अर्थव्यवस्था में जनता के पास मुद्रा की कुल मात्रा से है।

6. (i) विनिमय का माध्यम

   (ii) मूल्य का मापक

7. (i) केन्द्रीय बैंक की मौद्रिक नीति

   (ii) वाणिज्य बैंको की साख निर्माण क्षमता एंव नीति

8. साख निर्माण से तात्पर्य बैंको की मांग जमाओं के विस्तार की शक्ति से है।

9. साख गुणक यह मापता है कि निक्षेपों के कितना गुणा साख का निर्माण किया जा सकता है।

10. साख की राशनिंग ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत केन्द्रीय बैंक, व्यावसायिक बैंक के कुछ निश्चित उद्देश्यों के लिए साख सजन की अधिकतम सीमा तय कर देता है।

11. चैक एक माध्यम है जो बैंक को यह निर्देश देता है कि राशि का हस्तांतरण चैक देने वाले के खाते से प्राप्त करने वाले खाते में करें।

12. (i) मुद्रा जारी करना

   (ii) साख का नियन्त्रण करना

13. ग्राहकों की इच्छा या प्रार्थना पर

   (i) चैक ग्रहण करना तथा उनका भुगतान करना

   (ii) शेयर व बांडस का व्याज एकत्र करना।

14. प्रत्येक व्यापारिक बैंक को अपने पास जमा रााशियों का एक निश्चित अनुपात (%) केन्द्रीय बैंक के पास कानूनन जमा करना होता है जिसे नकद कोष अनुपात कहते है।

15. व्यापारिक बैंको को अपनी कुल संपत्ति का एक निश्चित प्रतिशत तरल रुप में या प्रति भूतियों के रुप में रखना पड़ता है जिसे वैधानिक तरलता अनुपात कहते है।

16. व्यापारिक बैंक द्वारा प्रतिभूति की जमानत पर दिए गए ऋण तथा प्रतिभूति के वास्तविक मूल्य के अंतर का ऋण की सीमांत आवश्यकता कहा जाता है।

17. मांग जमा ऐसी जमाएं हैं जिनका आहरण चैक की सहायता से किया जा सकता है।

18. (i) बैंक दर नीति

   (ii) खुले बाजार की क्रियाएँ

19. सावधि जमाएं – इस प्रकार के खातों में जमा राशि निश्चित समय अंतराल, जिसके लिए जमा कराया गया था के बाद देय होती है।

20. अर्थव्यवस्था में अति निम्न ब्याज दर की स्थिति में जहाँ प्रत्येक आर्थिक एजेंट भविष्य में ब्याज दर बढ़ने की आशा करता है और परिणाम स्वरूप बंध–पत्र की कीमत गिर जाती है को तरलता अधिमान कहते हैं।

यूनिट 9

सरकारी बजट तथा अर्थव्यवस्था

स्मरणीय बिन्दु

- **बजट :** यह आगामी वित्त वर्ष के लिए सरकार की अनुमानित प्राप्तियों एवं अनुमानित व्ययों का वित्तिय विवरण है। भारत में लेखा वर्ष 1 अप्रेल से 31 मार्च तक होता है।
- बजट के मुख्य उद्देश्य
    1. संसाधनों का पुनर्वितरण
    2. आय व धन का पुनः बटवारा
    3. आर्थिक स्थिरता
    4. सार्वजनिक उद्यगों का प्रबन्ध
- बजट के घटक
    - (क) राजस्व बजट
    - (ख) पूंजी बजट
- राजस्व बजट सरकार की राजस्व प्राप्तियों तथा राजस्व व्ययों का विवरण है।
- पूंजी बजट सरकार की पूंजीगत प्राप्तियों तथा व्ययों का विवरण है।
- राजस्व प्राप्तियाँ
    1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों को कम नहीं करतीं।
    2. ये सरकार के दायित्वों में वद्धि नहीं करतीं।
- राजस्व व्यय
    1. ये सरकार की परिसम्पत्तियो में वद्धि नहीं करते।
    2. ये सरकार के दायित्वों में कोई कमी नहीं करते।
- पूंजीगत प्राप्तियाँ
    1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों को कम कर देती है।
    2. ये सरकार के दायित्वों में वद्धि करती है।

- पूंजीगत व्यय
    1. ये सरकार की परिसम्पत्तियों में वद्धि करते है
    2. ये सरकार के दायित्वों में कमी करते है
- **राजस्व घाटा :** जब सरकार के कुल राजस्व व्यय, उसकी कुल राजस्व प्रात्तियों से अधिक हों।
- **राजस्व घाटा :** कुल राजस्व व्यय > कुल राजस्व प्रात्तियाँ
- **राजस्व घाटे के प्रभाव**
    1. यह सरकार की भावी देनदारियों में वद्धि करता है
    2. यह सरकार के अनावश्यक व्ययों की जानकारी देता है।
    3. यह कर की दरों में वद्धि को प्रोत्साहित करता है
- **राजकोषीय घाटा :** जब सरकार के कुल बजट व्यय, सरकार की उधार छोड़कर कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक हों।
- **राजकोषीय घाटे के प्रभाव**
    1. यह मुद्रा स्फीति को प्रोत्साहित करता है।
    2. देश ऋण–जाल में फंस जाता है।
    3. यह देश के भावी विकास तथा प्रगति को कम करता है।
- **प्राथमिक घाटा :** राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदायगियों को घटाने से प्राथमिक घाटे का पता चलता है।

    प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा – ब्याज अदायगियाँ
- **प्राथमिक घाटे का प्रभाव**
    1. इससे पता चलता है कि भूतपूर्वक नीतियों का भावी पीढ़ी पर क्या भार पड़ेगा।
    2. शून्य या निम्न प्राथमिक घाटे से अभिप्राय है कि सरकार पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने के लिए उधार लेने को मजबूर है।
    3. यह ब्याज अदायगियों रहित राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लिए सरकार की उधार जरूरतों को दर्शाता है।
- **बजटीय घाटा :** जब सरकार का कुल व्यय, कुल प्राप्तियों से अधिक होता है।

    बजटीय घाटा = कुल व्यय – कुल प्राप्तियाँ
- **घाटे का बजट :** जब सरकार का अनुमानित व्यय, अनुमानित प्राप्तियों से अधिक होता है।

    घाटे का बजट = अनुमानित व्यय – अनुमानित प्राप्तियाँ

1 अंक वाले प्रश्न

1. बजट को परिभाषित करिये।
2. राजस्व बजट का अर्थ बताइये।
3. राजस्व प्राप्तियों से क्या अभिप्राय है?
4. कर प्राप्तियों के दो उदाहरण दीजिये।
5. गैर कर प्राप्तियों के दो उदाहरण दें।
6. पूँजीगत प्राप्तियाँ क्या होती हैं?
7. पूँजीगत प्राप्तियों के दो उदाहरण दीजिए।
8. सरकार के राजस्व व्यय से क्या अभिप्राय है?
9. सरकार के पूंजीगत व्यय से क्या अभिप्राय है?
10. सरकार के पूंजीगत बजट को परिभाषिक कीजिए।
11. बजट के किसी एक उद्देश्य की व्याख्या करें।
12. राजस्व घाटे से क्या अभिप्राय है?
13. राजकोषीय घाटा क्या होता है?
14. प्राथमिक घाटे से क्या अभिप्राय है?
15. बजटीय घाटे से क्या अभिप्राय है?
16. घाटे के बजट से क्या अभिप्राय है?
17. प्रत्यक्ष कर को परिभाषित कीजिए।
18. प्रत्यक्ष करों के दो उदाहरण लिखें।
19. अप्रत्यक्ष करों को परिभाषित करें।
20. अप्रत्यक्ष करों के दो उदाहरण लिखें।
21. 'कर' से आप क्या समझते हो?
22. अतिरेक बजट (बचत का बजट) को परिभाषित कीजिए।
23. संतुलित बजट से क्या अभिप्राय है?
24. बजटीय प्राप्तियों या सरकारी प्राप्तियों से आप क्या समझते हो?

25. बजटीय व्यय से क्या अभिप्राय है?

26. एक सरकारी बजट में ब्याज भुगतान 8000 करोड़ रू. है और प्राथमिक घाटा 10,000 करोड़ रू. है। राजकोषीय घाटे की गणना करें।

27. असंतुलित बजट की परिभाषा दें।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

28. कर प्राप्तियां, पूंजीगत प्राप्तियों क्यों नहीं है?

29. सरकारी बजट में प्राथमिक घाटा 4400 करोड़ रू. है। ब्याज के भुगतान के रूप में राजस्व व्यय 400 करोड़ रू. है। राजकोषीय घाटा क्या होगा?

30. सरकारी बजट में राजस्व घाटा 50,000 करोड़ रू. है और उधार 75,000 करोड़ रू. है। राजकोषीय घाटा क्या होगा?

31. ऋणों की अदायगी को पूंजीगत व्यय क्यों माना जाता है?

32. सरकारी ऐसी प्राप्तियों पर क्यों निर्भर करती है जिनसे देनदारियां बढ़ती हैं या परिसम्पत्तियों में कमी आती है?

3-4 अंक वाले लघु उत्तर वाले प्रश्न

1. सरकारी बजट के कोई तीन/चार उद्देश्य लिखें।

अथवा

सरकारी बजट के महत्व के कोई तीन/चार बिन्दु लिखें।

अथवा

सरकारी बजट की आवश्यकता क्यों है?

2. सरकारी प्राप्तियों के मुख्य तीन/चार स्त्रोत लिखिए।

3. राजस्व प्राप्तियों तथा पूंजीगत प्राप्तियों में अंतर के कोई तीन बिन्दुओं के बारे में लिखिए।

4. राजस्व व्यय तथा पूंजीगत व्यय में अंतर लिखें (कोई तीन बिन्दु)

5. बजटीय घाटे तथा राजकोषीय घाटे में अंतर लिखें।

6. प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों में अंतर लिखिए। प्रत्येक के दो उदाहरण दें।

7. राजस्व घाटा क्या है? इसके क्या प्रभाव पड़ते हैं?

8. राजकोषीय घाटा क्या है? इसके क्या प्रभाव पड़ते हैं?

9. प्राथमिक घाटा क्या है? इसके क्या प्रभाव पड़ते हैं?

10. कारण बताते हुए निम्नलिखित को राजस्व प्राप्तियों तथा पूंजीगत प्राप्तियों में वर्गीकृत कीजिए।

    (क) ऋणों की वसूली

    (ख) निगम कर

    (ग) सरकार द्वारा किये गये निवेश पर लाभांश

    (घ) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम की बिक्री

11. कारण बताते हुए निम्नलिखित को राजस्व व्यय तथा पूँजीगत व्यय में वर्गीकृत करिये।

    (क) आर्थिक सहायता

    (ख) राज्य सरकार को दी गई ग्रान्ट्स (आर्थिक सहायता)

    (ग) ऋणों की अदायगी

    (घ) विद्यालय–भवन का निर्माण

12. सार्वजनिक या सरकारी व्यय की मुख्य मदें लिखो।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुf(कौशलद्ध

13. राजकोषीय घाटे को न्यूनतम क्यों रखना चाहिये। इसके प्रभाव स्पष्ट करिये।

14. क्या एक देश के लिए संतुलित बजट लाभकारी है?

दीर्घ उत्तर वाले प्रश्न

1. राजकोषीय घाटा क्या है? इसकी वित्तव्यवस्था कैसे की जाती है? इससे उत्पन्न होने वाली समस्याएँ कौन–कौन सी हैं?

2. राजस्व प्राप्तियाँ और पूँजीगत प्राप्तियों से क्या अभिप्राय हैं? इनके मुख्य स्रोत क्या हैं?

3. सरकारी बजट के मुख्य उद्देश्य क्या है? अर्थव्यवस्था पर बजट के प्रभावों की व्याख्या करिये।

4. घाटे की वित्त व्यवस्था से क्या अभिप्राय है? इसके मुख्य स्रोत कौन–कौन से हैं?

1 अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. एक वित्तीय वर्ष में सरकार की अनुमानित आय एवं व्यय का मदवार विवरण सरकारी बजट कहलाता है।

2. राजस्व बजट से अभिप्राय है सरकार की अनुमानित राजस्व प्राप्तियों तथा इनके द्वारा पूरे किए जाने वाले अनुमानिक व्ययों का वित्तीय विवरण।

3. वे सरकारी प्राप्तियाँ जिनसे (i) देनदारियाँ उत्पन्न नहीं होती या (ii) परिसम्पत्तियाँ कम नहीं होती, राजस्व प्राप्तियाँ कहलाती हैं।

4. आयकर, बिक्री कर

5. ब्याज तथा लाभांश, लाइसेंस फीस।

6. वे सरकारी प्राप्तियाँ जिनसे (i) देनदारियाँ बढ़ती हैं या (ii) परिसम्पत्तियाँ कम होती हैं, पूंजीगत प्राप्तियाँ कहलाती हैं।

7. (i) सार्वजनिक ऋण

   (ii) भारतीय रिजर्व बैंक से लिया गया उधार।

8. जिस व्यय से (i) न तो परिसंपत्तियों का निर्माण होता है और (ii) न ही देनदारियों में कमी आती है, उसे राजस्व व्यय माना जाता है?

9. जिस व्यय से (i) परिसम्पत्तियों का निर्माण हो या (ii) देनदारियों में कमी आए, वह पूंजीगत व्यय कहलाता है।

10. पूंजीगत बजट सरकारी बजट का वह भाग है जिसमें सरकार की पूंजीगत प्राप्तियों तथा पूंजीगत व्ययों का विवरण होता है।

11. आर्थिक असमानताओं में कमी :

    सरकार सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, आर्थिक सहायता, सार्वजनिक कार्यों पर व्यय करके आय तथा धन का पुनर्वितरण करती है ताकि आर्थिक असमानताएँ कम की जा सकें।

12. राजस्व घाटे से अभिप्राय सरकार की राजस्व प्राप्तियों की तुलना में राजस्व व्यय के अधिक होने से है।

13. जब सरकार का कुल व्यय, कुल प्राप्तियों से अधिक (उधार छोड़कर) होता है तो इसे राजकोषीय घाटा कहा जाता है।

14. राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदायगियाँ घटाने पर जो शेष राशि बचती है, उसे प्राथमिक घाटा कहते हैं?

15. जब सरकार का कुल व्यय कुल प्राप्तियों से अधिक होता है तो इसे बजटीय घाटा कहते हैं।

16. जब सरकार का अनुमानित व्यय सरकार की अनुमानित प्राप्तियों से अधिक होता है तो इसे घाटे का बजट कहते हैं।

17. जो कर वास्तव में उसी व्यक्ति को अदा करने पड़ते हैं जिस पर वे कानूनी रूप से लगाए जाते हैं तो उन्हें प्रत्यक्ष कर कहते हैं।

    या

    जब कर अदा करने की देनदारी तथा कर का भार एक ही व्यक्ति को सहन करना पड़ता है तो उसे प्रत्यक्ष कर कहते हैं।

18. आय कर, निगम कर, उपहार कर, संपत्ति कर आदि।

19. जब कर अदा करने की देनदारी एक व्यक्ति पर पड़ती है परन्तु इसका भार आंशिक रूप से या पूरी तरह दूसरे व्यक्ति पर पड़ता है तो उसे अप्रत्यक्ष कर कहते हैं।

20. उत्पादन कर, बिक्री कर।

21. कर एक अनिवार्य भुगतान है जो बदले में बिना किसी सेवा की आशा में व्यक्तियों, गहस्थों या फर्मों द्वारा सरकार को अदा किया जाता है।

22. यदि बजट में सरकारी प्राप्तियां सरकारी व्यय से अधिक हैं तो इसे अतिरेक बजट कहा जाता है।

23. उस सरकारी बजट को संतुलित बजट कहा जाता है जिसमें सरकार की अनुमानित प्राप्तियाँ, अनुमानित व्यय के बराबर दिखाई गई हों।

24. बजटीय प्राप्तियाँ सरकार की वे अनुमानित प्राप्तियाँ हैं जो एक वित्तीय वर्ष में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती हैं।

25. बजटीय व्यय वह अनुमानित व्यय है जो एक वित्तीय वर्ष में सरकार द्वारा विभिन्न मदों पर किया जाता हैं।

26. 18,000 करोड़ रूपए।

27. असंतुलित बजट वह बजट है जिसमें सरकार की अनुमानित प्राप्तियाँ, अनुमानित व्यय के बराबर नहीं होती।

28. कर प्राप्तियाँ पूंजीगत प्राप्तियां नहीं होती क्योंकि इनसे न तो दायित्व उत्पन्न होते हैं तथा न ही परिसंपत्तियां कम होती हैं।

29. राजकोषीय घाटा = प्राथमिक घाटा + ब्याज अदायगी

= 4400 करोड़ + 400 करोड़

= 4800 करोड़ रूपए

30. 75,000 करोड़ रूपए।

31. क्योंकि इससे सरकार के दायित्वों में कमी आती है?

32. जब सरकार की चालू आय (वतर्मान) कुल व्ययों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त होती है तो सरकार ऐसी प्राप्तियों पर निर्भर रहती है।

यूनिट 10

भुगतान शेष

- भुगतान संतुलन किसी देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसंपत्तियों का वार्षिक विवरण होता है।
- भुगतान संतुलन के मुख्य दो खाते होते हैं:
  - (i) चालू खाता
  - (ii) पूंजी खाता
- चालू खाते में वस्तुओं के आयात–निर्यात, सेवाओं और अंतरण अदायगियों के विवरण दर्ज किए जाते हैं।
- पूंजी खाते में परिसंपत्तियाँ जैसे मुद्रा स्टॉक, बंध पत्र आदि सभी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय क्रय–विक्रय का विवरण होता है।
- कोई देश जिसके चालू खाते में घाटा होता है उसे अपनी परिसंपत्ति बेचकर या विदेशी ऋण लेकर उस कमी के लिए वित्त की व्यवस्था करनी पड़ती है। इस प्रकार किसी भी चालू खाते के घाटे को निवल पूंजीगत प्रवाह से वित्तपोषित करना आवश्यक है।
- विदेशी विनिमय से अभिप्राय विदेशी करेंसी अर्थात देशीय करेंसी को छोड़कर अन्य सारी करेंसियों को विदेशी विनिमय कहा जाता है।
- जिस दर पर एक देश की करेंसी का दूसरे देश की करेंसी में विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहते है।
- स्थिर विनिमय दर व्यवस्था का सार स्वर्णमान था जिसमें प्रत्येक सहभागी देश एक निश्चित कीमत पर अपने देश की मुद्रा को स्वतन्त्र रुप से स्वर्ण में परिवर्तित करने के लिये प्रतिबद्ध रहता था।
- नम्य विनिमय दर प्रणाली (जिसे तिरती विनिमय दर भी कहते है) में विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा की मांग व पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है।
- विदेशी विनिमय की मांग के स्रोत
  - (क) वस्तुएं व सेवायें खरीदने के लिये
  - (ख) विदेशों में वित्तीय परिसंपत्तियाँ (जैसे–बांड, शेयर) खरीदने के लिये
  - (ग) विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिये
  - (घ) विदेशों में प्रत्यक्ष निवेश (जैसे–दुकान, मकान, फैक्टरी खरीदना) के लिये
  - (ड़) विदेशों में जाने वाले पर्यटकों की विदेशी–विनिमय की मांग पूरी करने के लिये।

- विदेशी विनिमय की पूर्ति के स्त्रोत
  - (क) विदेशियों द्वारा बाजार में प्रत्यक्ष (वस्तुओं व सेवाओं) की खरीद
  - (ख) विदेशियों द्वारा निवेश
  - (ग) विदेशी पर्यटकों का हमारे देश में भ्रमण
  - (घ) विदेशों में रहने वाले अनिवासी भारतीयों द्वारा भेजा गया धन या प्रेषणाएँ
  - (ड़) वस्तुओं एवं सेवाओं का निर्यात
- देशीय मुद्रा का हास तब होता है जब देशीय मुद्रा इकाईयों में विदेशी मुद्रा की कीमत में वद्धि हो अर्थात देशी करैंसी की कीमत में गिरावट।
- मुद्रा अधिमूल्यन तब होता है जब देशीय मुद्रा की इकाइयों में विदेशी मुद्रा की कीमत कम हो जाये अर्थात देशीय करैंसी की कीमत में विदेशी मुद्रा के रुप में वद्धि।
- संतुलन नम्य विनिमय दर का निर्धारण उस स्तर पर होगा जहाँ विदेशी विनिमय के लिये मांग और विदेशी विनिमय की पूर्ति बराबर हो जाये।
- नम्य विनिमय दर के गुण
  - (i) विदेशी मुद्राओं के भंडार की आवश्यकता नहीं
  - (ii) संसाधनों का सर्वोतम आबंटन
  - (iii) भुगतान संतुलन खाते में स्वतः समायोजन
  - (iv) व्यापार और पूँजी के आवागमन में आने वाली रुकावटों को दूर करना

  नम्य विनिमय दर के दोष
  - (i) भविष्य गामी विनिमय दर में अत्यधिक अस्थिरता
  - (ii) सट्टेबाजी को बढ़ावा
  - (iii) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश को हतोत्साहित करना

  स्थिर विनिमय दर के गुण
  - (i) विनिमय दर में स्थिरता
  - (ii) पूंजी के आवागमन तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार को प्रोत्साहन
  - (iii) सट्‌टेबाजी का अभाव

स्थिर विनिमय दर के दोष

(i) अन्तर्राष्ट्रीय निधि के स्टॉक की आवश्यकता

(ii) भुगतान संतुलन में स्वतः समायोजन का अभाव

- प्रबंधित तरणशीलता एक ऐसी प्रणाली है जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय समय पर आवश्यकता के अनुसार दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है।

1 अंक वाले प्रश्न

1. व्यापार शेष से क्या अभिप्राय है?
2. भुगतान शेष से क्या अभिप्राय है?
3. कौन सी दो मदें व्यापार शेष का निर्धारण करते हैं?
4. व्यापार शेष में घाटा कब होता है?
5. व्यापार शेष में घाटा 5000 करोड़ रु॰ है आयात का मूल्य 1000 करोड़ रू. है। निर्यात का मूल्य कितना है?
6. व्यापार शेष में 300 करोड़ रू. का घाटा है। निर्यात का मूल्य 500 करोड़ रू. है। आयात का मूल्य कितना है?
7. एक देश का व्यापार शेष 100 करोड़ रू. है और वस्तुओं के निर्यात का मूल्य 175 करोड़ रू. है। वस्तुओं के आयात का मूल्य ज्ञात कीजिए।
8. व्यापार खाते में अधिशेष (अतिरेक) कब होगा?
9. भुगतान संतुलन खाते में दश्य मदों के शेष को क्या कहा जाता है?
10. भुगतान संतुलन (शेष) खातें में क्या दिखाया जाता है?
11. व्यापार शेष खाते की दो मदों के नाम लिखिए।
12. भुगतान संतुलन के पूंजी खाते की दो मदों के नाम लिखें।
13. वस्तुओं के निर्यात और वस्तुओं के आयात के मूल्यों में अन्तर को किस नाम से जाना जाता है?
14. दश्य मदों से आप अभिप्राय है?
15. दश्य मदों के दो उदाहरण लिखिए।
16. अदश्य मदों से क्या अभिप्राय है?
17. अदश्य मदों के कोई दो उदाहरण दें।
18. भुगतान शेष के प्रमुख दो खातों के नाम लिखिए।

19. एक पक्षीय अंतरण किसे कहते हैं?

20. एक पक्षीय अंतरण के कोई दो उदाहरण दीजिये?

21. स्वायत्त या स्वप्रेरित संव्यवहार किसे कहते हैं?

22. भुगतान शेष के चालू खाते से क्या अभिप्राय है?

23. भुगतान शेष के पूंजी खाते से क्या अभिप्राय है?

24. निम्न में से कौन सी दृश्य कौन सी अदृश्य मद है?

    (i) जूट पदार्थों का निर्यात (ii) साफ्टवेयर सेवा का निर्यात

25. विदेशी विनिमय से क्या अभिप्राय है?

26. विदेशी विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?

27. स्थिर विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?

28. नम्य विनिमय दर से क्या अभिप्राय है?

29. नम्य विनिमय दर का निर्धारण करने वाली शक्तियों के नाम लिखिए।

30. किसी अर्थव्यवस्था की आर्थिक स्थिरता की सूचना का श्रोत क्या है।

31. नम्य विनिमय दर के दो गुण लिखो।

32. नम्य विनिमय दर के दो दोष लिखिए।

33. स्थिर विनिमय दर के दो गुण लिखिए।

34. स्थिर विनिमय दर के दो दोष लिखिए।

35. विदेशी विनिमय के मांगवक्र का आकार कैसा होता है?

36. विदेशी विनिमय के पूर्ति वक्र का आकार कैसा होता है?

37. विदेशी विनिमय बाजार से क्या अभिप्राय है?

38. विदेशी विनिमय बाजार के दो कार्य लिखिए।

39. विदेशी विनिमय के मांग वक्र का ढलान ऋणात्मक क्यों होता है?

40. विदेशी विनिमय के पूर्ति वक्र का ढलान धनात्मक क्यों होता है?

41. विदेशी विनिमय दर के बढ़ने से इसकी मांग कम क्यों हो जाती हैं?

42. विदेशी विनिमय दर के बढ़ने से इसकी पूर्ति क्यों बढ़ जाती है?

43. यदि विदेशी विनिमय दर बढ़ जाती है तो निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

44. यदि विदेशी विनिमय दर कम हो जाती है तो आयात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

45. विदेशी विनिमय दर कम होने से निर्यात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

46. विदेशी विनिमय दर कम होने से आयात पर क्या प्रभाव पड़ता है?

47. निम्नांकित विनिमय दर में परिवर्तन क्या प्रदर्शित करता है यदि $4 = £1 विनिमय दर $2 = £1 विनिमय दर हो जाने पर।

HOTS ;उच्च स्तरीय बुि(कौशलद्ध

48. किस अवस्था में मुद्रा का अवमूल्यन अर्थव्यवस्था के लिए उचित हो सकता है?

49. किस अवस्था में मुद्रा का अधिमूल्यन अर्थव्यवस्था के लिए अनुचित हो सकता है?

50. किस अवस्था में घरेलू मुद्रा की तुलना में विदेशी मुद्रा की क्रय शक्ति बढ़ती है?

51. किस मद की सहायता से भुगतान संतुलन को संतुलित किया जा सकता है?

52. क्या भुगतान संतुलन सदैव संतुलित होता है?

53. शेष विश्व से किए गए लेखों को किस आधार पर चालू तथा पूंजी खाते में वर्गीकृत किया जाता है?

54. प्रबंधित तरणशीलता प्रणाली क्या है?

3-4 अंकों वाले प्रश्न

1. व्यापार शेष तथा भुगतान शेष में अंतर लिखिए।
2. भुगतान शेष के चालू एवं पूंजी खाते में अंतर बताइए।
3. भुगतान संतुलन में घाटे की पूर्ति किन स्रोतों से की जाती है?
4. अनुकूल व्यापार शेष तथा प्रतिकूल व्यापार शेष में अंतर स्पष्ट करें।
5. भुगतान संतुलन में घाटे के मुख्य कारणों की व्याख्या करें।
6. भुगतान शेष खाते में स्वप्रेरित तथा समायोजक मदों में क्या अंतर है?
7. व्यापार की दश्य तथा अदश्य मदों में अंतर स्पष्ट करें।
8. विदेशी विनिमय की मांग के तीन कारण दें।
9. विदेशी विनिमय की पूर्ति के प्रमुख स्रोत लिखिए।

10. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी मांग में संबंध की व्याख्या करें।

11. विदेशी विनिमय दर तथा इसकी पूर्ति में संबंध की व्याख्या करें।

12. मुद्रा के अधिमूल्यन तथा अवमूल्यन में अंतर की व्याख्या करें।

13. विदेशी विनिमय एवं विदेशी विनिमय दर में अन्तर की व्याख्या करें।

14. विदेशी विनिमय दर के बढ़ने पर विदेशी विनिमय की मांग कम क्यों हो जाती है?

15. विदेशी विनिमय दर के कम होने पर विदेशी विनिमय की मांग में वद्धि क्यों हो जाती है?

16. विदेशी विनिमय बाजार के कार्यों की व्याख्या करें।

17. स्थिर विनिमय दर प्रणाली के गुणों तथा दोषों की व्याख्या करें।

18. नम्य विनिमय दर के गुणों तथा दोषों की व्याख्या करें।

19. किसी अर्थव्यवस्था में नम्य विनिमय दर किस प्रकार निर्धारित होती है? चित्र बनाकर व्याख्या करें।

20. मुद्रा के अधिमूल्यन का विदेशी विनिमय की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

21. मुद्रा के अधिमूल्यन का विदेशी विनिमय की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

22. मुद्रा के अवमूल्यन का विदेशी विनिमय की मांग पर क्या प्रभाव पड़ता है?

23. मुद्रा के अवमूल्यन का विदेशी विनिमय की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है?

24. व्यापार शेष प्रतिकूल, अनुकूल या संतुलित हो सकता है परन्तु भुगतान संतुलन लेखा दष्टि से सदैव संतुलित रहता है।

25. ''किसी भी अर्थव्यवस्था में चालू खाते में घाटा खतरे की घंटी है।'' व्याख्या करें।

एक अंक वाले प्रश्नों के उत्तर

1. दश्य मदों के निर्यात मूल्य तथा आयात मूल्य के अंतर को व्यापार शेष या व्यापार संतुलन कहते हैं।
2. भुगतान संतुलन में किसी एक देश के निवासियों और शेष विश्व के बीच वस्तुओं, सेवाओं और परिसंपत्तियों के लेन देन का विवरण दर्ज होता है।
3. दश्य मदों का आयात तथा निर्यात जैसे चावल, गेहूँ, चीनी आदि।
4. जब आयात की गई दश्य मदों का मूल्य, निर्यात की गई दश्य मदों के मूल्य से अधिक होता है।
5. 400 करोड़ रू.।
6. 800 करोड़ रू.।
7. 75 करोड़ रू.।

8. जब एक वर्ष में निर्यात की जाने वाली दृश्य मदों का मूल्य आयात के मूल्य से अधिक होता है।

9. व्यापार शेष या व्यापार संतुलन।

10. भुगतान शेष खाता एक निश्चित अवधि अर्थात वित्तीय वर्ष में एक निश्चित अवधि अर्थात वित्तीय वर्ष में किसी देश के शेष विश्व के साथ सभी लेन–देन का सार होता है।

11. सभी दृश्य मदों का आयात तथा निर्यात।

12. (i) विदेशी निवेश।

    (ii) विदेशों से ऋण।

13. व्यापार शेष या व्यापार संतुलन

14. दृश्य मदें उन सभी भौतिक वस्तुओं को कहा जाता है जिनका एक लेखा वर्ष में आयात या निर्यात किया जाता है।

15. घड़ियां, पेट्रोल, कपड़े फ्रिज आदि।

16. अदृश्य मदें उन सभी सेवाओं को कहा जाता है।

17. जहाजरानी, बैंकिंग, बीमा, पर्यटन आदि।

18. (i) चालू खाता

    (ii) पूंजी खाता

19. ये ऐसी प्राप्तियाँ होती है जो किसी देश के निवासियों को निशुल्क प्राप्त होती हैं और उनके बदले में उन्हें भविष्य या वर्तमान में कोई अदायगी नहीं करनी पड़ती।

20. अनिवासियों द्वारा

    (i) उपहार

    (ii) अनुदान

21. अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक संव्यवहार जब लाभ के उद्देश्य से स्वतन्त्र रूप से सरकार के द्वारा किया जाता है तो ऐसे संव्यवहार को स्वायत या स्वप्रेरित कहते हैं।

22. भुगतान संतुलन का चालू खाता वह खाता है जिसमें दृश्य व अदृश्य मदों का आयात–निर्यात तथा एक पक्षीय अन्तरणों का लेखा–जोखा रखा जाता है।

23. भुगतान संतुलन का पूंजी खाता वह खाता है जिसमें परिसंपत्तियों जैसे मुद्रा, स्टॉक, बंधपत्र आदि सभी प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय क्रय–विक्रयों का विवरण होता है।

24. (i) दृश्य मदें (ii) अदृश्य मदें।

25. विदेशी विनिमय से अभिप्राय विदेशी करेंसी अर्थात् देशीय करेंसी को छोड़कर अन्य सभी करेसियों से है।

26. जिस दर पर एक देश की करेंसी का दूसरे देश की करेंसी में विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय दर कहा जाता है।

27. स्थिर विनिमय दर व्यवस्था का अर्थ स्वर्णमान था जिसमें प्रत्येक सहभागी देश एक निश्चित कीमत पर अपने देश की मुद्रा को स्वतंत्र रूप से स्वर्ण में परिवर्तित करने के लिए प्रतिबद्ध रहता था

28. नम्य विनिमय दर प्रणाली में विनिमय दर का निर्धारण विदेशी मुद्रा की मांग और पूर्ति की शक्तियों द्वारा होता है।

29. (i) विदेशी विनिमय की बाजार मांग

(ii) विदेशी विनिमय की बाजार पूर्ति।

30. विदेशी विनिमय दर।

31. (i) विदेशी मुद्राओं के भंडार की आवश्यकता नहीं।

(ii) संसाधनों का सर्वोत्तम आबंटन।

32. (i) भविष्यगामी विनिमय दर में अस्थिरता।

(ii) सट्टेबाजी को बढ़ावा।

33. (i) विनिमय दर से स्थिरता।

(ii) सट्टेबाजी का अभाव होना।

34. (i) विदेशी विनिमय के स्टॉक की आवश्यकता।

(ii) भुगतान संतुलन में स्वतः समायोजन का अभाव।

35. ऋणात्मक ढलान।

36. धनात्मक ढलान।

37. विदेशी विनिमय बाजार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें विदेशी मुद्राओं का क्रय–विक्रय होता है।

38. (i) विदेशी मुद्रा का अंतर्राष्ट्रीय हस्तांतरण।

(ii) विदेशी व्यापार के लिए ऋण देना।

39 क्योंकि विदेशी विनिमय दर तथा विदेशी विनिमय की मांग में ऋणात्मक संबंध होता है।

40. क्योंकि विदेशी विनिमय दर तथा विदेशी विनिमय की पूर्ति में धनात्मक संबंध होता है।

41. क्योंकि भारतीयों के लिए विदेशी वस्तुएँ महँगी हो जाती है, इसलिए वे कम आयात करते हैं।

42. क्योंकि विदेशियों के लिए भारतीय वस्तुएँ सस्ती हो जाती है, इसलिए निर्यात की मात्रा बढ़ जाती है।

43. निर्यात में वद्धि होगी।

44. आयात कम हो जाएगा।

45. निर्यात कम हो जाएगा।

46. आयात बढ़ जाएगा।

47. डॉलर पौन्ड की तुलना में मजबूत (महँगा) हो गया। अन्य शब्दों में पौन्ड का अवमूल्यन हो गया।

48. जब हम निर्यात संवर्धन की नीति अपनाते हैं।

49. जब हम आयात प्रतिस्थापन की नीति को अपनाते हैं।

50. जब घरेलू मुद्रा का अवमूल्यन किया जाता है।

51. अन्तर्राष्ट्रीय ऋणों की सहायता से।

52. भुगतान संतुलन में असंतुलन हो सकता है, परंतु लेखांकन दष्टि से यह सदैव संतुलित रहता है।

53. विदेशों के साथ सरकार की परिसंपत्तियों तथा दायित्वों में परिवर्तन के आधार पर।

54. प्रबंधित तरणशीलता एक ऐसी प्रणाली है जिसमें केन्द्रीय बैंक विदेशी विनिमय दर के निर्धारण को बाजार शक्तियों पर छोड़ देता है परन्तु समय समय पर आवश्यकता पड़ने पर विनिमय दर को प्रभावित करने के लिए हस्तक्षेप भी करता है।

QUESTION PAPER SET I

अर्थशास्त्र

निर्धारित समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

सामान्य निर्देश

(i) दोनों खंडो के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक उसके सामने दिए गए हैं।

(iii) प्रश्न संख्या 1 से 5 ओर 17 से 21 अति लघुत्तरात्मक प्रश्न हैं, जिनका प्रत्येक प्रश्न एक–एक अंक का है इनका उत्तर केवल एक वाक्य में ही अपेक्षित है।

(iv) प्रश्न संख्या 6 से 10 तथा 22 से 26 तक लघूत्तरात्मक प्रश्न हैं, जिनमें प्रत्येक के लिए तीन–तीन अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 60 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(v) प्रश्न संख्या 11 से 13 और 27 से 29 भी लघूत्तरात्मक प्रश्न हैं, जिनमें प्रत्येक के लिए चार–चार अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 70 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(vi) प्रश्न संख्या 14 से 16 और 30 से 32 व्याख्यात्मक प्रश्न हैं, जिनमें प्रत्येक के लिए 6–6 अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।

(vii) उत्तर संक्षिप्त तथा तथ्यात्मक होने चाहिए तथा ऊपर दी गई सीमा के अंतर्गत ही दिए जाने चाहिए।

खण्ड 'अ'

1. वस्तु की इकाईयों का लगातार उपभोग करने पर अधिकतम होने तक कुल उपयोगिता घटती दर से क्यों बढ़ती है?

2. बाजार पूर्ति से क्या अभिप्राय है?

3. परिवर्ती लागतों के दो उदाहरण लिखिए।

4. जब किसी वस्तु की कीमत गिर रही हो तो सीमांत संप्राप्ति किस दर से गिरती है?

5. किस प्रकार के बाजार में एक फर्म की मांग की लोच कम लोचदार होती है?

6. कुल उपयोगिता में क्या परिवर्तन होगा जबकि

   (i) सीमांत उपयोगिता 'X' अक्ष के ऊपर स्थित हो

   (ii) सीमांत उपयोगिता 'X' अक्ष को स्पर्श कर रही हो।

(iii) सीमांत उपयोगिता 'X' अक्ष के नीचे स्थित हो।

7. अल्पाधिकार की तीन विशेषताएं लिखिए।

अथवा

एकाधिकार व अल्पाधिकार बाजार में अंतर स्पष्ट कीजिए।

8. निम्नलिखित कथन सही है या गलत। कारण बताइए।

   (i) बाजार काल में पूर्ति में परिवर्तन संभव नहीं होता।

   (ii) भविष्य में कीमत वद्धि की संभावना वर्तमान में बाजार पूर्ति में वद्धि कर देती है।

9. TR और TC विधि के अन्तर्गत उत्पादन के संतुलन की तीन शर्तें लिखिए।

10. सीमांत लागत तथा औसत लागत में संबंध बताइए।

11. बाजार आधारित अर्थव्यवस्था और केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था में अंतर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

सकारात्मक आर्थिक विश्लेषण और आदर्शात्मक आर्थिक विश्लेषण में अंतर बताइए।

12. उदाहरण की सहायता से स्पष्ट कीजिए—

   (i) पूरक वस्तु की मांग में कमी हो जाए।

   (ii) प्रतिस्थापन वस्तु की मांग में वद्धि हो जाए।

13. वस्तु की मांग की कीमत लोच 2 है। कीमत में परिवर्तन होने से मांग मात्रा 400 इकाई से घटकर 300 इकाई रह जाती है। परिवर्तित कीमत ज्ञात कीजिए। जबकि प्रारम्भिक कीमत 40 रू. प्रति इकाई है।

14. संतुलन कीमत और उत्पादन की मात्रा पर क्या प्रभाव पड़ेगा जबकि :

   (i) मांग में आनुपातिक वद्धि पूर्ति में आनुपातिक वद्धि से अधिक हो।

   (ii) मांग में आनुपातिक वद्धि पूर्ति में आनुपातिक वद्धि से कम हो।

   (iii) मांग में आनुपातिक वद्धि पूर्ति में आनुपातिक वद्धि के बराबर हो।

15. पूर्ण प्रतियोगिता की निम्नलिखित विशेषताओं के प्रभाव समझाइए :

   (i) एक समान उत्पाद

   (ii) फर्मों को प्रवेश और निकास में स्वतंत्रता

   (iii) क्रेताओं और विक्रेताओं की अत्यधिक संख्या।

16. परिवर्ती अनुपातों के नियम में कुल उत्पाद में परिवर्तन के विभिन्न चरण क्या है? रेखाचित्र का प्रयोग कीजिए।

नोट : निम्नलिखित प्रश्न केवल दष्टिहीन परिक्षार्थियों के लिए प्रश्न संख्या 16 के स्थान पर है।

परिवर्ती अनुपातों के नियम में कुल उत्पाद में परिवर्तन के विभिन्न चरण क्या है? अनुसूची का प्रयोग कीजिए।

खण्ड 'ब'

17. अनैच्छिक बेरोजगारी की परिभाषा दीजिए।

18. गुणक का मूल्य 5 है। सीमांत उपभोग प्रवत्ति का मूल्य ज्ञात करो।

19. राजकोषीय घाटे से क्या अभिप्राय है?

20. एक देश का व्यापार शेष 110 करोड़ रू. है और वस्तुओं के निर्यात का मूल्य 185 करोड़ रू. है। वस्तुओं के आयात का मूल्य ज्ञात कीजिए।

21. मुद्रा का क्या अर्थ है?

22. अ ने ब को माल बेचा 400 रू. में और स को 200 रू. में। उपभोक्ता कुल व्यय को दो वस्तुओं B और C में बराबर बांट देता है। राष्ट्रीय आय रू. 1000 है। ब व स का वर्धित मूल्य ज्ञात कीजिए।

23. दोहरे संयोग के अभाव की समस्या को मुद्रा किस प्रकार हल करती है? बताइए।

24. निम्न कारण बताते हुए राजस्व व्यय तथा पूंजीगत व्यय में वर्गीकृत कीजिए।

    (i) शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवाए

    (ii) ऋणों की वापसी

    (iii) आर्थिक सहायता

25. भुगतान संतुलन खाते से क्या अभिप्राय है? विदेशों से लिया गया ऋण, इस खाते में कहाँ दर्ज किया जाता है और क्यों?

26. विदेशी विनिमय दर से क्या अभिप्राय है? विदेशी विनिमय की मांग के कोई दो कारण लिखिए।

27. प्राथमिक घाटे से क्या अभिप्राय है? इसके कोई तीन प्रभावों की व्याख्या कीजिए।

28. केन्द्रीय बैंक, बैंकों का बैंकर व निरीक्षक है। व्याख्या कीजिए।

अथवा

वाणिज्यिक बैंको का 'जमाएँ स्वीकारक' कार्य समझाइए।

29. निवेश गुणक का अर्थ बताइए। निवेश गुणक का सीमांत उपभोग प्रवत्ति से सम्बन्ध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

अवस्फीति अंतराल क्या है? इसे दूर करने के दो राजकोषीय उपाय बताइए।

30. निम्न आंकड़ों की सहायता से इनकी गणना कीजिए।

(i) निजी आय (ii) वैयक्तिक आय तथा (ii) वैयक्तिक प्रयोज्य आय।

		(करोड़ रू. में)
(i)	गहस्थों का उपभोग व्यय	1,000
(ii)	बचतें	235
(iii)	प्रत्यक्ष कर	40
(iv)	निगम लाभ कर	15
(v)	राष्ट्रीय ऋण पर ब्याज	10
(vi)	निजी निगमित क्षेत्र की बचतें	25
(vii)	सम्पत्ति व उद्यमवत्ति से आय	35
(viii)	सरकार से चालू हस्तांतरण	30
(ix)	गैर विभागीय उद्यमों की बचतें	05
(x)	शेष विश्व से हस्तांतरण	15

अथवा

निम्न आंकड़ों की सहायता से इनकी गणना कीजिए।

(i) आय विधि द्वारा GDP_{MP}

(ii) व्यय विधि द्वारा – राष्ट्रीय आय ($N.N.P._{FC}$)

		(करोड़ रू. में)
(i)	कर्मचारियों का पारिश्रमिक	13,000
(ii)	अप्रत्यक्ष कर	3,700
(iii)	सकल घरेलू पूंजी निर्माण	7,300
(iv)	Interest ब्याज	1,000
(v)	किराया	1,500
(vi)	लाभ	2,500
(vii)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	3,400

(viii)	मिश्रित आय	16,000
(ix)	स्टॉक में परिवर्तन	1,000
(x)	वस्तुओं व सेवाओं का आयात	1,800
(xi)	वस्तुओं व सेवाओं का निर्यात	1,700
(xii)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	29,000
(xiii)	आर्थिक सहायता	300
(xiv)	विदेशों से अर्जित शुद्ध साधन आय	(–)250
(xv)	निवल घरेलू पूंजी निर्माण	2,800

31. क्या निम्न को देशीय कारक आय में शामिल किया जायेगा या नहीं? कारण बताइये।

    (i) दिल्ली स्थित, जर्मन दूतावास द्वारा भारतीय निवासी को दिया गया किराया

    (ii) एक नई कंपनी के शेयरों की बिक्री से प्राप्त आय

    (iii) सिंगापुर स्थित भारतीय बैंक की शाखा का लाभ

32. रेखाचित्र की सहायता से बचत = निवेश की विधि के द्वारा आय और उत्पाद का संतुलन स्तर ज्ञात कीजिए।

अंक योजना

1. घटती सीमांत उपयोगिता का नियम लागू होता है।

2. बाजार में किसी समय विशेष पर वस्तु की विभिन्न कीमतों पर सभी विक्रेताओं की सामूहिक पूर्ति, बाजार पूर्ति कहलाती है।

3. कच्चे माल की लागत, ईंधन।

4. सीमांत संप्राप्ति औसत संप्राप्ति से दुगने दर से गिरती है।

5. एकाधिकार में।

6. (i) कुल उपयोगिता बढ़ती है।

   (ii) कुल उपयोगिता अधिकतम होती है।

   (iii) कुल उपयोगिता गिरना शुरु हो जाती है।

7. (i) बहुत कम फर्में

   (ii) फर्मों में परस्पर निर्भरता

   (iii) नई फर्मों का प्रवेश पर रोक।

अथवा

आधार	*एकाधिकार*	*अल्पाधिकार*
1. क्रेताओं व विक्रेताओं की संख्या	एक विक्रेता लेकिन क्रेताओं की संख्या अधिक	कुछ विक्रेता लेकिन क्रेताओं की अधिक संख्या
2. उत्पाद की प्रकृति	समरूप वस्तुएं एवं विभेदीकृत वस्तुएं	समरूप या विभेदीकृत वस्तुएं
3. कीमत	कीमत विभेदीकरण के कारण कीमतों में असमानता	मांग वक्र की अनिश्चितता

8. (i) सही, क्योंकि बाजार काल अति अल्पकाल समय होता है जिसमें उत्पादन के कारकों को बढ़ाया नहीं जा सकता और पूर्ति पूर्णतया बेलोचदार होती है।

   (ii) गलत, इस स्थिति में उत्पादक पूर्ति में कमी करके उत्पादित माल का भण्डारण करेगा ताकि भविष्य में ऊँची कीमत पर बेच कर अधिक लाभ कमाया जा सके।

9. (i) कुल आगम और कुल लागत के बीच का अंतर अधिकतम होता है।

   (ii) वस्तु का उत्पदन बढ़ाने पर लाभ कम होने लगता है।

   (ii) TR और TC वक्र पर स्पर्शीय रेखा समानान्तर होती है।

10. (i) जब औसत लागत गिरती है सीमांत लागत औसत लागत से कम होती है।

(ii) जब औसत लागत स्थिर होती है सीमांत लागत औसत लागत के बराबर होती है।

(iii) जब औसत लागत बढ़ती है, सीमांत लागत औसत लागत से अधिक होती है।

11.

विशेषताएं	*बाजार अर्थव्यवस्था*	*केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था*
1. संपत्ति का स्वामित्व	निजी स्वामित्व होता है।	सार्वजनिक स्वामित्व
2. कार्य की स्वतंत्रता	होती है।	नहीं होती।
3. उत्पादन का उद्देश्य	लाभार्जन	समाज कल्याण

अथवा

सकारात्मक अर्थशास्त्र	*आदर्शात्मक अर्थशास्त्र*
1. यह 'क्या है?' को दर्शाता है।	1. यह क्या होना चाहिए? को दर्शाता है।
2. यह तथ्य के कारण एवं प्रभाव पर आधारित है।	2. यह सिद्धांतों पर आधारित है।
3. यह वास्तविक स्थिति से संबंध रखता है।	3. यह आदर्शात्मक स्थिति से संबंधित है।

12. (i) किसी वस्तु की कीमत में वद्धि होने पर उसकी पूरक वस्तु की मांग में कमी हो जाती है उदाहरण के लिए पैट्रोल की कीमत बढ़ने पर कार की मांग में कमी आ जाती है।

(ii) किसी वस्तु की प्रतिस्थापन वस्तु की मांग में वद्धि तब होती है जब उस वस्तु की कीमत बढ़ जाती है। उदाहरण के लिए चाय की कीमत बढ़ने पर काफी की मांग बढ़ जाती है।

13.

$$Ed = \frac{P}{Q} \times \frac{\Delta Q}{\Delta P}$$

$Ed = -2 \quad P = 40 \quad Q = 400 \quad Q_1 = 300$

$\Delta P = ?$ $\qquad\qquad$ $\Delta Q = 100$

$$-2 = \frac{\Delta O}{400} \times \frac{100}{-\Delta P}$$

$$-2\Delta P = -10$$

$$-\Delta P = -\frac{10}{2}$$

$$\Delta P = +5$$

$P + \Delta P = 40 + 5 = 45$ **उत्तर**

14. (A) संतुलन कीमत में वद्धि होगी और उत्पादन की मात्रा भी बढ़ जायेगी।

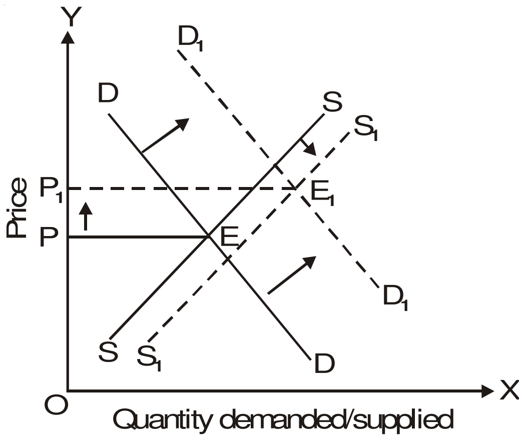

(B) संतुलन कीमत कम हो जायेगी और उत्पादन की मात्रा बढ़ जायेगी

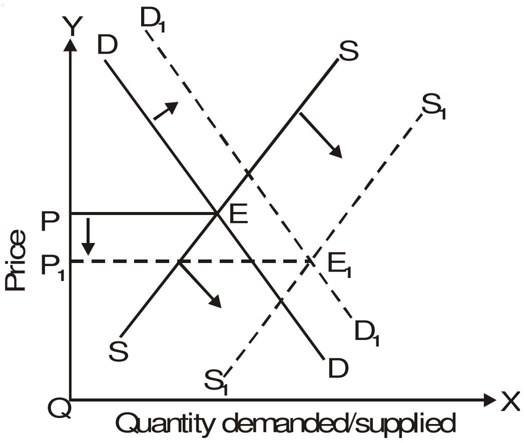

(C) संतुलन कीमत में कोई परिवर्तन नहीं होगा लेकिन संतुलन मात्रा बढ़ जायेगी।

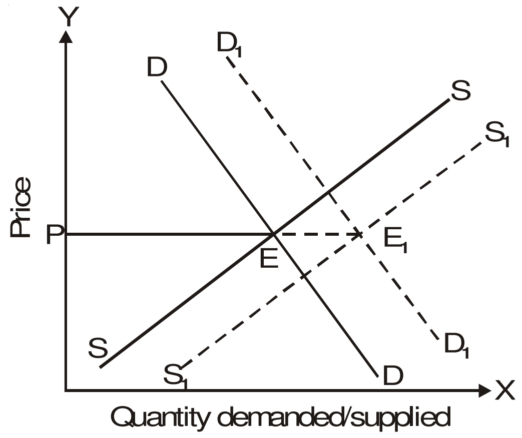

15. (i) सभी फर्में अपने उत्पाद को समान कीमत पर बेचती हैं। अन्यथा कोई भी उपभोक्ता अधिक कीमत पर वस्तु नहीं खरीदेगा।

(ii) सभी फर्में सामान्य लाभ प्राप्त करती हैं क्योंकि उत्पादन जारी रखने के लिए सामान्य लाभ आवश्यक है।

(iii) बाजार में अत्यधिक विक्रेताओं के होने का प्रभाव यह है कि प्रत्येक फर्म द्वारा वस्तु की पूर्ति, बाजार में कुल पूर्ति का बहुत छोटा अंश होता है। इसलिए कोई भी फर्म अपने व्यवहार से बाजार कीमत को प्रभावित नहीं कर सकता। प्रत्येक विक्रेता और क्रेता बाजार में वस्तु की कुल पूर्ति का बहुत थोड़ा भाग बेचता या खरीदता है।

16.

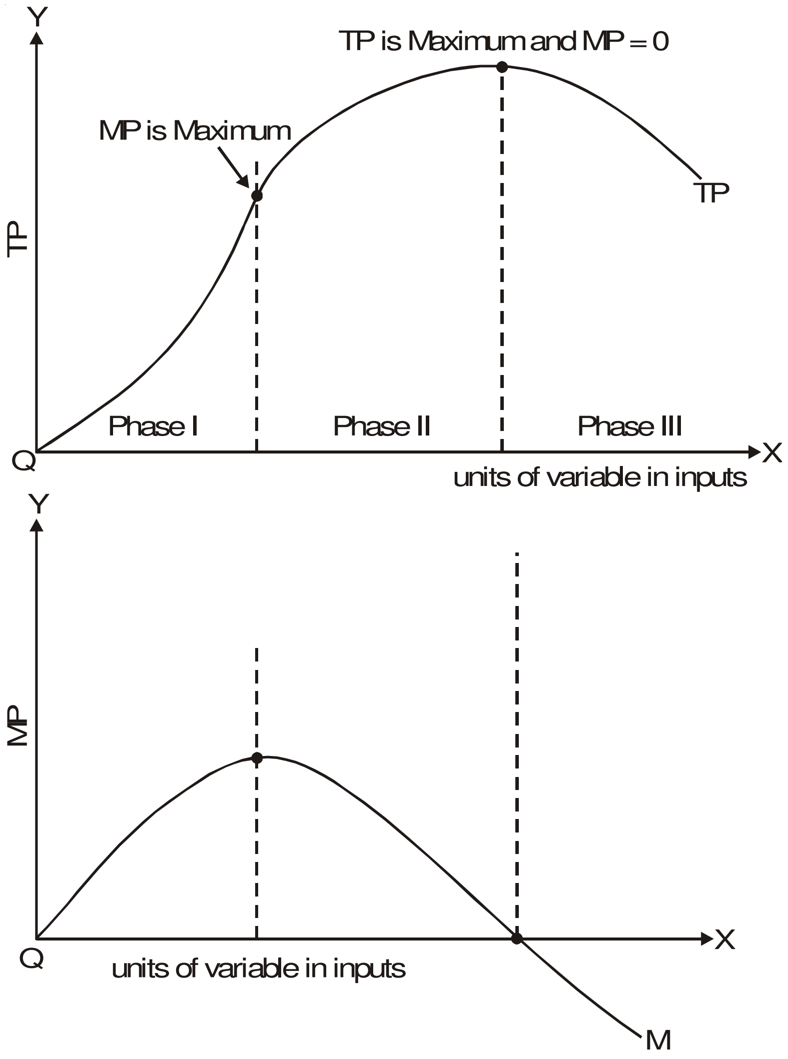

नियम की तीन अवस्थाएं–

(i) **पहली अवस्था :** कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है। इसलिए इस अवस्था में सीमांत उत्पाद बढ़ता है।

(ii) **दूसरी अवस्था :** कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है। सीमांत उत्पाद गिरने लगता है लेकिन धनात्मक रहता है।

(iii) **तीसरी अवस्था :** कुल उत्पाद गिरना प्रारम्भ कर देता है और सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

दष्टिहीन परीक्षार्थियों के लिए

परिवर्ती अनुपातों का नियम

परिवर्ती आगतें	कुल उत्पाद	सीमांत उत्पाद	अवस्थाएं
1	20	20	पहली अवस्था I
2	50	30	
3	70	20	दूसरी अवस्था II
4	80	10	
5	60	–20	तीसरी अवस्था III

नियम की तीन अवस्थाएं :

प्रथम अवस्था : कुल उत्पाद बढ़ती दर से बढ़ता है। इस अवस्था में सीमांत उत्पाद बढ़ता है।

दूसरी अवस्था : कुल उत्पाद घटती दर से बढ़ता है, सीमांत उत्पाद गिरता है लेकिन धनात्मक रहता है।

तीसरी अवस्था : कुल उत्पाद गिरना प्रारम्भ कर देता है और सीमांत उत्पाद ऋणात्मक हो जाता है।

PART B

17. अनैच्छिक बेरोजगारी से आशय अर्थव्यवस्था की उस स्थिति से है जिसमें काम करने के इच्छुक योग्य व्यक्ति प्रचलित मजदूरी दर पर काम करने के लिए तैयार है लेकिन उन्हें काम नहीं मिलता है।

18. निवेश गुणक $K = \frac{1}{1 - MPC}$

$$5 = \frac{1}{1 - MPC}$$

$$5 - 5\,MPC = 1$$

$$5 - 1 = 5\,MPC$$

$$5\,MPC = 4$$

$$MPC = \frac{4}{5} = .80$$

Ans.

19. जब एक वित्तीय वर्ष में सरकार का कुल बजट व्यय सरकार की उधार छोड़ कर कुल राजस्व प्राप्तियों से अधिक होता है तो इसे राजकोषीय घाटा कहते हैं।

20. व्यापार शेष = निर्यात मूल्य – आयात मूल्य

110 करोड़ = 185 करोड़ रू. – आयात मूल्य

आयात का मूल्य = 185 करोड़ रू. – 110 करोड़ रू.

आयात का मूल्य = 75 करोड़ रू.

21. ऐसी कोई वस्तु जो लोगों के द्वारा वस्तुओं व सेवाओं के विनिमय के लिए या ऋणों के भुगतान के लिए सामान्यतया स्वीकार की जाती है।

22.

	मध्यवर्ती उत्पाद	*उत्पादन का मूल्य*	*वर्द्धित मूल्य*
A ने B को बेचा	–	400	600
A ने C को बेचा	–	200	
B	400	500	100
C	200	500	300

B का वर्द्धित मूल्य = Rs. 100 राष्ट्रीय आय = 1000

C का वर्द्धित मूल्य = Rs. 300

24. विनिमय के माध्यम के रूप में मुद्रा ने वस्तु विनिमय की कठिनाई 'दोहरे संयोग की कमी को दूर कर दिया है।

24. (i) यह राजस्व व्यय है क्योंकि इससे सरकार की परिसंपत्तियों में किसी प्रकार की वद्धि नहीं होती।

(ii) यह पूंजीगत व्यय है क्योंकि इससे सरकार की देनदारी में कमी आती है।

(iii) यह राजस्व व्यय है क्योंकि इससे सरकार की परिसंपत्तियों का निर्माण नहीं होता।

25. भुगतान शेष किसी देश के निवासियों और शेष विश्व वासियों के बीच, नियत अवधि में हुए सारे आर्थिक लेनदेनों का व्यवस्थित रिकार्ड होता है। विदेशों से लिया गया ऋण पूँजी खाते के लेनदारी (Credit) भाग में दर्ज किया जाता है। क्योंकि यह एक अर्थव्यवस्था की देनदारी को बढ़ाता है।

26. एक देश की करेंसी का दूसरे देश की करेंसी में विनिमय किया जाता है उसे विदेशी विनिमय कहते हैं।

विदेशी विनिमय की मांग के कारण

(i) वस्तुओं व सेवाओं को खरीदने के लिए।

(ii) विदेशों में वित्तीय परिसंपत्तियाँ खरीदने के लिए।

(ii) विदेशी मुद्राओं के मूल्यों पर सट्टेबाजी के लिए।

27. राजकोषीय घाटे में से ब्याज अदायगियाँ घटाने से शेष राशि को प्राथमिक घाटा कहते हैं।

प्रभाव :

(i) इससे पता चलता है कि सरकार की नीतियों का भावी पीढ़ी पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

(ii) शून्य या निम्न प्राथमिक घाटे से अभिप्राय है कि सरकार पुराने ऋणों का ब्याज चुकाने के लिए उधार लेने को मजबूर है।

(iii) यह ब्याज अदायगियों रहित राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लिए सरकार की उधार आवश्यकताओं को दर्शाता है।

28. बैंकों का बैंक व पर्यवेक्षक :

(i) केन्द्रीय बैंक, व्यावसायिक बैंकों के कोषों का संरक्षक होता है।

(ii) केन्द्रीय बैंक अंतिम ऋण दाता के रूप में कार्य करता है।

(iii) यह व्यावसायिक बैंकों का निरीक्षण, नियमन तथा नियंत्रण करता है।

29. निवेश गुणक निवेश में होने वाले परिवर्तन के कारण आय में होने वाले परिवर्तन का आनुपातिक माप है। अर्थात यह मापता है कि निवेश में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप आय में किस अनुपात में परिवर्तन होगा।

सूत्र $K = \frac{\Delta Y}{\Delta I}$

निवेश गुणक तथा सीमांत उपभोग प्रवत्ति में सम्बन्ध :

(i) निवेश गुणक का मूल्य सीमांत उपभोग प्रवत्ति के साथ धनात्मक सम्बन्ध रखता है।

(ii) यदि अर्थव्यवस्था में सी. उ. प्र. ऊंची है तो गुणक का मूल्य भी ऊचा होगा तथा विपरीत स्थिति में गुणक का मूल्य कम होता है।

अथवा

अवस्फीति अंतराल : अर्थव्यवस्था में जब कुल उपभोग का स्तर पूर्ण रोजगार के स्तर पर आवश्यक कुल पूर्ति से कम होता है, तो इसे अवस्फीति अंतराल कहा जाता है। हालांकि इस स्थिति में कुल उपभोग व कुल पूर्ति के बराबर होते हैं परन्तु अर्थव्यवस्था में संतुलन नहीं होता।

अवस्फीति अंतराल को दूर करने के राजकोषीय उपाय –

(i) सरकार को सार्वजनिक व्ययों में वद्धि करनी चाहिए ताकि मुद्रा की पूर्ति बढ़ सके।

(ii) कर की दरों में कमी करनी चाहिए ताकि जनता की प्रयोज्य आय में वद्धि हो सके।

30. (i) वैयक्तिक प्रयोज्य आय (PDI)

= (i) + (ii) = 1000 + 235 = 1235

(ii) वैयक्तिक आय = PDI + (iii)

= 1235 + 40 = 1275

(iii) निजी आय = PI + (vi) + (iv)

= 1275 + 25 + 15 = 1315

(iv) निजी क्षेत्र से प्राप्त आय

निजी आय = (v) – (x) – (viii) – (xi)

1315 – 10 – 15 – 30 –(–10) = 1270

N.I. = 1270 + (vii) + (ix)

NNP_{FC} = 1270 + 35 + 5 = 1310

31. बाजार लागत पर सकल घरेलू उत्पाद =

(i) + (ii) + (iv) + (v) + (vi) + (viii) – (xiii) + (iii – xv)

= 1300 + 3700 + 1000 + 1500 + 2500 + 1600 – 300 + (7300 – 2800)

= 41900

व्यय विधि

राष्ट्रीय आय : vii + (xi – x) + xii + xiv + xv – (ii + xiii)

= 3400 + (1700 + 1800) + 2900 + (–250) + 2800 – (3700 + 300)

= 31450

30. (i) नहीं, क्योंकि जर्मन दूतावास भारत की देशीय सीमा का भाग नहीं है।

(ii) नहीं, क्योंकि यह वित्तीय पूंजी से आय है। इससे आय के प्रभाव पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(iii) नहीं, क्योंकि यह भारतीय देशीय सीमा का भाग नहीं है।

31.

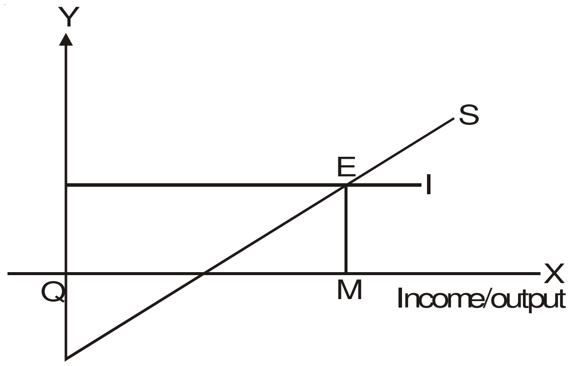

अर्थव्यवस्था में आय व रोजगार का संतुलन वहां निर्धारित होता है जहां बचत व निवेश बराबर होते हैं। (S = I) उपरोक्त चित्र के अनुसार पूर्ण रोजगार संतुलन E बिन्दु पर निर्धारित है जहां सतुलन आय व उत्पादन मात्रा OM है। यदि बचत निवेश से अधिक हो तो अर्थव्यवस्था में उत्पादन के स्टॉक इकट्ठा होने लगेंगे। जिससे उत्पादक भविष्य में कम उत्पादन की योजना बनाएंगे जिससे आय के स्तर में कमी आएगी और बचतें कम होने लगेंगी। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक बचत व निवेश बराबर ना हो जाएं।

यदि निवेश बचत से अधिक है (I > S) तो उत्पादकों के स्टॉक में कमी जाएगी जिससे अतिरिक्त मांग का सजन होगा व नई आय उत्पन्न होगी। जिससे बचतें बढ़ने लगेंगी और यह प्रक्रिया तब तक जारी रहेगी जब तक बचत व निवेश बराबर न हो जाएं।

SET II

<u>*सामान्य निर्देश*</u>

(i) दोनों खंडों के सभी प्रश्न अनिवार्य है।

(ii) प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक उसके सामने दिए गए हैं।

(iii) प्रश्न संख्या 1 से 5 और 17 से 22 अति लघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिनका प्रत्येक प्रश्न एक–एक अंक का है।

(iv) प्रश्न संख्या 6 से 10 तथा 22 से 26 तक लघूत्तरात्मक प्रश्न हैं, जिनमें प्रत्येक के लिए तीन–तीन अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 60 शब्दों तक सीमित रहना चाहिए।

(v) प्रश्न संख्या 11 से 13 और 27 से 29 भी लघूत्तरात्मक प्रश्न है, जिनमें प्रत्येक के लिए चार–चार अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 70 शब्दों तक सीमित रहना चाहिए।

(vi) प्रश्न संख्या 14 से 16 और 30 से 32 व्याख्यात्मक प्रश्न हैं, जिनमें प्रत्येक के लिए छः–छः अंक निर्धारित हैं। प्रत्येक का उत्तर सामान्यतः 100 शब्दों तक सीमित रहना चाहिए।

(vii) उत्तर संक्षिप्त तथा तथ्यात्मक होने चाहिए तथा ऊपर दी गई सीमा में ही यथासंभव दिए जाने चाहिए।

खण्ड 'अ'

1. ''दुर्लभता'' से आप क्या समझते हैं? 1

2. यदि किसी वस्तु की कीमत 5% बढ़ जाती है तो इस पर किए जाने वाले व्यय में 5% की वद्धि हो जाती है। इसकी मांग की कीमत लोच के बारे में आप क्या कहेंगे। 1

3. यदि X वस्तु की मांगी गई मात्रा परिवार की आय बढ़ने से कम हो जाती है तो वस्तु X किस प्रकार की वस्तु है? 1

4. उस अवधि का नाम बताइए जिसमें उत्पादन का पैमाना नहीं बदला जा सकता। 1

5. किस प्रकार के बाजार में एक उत्पादक केवल कीमत स्वीकारक होता है न कि कीमत निर्धारक? 1

6. निम्नलिखित आधार पर पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार प्रतियोगिता में अंतर की व्याख्या करें। 3

   (क) कीमत पर नियंत्रण

   (ख) औसत आगम वक्र

   (ग) मांग की लोच।

7. ''उत्पादन कैसे करें?'' इस केन्द्रीय समस्या की व्याख्या करें। 3

8. किसी वस्तु की मांग की कीमत लोच का मूल्य 5 है। यदि इसकी कीमत 10 रू प्रति इकाई है तो इसकी मांगी गई

मात्रा 40 इकाईयां है। यदि कीमत कम होकर 5 रू. प्रति इकाई हो जाती है तो इसकी मांगी गई मात्रा कितनी होगी। 3

9. एक तटस्थ वक्र से आप क्या समझते हैं? तटस्थता मानचित्र की धारणा की चित्र बनाकर व्याख्या कीजिए। 3

10. यदि कुल स्थिर लागत 120 रू. है तो निम्न सारणी की सहायता से औसत परिवर्तनशील लागत तथा औसत कुल लागत की गणना करें। 3

उत्पादन (इकाईयां) :	0	2	3
सीमान्त लागत :	40	30	26

11. ''मांग में परिवर्तन'' तथा ''मांगी गई मात्रा में परिवर्तन'' में अंतर स्पष्ट करें। 4

12. उत्पादक के संतुलन से क्या अभिप्राय है? उत्पादक के संतुलन के निर्धारण को कुल आगम तथा कुल लागत वक्रों की सहायता से समझाइए। 4

13. औसत आगम तथा सीमान्त आगम में संबंध की व्याख्या करें यदि फर्म किसी वस्तु की अधिक मात्रा 4

(क) समान कीमत पर

(ख) केवल कीमत को कम करके बेच सकती है।

14. एक काल्पनिक सारणी तथा चित्र की सहायता से मांग के नियम की व्याख्या करें। 6

15. चित्र की सहायता से उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव की व्याख्या करें, यदि एक आगत की मात्रा को बढ़ाया जाए तथा अन्य आगतों को स्थिर रखा जाए।

अथवा

एक साधन के वर्धमान प्रतिफल क्या है? यह कैसे उत्पन्न होते हैं? स्पष्ट करो। 6

16. ऐसी अवस्थाओं की व्याख्या चित्र की सहायता से करें जिनमें मांगी गई मात्रा तथा पूर्ति की मात्रा में एक साथ परिवर्तन होता है परन्तु कीमत स्थिर रहती है। 6

खण्ड 'ब'

17. वस्तु विनिमय प्रणाली का क्या अर्थ है? 1

18. बैंक दर में वद्धि का मुद्रा की पूर्ति पर क्या प्रभाव पड़ता है? 1

19. सीमान्त बचत प्रवत्ति कब शून्य हो सकती है? 1

20. अल्प रोजगार संतुलन क्या होता है?

21. प्रबंधित तरणशीलता प्रणाली से आप क्या समझते हो?

22. खरीदी गई 'कार' सदैव अंतिम वस्तु होती है। क्या आप इस कथन से सहमत हैं? अपने उत्तर की पुष्टि के कारण लिखिए।

23. भुगतान संतुलन के चालू खाते तथा पूंजी खाते में अंतर स्पष्ट करें। 3

24. व्यय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय का माप करते समय ली जाने वाली किन्हीं तीन सावधानियों के बारे में लिखिए। 3

25. निम्न आंकड़ों की सहायता से साधन लागत पर निवल वर्द्धित मूल्य ज्ञात करें।

(i)	बिक्री	75,000
(ii)	मध्यवर्ती उपभोग	30,000
(iii)	अप्रत्यक्ष कर	7,500
(iv)	स्थायी पूंजी का उपभोग	2,500

26. विदेशी विनिमय की पूर्ति के किन्हीं तीन स्रोतों के बारे में लिखिए।

27. सरकार को बजट की आवश्यकता क्यों पड़ती है?

28. अल्प रोजगार संतुलन किसे कहते हैं? इस धारणा की चित्र बनाकर व्याख्या करें।

29. कारण बताते हुए निम्न को राजस्व प्राप्तियों तथा पूंजीगत प्राप्तियों में वर्गीकृत करें।

    (i) ऋणों की वापसी

    (ii) निगम कर

    (iii) सरकार द्वारा निवेश पर लाभांश

    (iv) सार्वजनिक उद्यमों की बिक्री। 4

30. निम्न आंकड़ों की सहायता से (क) व्यय विधि तथा (ख) आय विधि द्वारा राष्ट्रीय आय की गणना करें:

		(करोड़ रू. में)
(i)	आर्थिक सहायता	5
(ii)	निजी अंतिम उपभोग व्यय	100
(iii)	विदेशों से शुद्ध साधन आय	–10
(iv)	अप्रत्यक्ष कर	25
(v)	लगान	5
(vi)	सरकारी अंतिम उपभोग व्यय	20
(vii)	शुद्ध घरेलू स्थिर पूंजी निर्माण	30

(viii)	प्रचालन अधिशेष	20
(ix)	मजदूरी तथा वेतन	50
(x)	शुद्ध निर्यात	–5
(xi)	स्टॉक में वद्धि	–5
(xii)	नियोजकों द्वारा सामाजिक सुरक्षा हेतु अंशदान	10
(xiii)	मिश्रित आय	40

31. चित्र का प्रयोग करते हुए समग्र मांग तथा समग्र पूर्ति द्वारा आय तथा उत्पादन के संतुलन स्तर के निर्धारण की व्याख्या कीजिए। 6

32. देश में स्फीतिक अंतराल के समय केन्द्रीय बैंक द्वारा अपनाए गए निम्न उपायों की व्याख्या करें : 6

(क) ऋण की सीमान्त आवश्यकताएँ

(ख) नकद निधि अनुपात

(ग) बैंक दर?

अथवा

व्यापारिक बैंकों के किन्हीं चार कार्यों की विस्तार से व्याख्या करें।